

कृष्णकेलिमालानाटिकाक पात्रपरिचय

पुरुष

१	सूत्रधार	नाटक-निर्देशक ।
२	श्रीकृष्ण	अवतारी पुरुष, वसुदेवक पुत्र, नायक ।
३	हलधर	श्रीकृष्णक जेठ भाए ।
४	वसुदेव	श्रीकृष्णक पिता ।
५	नारद	देवर्षि ।
६	तन्द	गोकुलक अधिपति, गोपराज ।
७	वृषभानु	राधाक पिता, गोप ।
८	कंस	मथुराक राजा, दैत्य ।
९	केही	कंसक सेनापति, दैत्य ।
१०	बकासुर	बगुलाक रूप में दैत्य ।
११	अघासुर	पापस्वरूप सापक रूप में दैत्य ।
१२	उग्रसेन	★श्रीकृष्णक भक्त, कंसक पिता ।
१३	अक्रूर	★श्रीकृष्णक भक्त ।
१४	उद्धव	★श्रीकृष्णक मन्त्री ।
१५	रजक	★
१६	मुष्टिक	★कंसक पहलमान ।
१७	चापूर	★ " " ।
१८	कुवलवपोड (कुञ्जर)	★हाथी ।

हत्त्री

नटी	सूत्रधारक पत्नी ।
२ देवकी	श्रीकृष्णक माए (जन्म देनिहार) ।
३ यशोदा	श्रीकृष्णक माए (पालन कएनिहार) ।
४ राधिका	वृषभानुक पुत्री, नायिका ।
५ विशालाक्षी	राधाक सखी ।
६ कामाक्षी	" " ।
७ कलावती	राधाक माए ।
८ पूतना	राक्षसी ।
९ कुञ्जिका	* " ।
१० मालाकारक पत्नी *	

★नाटिकाक खण्डित भाग मे ।



श्रीः

महाकवि नन्दीपति विरचिता-

★ कृष्ण-केलिमाला नाटिका ★

(मञ्जल-श्लोकः)

सानन्द^१ गिरिजानन्दं श्रुतिगीतं गजाननम् ।
वन्दे वन्द्यं सुराद्यं च देवदेवं जगद्गुरुम् ॥१॥

(श्लोकार्थे गीतम्) - १

हे भव-तनय भञ्जल^२ छिन्न तोहि ।
गजमुख सतत सुमुख रह मोहि ॥
गिरिजानन्दन गणनायक ।
जगत भजत अभिमत-दायक ॥
विषम-विलोचन जटा^३-मटक ।
संग प्रथम शिशु बाल-वटक ॥
आखु बड़ल शिशु चक क चन्द ।
विघन-विनाशन अवि सानन्द ॥

श्रीः

आनन्दित, गिरिजाक पुत्र, वेदमे वर्णित, देवतामे आदि (प्रथम), देवहुक
देव, जगद्गुरु, वन्दनीय गजानन (गर्जक) के प्रणाम करैत छी ॥१॥

श्लोकक अर्थ मे गीत--१

भव-तनय = महादेवक पुत्र । सुमुख = सम्मुख (सोझी) । विषम-विलोचन
= चिनेत्र (महादेव) के जटाक मुकुट छनि । आखु = पूस । कय कर = हाथ मे
कमल लय, अभय सेहो दोसरा मे लेत छथ ॥

१-×× (एहि श्लोकक अभाव) - क । २-गजानन क । ३-जटाकूट-ख ।

कय^१ कर कमल, अभय कर लेह^२ ।
मोदर सहित लम्बोदर देह ॥
नन्दीपति काव मङ्गल गाव ।
शम्भु तनय मुनमय^३ बुभुक्ष भाव ॥

(दोहा)

गिरजा-नन्दन मज्जवदन, विषन^४-विदारण हेतु ।
लम्बोदर असरन सरन, भव-सागर सुख-सेतु ॥१॥
तोहे^५ तोहर सन, आन नहि, एहि कारज एहिठाम ।
कर सम्पूरन नाटिका, ते^६ तुअ करिअ प्रणाम ॥१॥

अथ नान्दी-श्लोकः

यस्यैषा बनिषा नन्दीपति-सुधा दारिद्र्य-दैत्यादिनी
नीलेन्दोवर-लोचनाऽश्वित-सुधासारैकवक्त्राभ्युजा ।
उत्पत्ति-स्थितिकारकः धृतिगुणी नार्थकनाथप्रभु^७
देवानामधिपः पुराणपुरुषः पीताम्बरः पातु वः ॥२॥

अपि च

क्वत्र^८ यस्य सरोज-सुन्दरसमं वाक्श^९ सुधामिश्रितं
हास्यं स्कीतमसीव बल्लव-सुतानेत्रस्य सौख्यप्रदम् ।

दोहा-असरन सरन = अशरणक शरण । भव-सागर = संसाररूपी समुद्र से सुख
दायक बाण्ड ॥१॥

नन्दी श्लोक

जनिक ई पत्नी समुद्रक पुत्री (लक्ष्मी) दरिद्रतारूपी दैत्यक नाश करिनि-
हारि ओ नीलकमल सन आखि सँ युक्त अमृतक रस से परिपूर्ण मुहकपी कमल
वाली छविन्ह से संसारक उत्पत्ति ओ पालन करनिहार, वैदरूपी मुहवाला, एक-
मात्र महाप्रभु, देवशालोकनिक अधिपति पुराणपुरुष पीताम्बर (विष्णुभगवान्)
अहंलोकनिक रक्षा करय ॥२॥

१-रसमय बुझाय-ख । ३-विश्वित-ख । ५-एक - ख ।
४-वेह - ख । ६-वाक्श-ख ।

नेत्र^{१०} यस्य मनोहरं सुधिवितं वामभूषां जीवनं
तस्यैकस्म विरच्यते सुचरितं प्राक् पुण्यतो नो मुनेः ॥३॥

(नान्द्वन्ते सूत्रधारः)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण । आर्यो ! इहामगम्यताम् ।

नदी—(प्रविश्य) अज्ज ! आणवेदु । आर्यो ! आजापयतु ।]

सूत्रधारः—आदिण्ठोउरिम्—

नदी—अज्जउता ! कथं^{११}अङ्गणं किदं ? [आर्यपुत्र ! कथमाङ्गणं कृतम् ?]सूत्रधारः—श्रीनन्दीपति-नाटिका-नृत्येन^{१२} सृजन-सभाऽनुरञ्जनाऽभिप्रायेण ।नदी—अज्जउत ! ^{१३}नन्दीवड-कइ-किदं णाअ-समुदं विशेषेण कथय ।

[आर्यपुत्र ! नन्दीपति—कविकृतं नाटक—समुद्र विशेषेण कथय ।]

सूत्रधारः—(इलोकेन) —

या नन्दीपति—शर्मणा विरचिता चाभ्यासिता नाटिका

किं वा शान्तिमुवागयी किमया शृङ्गारहारावली ।

कृष्णः केवल—नायकः सुवदना गोपात्मजा नायिका

मस्तोषाय सभाजनस्य दयिते ! नृत्येन विस्तारय ॥४॥

आओरो—

जनिक मुह कमलसदक सुन्दर छनि वाणी अमृतसं युक्त छनि, अत्यन्त
परिपूर्ण हंसी गोपपुत्री-राधाक आखिकसन सुखदायक छनि सुन्दर आखिसुन्दर-
भोहवालीक प्रसिद्ध जीवन छनि, ताहि एकमात्र व्यक्ति (श्रीकृष्ण) क सुन्दर
चरित्र अपन पूर्वक पुण्य सँ बनाओल जाय रहल अछि अपन गुण (पाण्डित्य)
सँ नहि ॥३॥

(नान्दीक अन्तमे सूत्रधारः)

सूत्रधार—नान्दीपतिक विस्तार उचित नहि । आर्यो ! एम्हर आज ।

नदी—(प्रवेश कय) आर्य ! आजा दिअ ।

१०-कयं पुञ्जण किह-ख । ११-नाटिकाभिनयः ख । १२-नन्दीवै के

वचं-क, सन्निवेशकिदं सारदकविशेषेन कथय-ख ।

[कविवंशावली]

वंश^१ पगौली बड़ विपुल^२, जगभरि के तहि जान^३।
 मैथिल सभका माननिष^४, पौजि तक^५ परमान^६ ॥३॥
 सुनहत ई वंशावली, लागति^७ अति अनिराम^८।
 सिद्ध पुष्प शिवदत्त भा, वास जनिक^९ बड़िआम ॥४॥
 ताहि वंश^{१०} अवतार लए, सगुन सधापति भेल^{११}।
 परजापति मुनिवृत्त तह, दक्षक उपमा देल ॥५॥
 तन्हिकां भेल पुनु बुइ तनय, अति सुबुद्धि सबिवेक^{१२}।
 केशव रघुपति नाम तसु, सरस^{१३} एक तह एक ॥६॥
 रघुपति भा कां चारि^{१४} सुत, गंगाधर, जपराम^{१५}।
 सुरमुख^{१६} सम हरिपति तपी, अतिसुबुद्धि सद्गु^{१७} स्याम ॥७॥
 हरिपति हरि अवतार तसु^{१८}, गुह ठाकुर गुणवृद्ध^{१९}।
 पण्डित मोकुलनाथ सा, जनिक^{२०} शिष्य परसिद्ध ॥८॥

सूत्रधार - आदेश भेटल अछि -

नटी - आर्यपुत्र ! कियेक बजाओल ?

सूत्रधार - श्रीनन्दीपतिकृत नाटिकाक नाँवक कारणे, नीकलोकक सभाक मनोरञ्जनक अभिप्राय सँ ।

नटी - आर्यपुत्र ! नन्दीपति-कवि-कृत नाटक-समुद्रके विशेषरूपे कहू ।

सूत्रधार - (श्लोक द्वारा) जे नन्दीपति-सर्माक द्वारा बनाओल ओ अभ्यास कराओल नाटिका थिक वा शास्त्ररूपी अमृत वनल अथवा शृङ्गार रसक मोतिक भाषा थिक जाहि मे केवल श्रीकृष्ण नाटक छथि ओ नोपपुत्री राविका नायिका छथि, ताहि नाटिका केँ सभास्थ लोकक सम्बोधक लेल हे जिये ! नृत्यक द्वारा विस्तार कए ॥९॥

१ - वैष, २ - शिवदत्तासक वंश पगौली - बड़िआम मे (हुनक पीछे) सुधापति सा गुणवान् भेलाह, जे मुनिक आचरणकय प्रजापति कहओलनि ओ दक्ष

१२ - पुगौली ख । १३ - मानिअ ख । १४ - सर मान ख । १५ - लागत ख । १६ - सानक क । १७ - एक एक ख । १८ - तह ख । १९ - शिष्य जनिक ।

सूकवि कृष्णपति तसु तनय, तन्हिकां चारि^{२१} कुमार ।
 चमुर चन्द्रपति हेमपति-अतिसर्वज्ञ सवार ॥९॥
 नन्दीपति-कवि, शिवभगत, लक्ष्मीपति तसु छोटा^{२२}।
 अपन बड़ाई की करब, जहाँ^{२३} अछि गुण बड़गोट ॥१०॥
 आपाकवि भय संसकृत, कतहु करिअ एक आध ।
 पण्डित कवि जे जतय छथि, छेमिअ^{२४} हमर अपराध ॥११॥

नटी - अहो भागधेअ ! [अहो भागधेअम् ।]

सूत्रधार - एवमेव । ततः - (गद्यम्) -

जय जय जगदेकनाथ ! नमुर्वर्गादिकारण^{२५} ! मोहिन्द ! गरुडासन ! समरवशी-
 कृतपुष्पावुध-प्रणाशन ! पीताम्बर ! पद्माक्ष ! सपथ ! पद्मालया-मानसकहंस !
 क्रमद्वयसावतंस ! महावंश ! वंशाऽन्वित-करकमल ! यादवेन्द्र ! जनार्दनाऽच्युत !
 साङ्गचकाव्यगवाधर ! सकल भूपाल-मुकुटमणि-भूषित पादपद्म-पवित्रीकृत-भूम-
 पङ्क ! देवदेव^{२६} ! देवकीतनय ! तालाङ्गमुज^{२७} ! तन्दनन्दन ! विदवाभिराम !
 विश्वविजयनाथ-यजुस्वरूप ! पुरुषोत्तम ! पतितपावन ! शौर्याविदात ! सुरपूजित !
 सकल-सुरासुर-कामना-लताधारेक^{२८} ! कल्पपादपो-पमियन्तारायण ! गुणाशेष^{२९} -
 (महादेवक रवचुर) क उमा-योग्य भेलाह ।

३ - (१) गङ्गाधर, (२) जयराम, (३) हरिपति, (४) सद्गुपाध्याय श्याम ।

४ - बृहस्पतिक समान विद्वान् हरिपति ।

५ - ताहि चाल भाई मे हरिपति-भाषिणक अवतार, गौरवयुक्त, श्रीमान् (मोहेक अधिपति) ओ गुण सँ उत्कृष्ट छलाह, जनिक शिष्य प्रसिद्ध मोकुलनाथ उपाध्याय छलथिन, तनिक (हरिपतिक) पुत्र सुकावि कृष्णपति सा भेलथिन ।

६ - (१) चमुर चन्द्रपति, (२) सर्वज्ञ हेमपति, (सर्वज्ञान गरीब) (३) नन्दीपति कवि, (४) शिवभक्त लक्ष्मीपति ।

नटी - अहो भाग्य !

सूत्रधार - से टीके । तखन, - [गद्य द्वारा] -

२० - जी-स २१ - छेमहि - ख । २२ - दनि कारण - ख । २३ - X - ख ।

२४ - तालांतकानुज - ख । २५ - धार कल्प - ख । २६ - गुणशेष - ख ।

तल्प-कल्पिताऽनेकपुराणकल्प ! कल्पकल्पान्तकारणैकबद्धा ! बृहन्द्वादिसेवित !
सुप्रभाङ्ग ! धीरातिधीर ! धर्मस्वरूप ! यशःप्रतापालङ्कार ! मानवावतारोक्ति-
कल्प-नाशन ! कामकला-विलास-विन्यास-कुशल ! कुशलदायक^{२३} ! गोपाङ्ग-
नाचेलचौर ! नृत्यगीत-कविता-रसिक ! विबुध^{२४} ! विपिन-विदारोपाजित^{२५}-
पावकोपम ! प्रचण्डभुजदण्डो^{२६}-दण्डकोदण्ड ! विद्याविशारद ! शारद-सुचारु^{२७}-
चन्द्रवदन ! मधु^{२८}-मथनाऽऽनन्दकन्द ! दुरित-तमःस्तोम^{२९}-सोम ! शोभासदन !
सर्वोपकारक^{३०} ! श्रीकृष्णदेव ! प्रचुरतरविघ्न-विघातक-कामनया तव चरण-
चारु-पूज्य-पूजरीकमहं बन्दे ।

जय जय संसारक एकमात्र स्वामी, धर्म अर्थ काम मोक्षरूप चारु पुरुषा-
र्थक आधिकारण, गोविन्द, गरुडवाहन, युद्धमे वश कपल कामदेवक नाश कय-
निहार (शिवरूपधारी), पीयर वस्त्र धारी, कमल सन आखिवला, कमल युक्त,
लक्ष्मीक मनरूपी मानस-सरोवरक एकमात्र हुंस्वामी, कंसक नाश कयला सँ
अलङ्कृत, पंच कुल मे उत्पन्न, वंश परम्परा सँ हाथ मे कमल (तत्सदृश रेखा)
सँ युक्त, यादवराज, जनार्दन, अण्णुत, शख चक्र कमल मदाधारण कयनिहार,
सकल राजाक मुकुटक मणि सँ शोभित चरणकमल सँ भूमण्डलकेँ पवित्र कए-
निहार, देवहुक देव, देवकीक पुत्र, बलदेवक छोट भाय, नन्दक पुत्र, संसार भरि
मे सुन्दर, संसार मे प्रसिद्ध एकमात्र यज्ञपुरुष, पुरुषोत्तम, पतितकेँ पवित्र
कयनिहार, वीरता सँ प्रशस्त, देवता सँ पूजित, सकल देवता ओ देखक कामना
रूपी लक्ष्मीक आधारभूत एकमात्र कल्पवृक्ष, उपनिषद् मे प्रसिद्ध नारायण अक्षेप
गुणरूपी ओछाओन रूप मे कल्पित अनेक पुराण स्वरूप, कल्प कल्पान्तक कारण
भूत एकमात्र बद्धा बद्धा इन्द्र आदि सँ सेवित, प्रकाशमान अङ्गवला, अत्यन्त
धीर, धर्मस्वरूप, यश ओ प्रतापक आभूषणवला, मानवक रूप मे अवतार लेनि-
हार, कल्पयुक्त पापक नाश कयनिहार, लक्ष्मीक संग विलासक विन्यास मे
पट, कुशल देनिहार, गोपश्रीक वस्त्र चोरओनिहार, नृत्य गीत ओ कविताक
रसिक, देव, वनकेँ जरओला सँ उपार्जन कपल गेउ आगिक सदृश प्रतापवला,
प्रचण्ड भुजदण्डरूपी उदण्ड बाणवला, विद्या मे पारंगत, शरद ऋतुक सुन्दर

२३ - बहुदायक - ख । २४ विबुधारी ख; विबुधा: क । २५ विहारोपाजित ख ।
३० भुजराज ख । मेघ सकल ख । ३१-गुणानन्द ख । ३२ -स्तोमकवम ख ।
३३-कारकारक ख ।

(इति मञ्जुलपदम्^{३४} । इदमेव सकलमञ्जुलदायकम्) ।

(ततः कृष्णादि-प्रवेशसूचनागीतम्) — २

सुन्दर सरल सबल वनमारि ।

सखी सहित वृषभानु^{३५}-दुलारि ॥

यशोदा नन्द देवकी वसुदेव ।

अठमाँ गरम जनम हरि लेव ॥

कंस केसि मुष्टिक चाणूर ।

कुबलपपीड रजक अक्रूर ॥

उद्धव उपसेन अवधारि ।

पुतना मालाकारक नारि ॥

नन्दीपति हरि हरधू कलेस ।

एहि नाटक^{३६} एतबा परवेश ॥

(ततः श्लोकः) —

उद्धवो माधवो राधा यशोदा देवकी तथा ।

वासुदेवश्च नन्दश्च कंसः केशी च पूतना ॥३॥

रजकः कुब्जिका चैव कुञ्जराऽसुर एव च ।

चाणूरो मुष्टिकश्चैव उपसेनस्तथा नृपः ॥४॥

चन्द्रमा सन मुँहवला, मधुनामक दैत्यक नाश कय आनन्द देनिहार, पापरूपी
अन्धकारक समूहक हेतु चन्द्रस्वरूप, शोभाक भवन, सभक उपकारक हे
श्रीकृष्ण देवता ! पर्याप्त विघ्नक नाशक कामना सँ अहाँक चरणरूपी सुन्दर
पुष्पक कमल केँ हम प्रणाम करैत छी ।

(ई मञ्जुल-पद धिक । इयेह सभ मञ्जुल दैत अछि ।)

(तत्तन कृष्ण आदि पात्रक प्रवेशक सूचनाक गीत होइछ ।)

एहि कृष्णकेलिमाला नाटक मे एतबा पात्रक प्रवेश होइछः—

१ श्रीकृष्ण, २ राधिका, ३ यशोदा, ४ नन्द, ५ देवकी, ६
वसुदेव, ७ कंस, ८ केशी, ९ मुष्टिक (कंसक पहलमान), १० चाणूर
(पहलमान), ११ कुबलपपीड (कंसक हाथी), १२ रजक, १३ अक्रूर,

३४—पद- ३५—वृषभानु ख । ३६—हरिनाटिक ख ।

(अयंतेषां प्रवेशः । ततः प्रसव-वेदनाऽऽकुला-देवकी-

प्रवेशिका-गीतम्)--३

वेदन वेआकुलि^{१४} चौदिस हूरि ।

देवकी कर कसगा कत बेरि ॥

जत जन गरभ अएलाहु अवतारो ।

तत तत कंस हुरल मोर मारो ॥

जावत जितन कंस निरमोही ।

प्रसव-वेदन तहि की फल मोही ॥

काहि कहक बओने राखव गोइ ।

अठमहु बेरि भरोस न होइ ॥

मन कर करिअ अगिनि परवेशे ।

एहि तह ओहि वर धोर कलेसे ॥

नन्दीपति भावह कबिलाई ।

कहि जनमव तहि करव छपाई ॥

(ततः प्रविशति देवकी)

१४ उद्धव, १५ उपसेन, १६ पूतना ओ १७ सालिनि ॥ ई मुखपात्रक सूची धिक । अन्य अनेकी गौण पात्र भेटताह । जेना नारद, बृषभानु, कलावती, विशालाक्षी, कामाक्षी आदि ।

(तखन श्लोक)--

उद्धव, माधव, राधा, यशोदा, देवकी, वसुदेव, नन्द, कंस, कैशी, पूतना, रजक, कुब्जा कुञ्जरासुर, चाणूर, मुष्टिक एवं उपसेन राजा ॥१४, १५॥

(आव हिनका सभक प्रवेश होएत । तकर बाद प्रसव-वेदना सँ विकल देवकी प्रवेश करतीह । तकर गीत)--३

वेदन = पीड़ा सँ । गोइ = गुप्त कथ । अगिनि परवेशे = आगि में प्रवेश ।

एहि तह = एहि सँ । भावह = कपाड़ धुनव ।

(तखन देवकी प्रवेश करैत छथि ।)

१४ = वेआकुलि - क ।

देवकी—(श्लोकेन) कि मे प्रसवदुःखेन, ततो गर्भेण कि पुत्रः ।

अथवा किन्तु^{१५} पुत्रेण, यावत् कंसयमो भुवि ॥१४॥

(ततो देवकीगर्भ-निवाशि-मायावि-जनस्य योगनिद्रया सकुङ्कुरा सपरिवारः कंसामुरा सुप्तः । तदनन्तरमष्टम्यां तिथी आद्रकृष्णपक्षे मध्यनिशायां श्रीकृष्णेनावेतारो^{१६} लब्धः । देवकी शंख-चक्र-गदा-पद्माऽभिव-चारचतुर्बाहु^{१७} देदीप्यमानं^{१८} बालकमवनितले पतितं दृष्ट्वा चतुर्दशसबलोभय सत्वरं क्रोडे कृत्वा, पुनश्च पयोधरं वदति ।

(अथ दोहा)--

विभजनपति असरन-सरन, जे सहजक सिसुहप ।

से कह समय विचारिकहु, जे न जान अरिभूप ॥१५॥

(श्रीकृष्णः सर्वैव कृत्वा पयोधरं पिवति ।)

(अथ श्रीकृष्णप्रवेशिका - गीतम्)...४

जतमल जहुकुल - बालक, बाल - कमलमुख रे ।

नुर-नर - मुनिमन - पालक, पालक अतिमुख रे ॥

देवकी—(श्लोक द्वारा) हमर प्रसवक दुःख सँ की ओ गर्भ सँ की ? अथवा

पुत्र सँ की ? यावत् एहि पृथ्वी पर कंसरूपी यमराज जिवैत अछि ॥१४॥

(तखन देवकीक गर्भमे निवास करयवला मायावी लोकक योगनिद्रा सँ सेवक सहित सपरिवार कंसामुर सूति रहल । तकर बाद अष्टमी तिथिमे भाद्रपद कृष्णपक्षमे मध्य रात्रिखन श्रीकृष्ण अवतार लेल । देवकी शंख-चक्र-गदा-पद्मा सँ युक्त सुन्दर चारि बांहिवला अत्यन्त चमकैत बालक के पृथ्वी पर खमल देखिके चाकू दिस देखि भटवय कोरा कय, फेरि दूध दैत छथि ।)

(अथ दोहा)--असरन-सरन = असरणक कारण । सहजक = स्वाभाविक ।

अरिभूप = शत्रु, राजा (कंस) ॥१५॥

(श्रीकृष्ण तहिना कय दूध पियैत छथि ।)

१४ = कि पुत्रेण - क - ख । १५ = कृष्णवेतारो ख १४० - बाहु ख ।

१६ = मान - क ख ।

विलप तनय देखि देवकी, देव । कि होइति^{४२} गति रे ।
 भूपति भूप-तिलक कंस, तँ डरे^{४३} विकलमति रे ॥
 जन जन सुत मोहि जनमत, जन मत इहे दहु रे ।
 जगो^{४४} एहि-विधि विधि भागव,^{४५} की फल अवेदहु^{४६} रे ॥
 जोग निदे^{४७} सब भेल बस, बस^{४८} पुरजन जत रे ।
 हरि अरि सबल सब ल^{४९} पुनु सुतल^{५०} शिलारत रे ॥
 वसुदेव आए तुलाएल, लाएल थार एक रे ।
 तोरि न तोरि तनय^{५१} लय चलु, पथ न^{५२} केओ छेक रे ॥
 नौपि अएलहु^{५३} अरि दूरग, दूरग पथ पुनु रे ।
 धाहु रहिहु जमुना जल ! जलद ! बरिस जनु रे ॥
 लए सिमु पार उतारल, तारल मन दुख रे ।
 आबि अएलाहु^{५४} बल्लव पुर, पुरत सकल मुख रे ॥
 जसोमति सुता हुताजलि, जगनि^{५५} जोगवस रे ।
 वसुदेव देव बदलि करु, निजपुर परवस रे ॥
 वसुदेव देवि, देवि दए, धीरज घर मन रे ।
 चेहो^{५६} चेहो^{५७} सुनि कंस तरकल, तरकल तहिजन रे ॥
 नन्दीपति सुनु मानव ! मानव निरतय रे,
 कंस-गरव हरि^{५८} हरिकहु, वधव बैरि लए रे ॥

(ततः कंसासूरो देवकीगृहमागत्य देवीं दृष्ट्वा गृहीत्वा पुनश्चागत्य गृह-बाह्यदेशं पश्यति ।)

(श्रीकृष्णक प्रवेश करवाक गीत)—४

बाल - कमल - मुख = सद्यः फुलायल कमल सनक मुहवला ('बालक ओ बाल - कमल' मे बालक पदक आवृत्ति भिन्न अर्थ मे यमक अलंकार भेल । एहि गीत मे प्रत्येक पद एहि सँ युक्त अछि ।) पालक = पालन कएनिहार । पालक = पलना पर ।

४२ - होमति - ख । ४३ - डरे - ख । ४४ - भागव - ख । ४५ - आबहु - ख ।
 ४६ - बस जन परजन रे - ख । ४७ - सुतल शिलारत ख ।
 ४८ - तोरित लय - क ; तोरित तनय चलु - ख । ४९ - जग केओ लोक ।
 ख । ५० - जानि - ख । ५१ - × (अभाव) - ख ।

(ततो नारद-प्रवेशिका- गीतम्)- ५

जानि कुमारि मगन मधुरेश^{५२} ।
 एहि अवसर नारद परवेश ॥
 मन अवधारि अपन भल जानि ।
 हमर वचन हित कए हेलु माति ॥
 को^{५३} होअ कखने जानि नहि^{५४} जाए ।
 किए न बधहु एहि कहहु बुझाए ॥
 सिमु कन्या एहि एकओ न हेतु ।
 आठम गरभ तोहर जिकैतु ॥
 मधुरावति मानल उपदेस ।
 नन्दीपति हरि हरथ कलेस ॥

देवकी = देवकी, हे देव ! की होयत । भूपति = राजा कंस, राजा मे तिलक (श्रेष्ठ) । जनमत = जन्म लेत, लोकक मत । इहे दहु = इयेह । विधि = तरहे, भाग्य । भागव = फूटत । अवेदहु = आबहि । बस = बस मे, बसैत । हरि अरि = हरिक शत्रु । सबल = बलवान्, सब लय । शिलारत = पाथर पर भेड़ भेल । तुलाएल = अवस्थित भेलाह । तनय = पुत्रके । त.रित = स्वरित (शीघ्र) । तोरि = तिरोहित (धाँपि) कय । अरि-दूरग = शत्रुक दुर्ग । दूरग = दूरगामी । बल्लव-पुर = गोपक नगर । सुता = पुत्रीके । जननि = यशोदा माता । जोगवस = योगवश भगवतीक वश (निन्द) भय गेलीह । देवि = देवकीके, देवी (भगवती) = यशोदाक कन्या । तरकल = कुट्ट भय जोर सँ बाजल, मेघ गर्जल । मानव = मनुष्य, स्वीकार करव । गरव = गर्व । हरि = कृष्ण, हरण कय ।

(तखन कंसासुर देवकीक घर आबि देवी = कन्या के देखि पकड़ि पुनः घर सँ बाहर आबि देखैत अछि ।)

(तखन नारदक प्रवेश करवाक गीत)- ५

कुमारि = कन्या जानि । अवधारि = विचारि । वधहु एहि = एकरा मारेत छह । सिमु = ई बच्चा अछि ओ कन्या यिक ताहि हेतु हमर किछु नहि

५२ - मधुरेश - ख । ५३ - को । ५४ - न ।

कंसामुर- महर्षि ! तव भाषितमसंशयमपि सत्यं, सर्वं, सत्यमेव । (प्रणम्य आसनं दधानि ।)

नारदः— सर्वदा शुभमस्तु ।

(यद्यपि पितृव्यपुत्रिका— कृपाञ्जने^{१५}— किञ्चिद् विचारवि-
मुखाऽपि । तथापि नारदोपदेशेन शिलाशकलीपरि ताडनाऽभि-
प्रायेण क्षिप्ता देवी कंसकराधुमुक्ता वाऽन्तर्हिता । इत्येव
दर्शनाऽनन्तरमिदमाश्चर्यं सर्वे भाषन्ते कंसामुरं प्रति—
“पामर ! गतोऽसि^{१६}, गतोऽसि^{१७}” ।)

(देव्या गगनदम्^{१८} किञ्चिदुध्वंशेन गत्वा अनन्तरं
कंसामुरं प्रति यदीरितं तद् गीतेन समीचीनप्रकारेण गायन्ति
नर्तकाः इत्यभिप्रायेणाऽत्र गीतं समीरितं नाटिकाकारेण^{१९} ।)

सूत्रधारः— आर्ये ! इत्येव बोलुष्यम् ।

नटी — “अरजवत्ता ! को विशेषो ? एवं जुत्तं^{२०} कश्चिद् । [आर्यपुत्र,
को विशेषः ? एतद् युक्तं कविकृतम् ।]

कय सकेछ से नहि बुझह । एहि दूत मे एको कारण युक्त नहि । केवल आठम
गर्भ तोहर जीवन हेतु केतुग्रहक समान नाशक अछि ।

कंस- महर्षि ! अहाँक कहल असायो बात सत्य थिक, मरम थिक, सत्ये थिक ।
(प्रणाम कय आसन देत छथि ।)

नारद- सविषम शुभ हो ।

(यद्यपि पितृव्यौत-बहिर्निक उपर कृपा रहलाक कारणे^{२१} कनेक
विचारसँ विमुखो भेल तथापि नारदक उपदेश सँ पाथरक खण्ड पर
पदकवाक अभिप्राय सँ फेकल गेलि देवी कंसक हाथ सँ छुटि चुप्त भए
शेकीह । इत्येह देखलाक बाद ई आश्चर्य सब केओ कंसक प्रति बजैत
अछि- “लगट ! गेल छह ! गेल छह ! ”)

(देवी आकाश मे किछु ऊपर जाय कंसक प्रति जेबजलीहि
से नीकजकी नर्तकयम गर्वैत छथि- एही अभिप्राय सँ एतय नाटिका-
कार गीत कहलनि अछि ।)

१५— कृपाञ्जने । १६— गतासि गतासि । १७— गगनं पश्य - क ।

१८— नाटिकायां । १९— आर्यवत्ता । २०— जुत्तं केषवे - श; को चर्य - क ।

(अथ ११ गीतम्)- ६

छोड़ छोड़ बटु-बकवाद रे^{११} ।

गन मानि रहू अवसाद रे ॥

मतिमूढ़ की चिह्न मोहि रे ।

ते^{१२} कहव की हम तोहि रे ॥

जत जनमल देवकी-बाल रे ।

तत बधह तोहे^{१३} ततकाल रे ॥

सुन सुन अधम असुर रे ।

तोहि^{१४} तोर हृदय कुरुर^{१५} रे ॥

जदुनाथ लेल अवतार रे ।

कहु आव की परकार रे ॥

^{१६}वर-चक्र, गदा विनाल रे ।

कद संख, पद्म सनाल रे ॥

आव जे से आनन्दकन्द रे ।

जग जितव दानवद्वन्द रे ॥

जनि बघल छल दसरीव रे ।

तमु आज^{१७} के अरि जीव रे ॥

^{१८}वर देवि-वानी सुनि रे ।

किछु कंस कहु मन गुनि रे ॥

सूत्रधार- आर्ये ! इत्येह वृत्त ।

नटी- आर्यपुत्र, एहि मे की विशेषता अछि ? ई सँ कविक कयल
युक्त (उचित) अछि ।

[गीत]- ६

अवसाव- ताश, व्यथा । मतिमूढ़ = बुद्धिहीन । बधह = मारेत छह । कुरुर
= क्रूर, निर्दय । वर-चक्र = वराम चक्र, विनाल गदा, संख ओ तालसहित
कमल - ई चारु चारि हाथ मे धारण कयने ई भगवान्, विष्णु अवतार

११-अनु । १२- × (अभाव) — क । १३- क्रूर । १४- × × (दू पंक्ति क
अभाव) — ख । १५- आज-क । १६- एत वाद नवनातिक — ख ।

हमे^{१०} असुर अतिबल कंस रे ।
 कओन करत हमर विघंस रे ॥
 के विष्णु ब्रह्मा रुद्र रे^{११} ।
 की करत समता धृष्ट रे ॥
 बल बुझि पशुत^{१२} हमार रे ।
 जबे मिलत मोहि कुमार रे ॥
 एहो^{१३} कंस कहू जब ठानि रे ॥
 पुनु^{१४} देवि विचारल वानि रे ॥
 हमे अलप बाला नारि रे ।
 तोहें सबल पुरुष सुरारि रे ॥
 बल बुझल एहिखने तोर रे ।
 तोहें आव कि करब^{१५} मोर रे ॥
 कहू नन्दोपनि अवधारि रे ।
 किछु कंस मानल हारि रे ॥
 (गीतार्थे श्लोकः)
 रे रे बर्बर ! देवकीबहुसुत-द्रोहेण दुष्टाशय-
 स्तत् कि बलमसि^{१६} पीरुषं यदधुना लज्जाकरं कुत्सितम् ।

लेलनि अछि । दसग्रीव = रावण । तसु = तनिक शत्रु के जीवि सकछ । वर
 देवि वानी = देवीक श्रेष्ठ वाणी । अलप = अल्प, छोटि । सुरारि = दैत्य ।
 अवधारि = विचारि ॥

(गीतक अर्थ मे श्लोक)--

रे रे अत्याचारी ! देवकीक बहुतो पुत्रक द्वेष सँ दुष्ट हृदयबला तों की
 अपन पीरुष वजैत छह^१ ! जे (पीरुष) रखनहि लज्जाजनक एअं धृषित मिद
 भेलह अछि ॥ कमलसनक आँखिबला तेजःस्वरूप (श्रीकृष्ण) तोहर महान् शत्रु
 छलपुनह (जे जाव नन्दक ओहिठाम छथि) । हमर एहि स्पष्ट वचनकेँ सुनि एख-
 नहुँ की लज्जित नहि होइत छह ? ॥५॥

६७-हम असुर । ६८- (एतयसी रे'क अभाव) - क ख ।

६९-हमर - क । ७०-कंस एह जब - ख । ७१-तव - ख । ७२-करबह क ख ।

आसीत् कञ्जबिलोचनस्तव रिपुस्तेजःस्वरूपो महान्
 धत्वा मद्बचनं च विस्फुटमिदं नाद्यापि किं लज्जसे ॥५॥
 (ततो दुर्गावाक्यं श्रुत्वा अतस्तरं कंसामुरो गृहं जगाम । देवीति कथयि-
 त्वा^{१७} निष्क्रान्ता ।)

॥ इति प्रस्तावना ॥

अथ प्रथमोऽङ्कः

[श्रीनन्दतन्दनस्य नवरात्री बालकीडागीतमाह] - ७

नाना-भैआः नाना भैआः नाना भैआ^१ भाति ।
 यदुपनि जनमल भादवक^२ राति ॥
 भवनक चौदिस भूमि भूमि आव ।
 लए थारी करताल बजाव ॥

कए कोलाहल मञ्जल गाव ।

गए^३ घर दोड़ि कोड़ि लए आव ॥

(तखन दुर्गाक = यशोदाक पुत्रीक वाक्य सुनिकेँ कंस घर गेल । देवी ई
 कहि बहार भय गेलीहि ।)

॥ प्रस्तावना समाप्त ॥

॥ पहिल अङ्क ॥

(श्रीकृष्णक नओम राति पर बालकलोकनिक खेलक गीत कहैत छथि ।) - ७

नानाभैआ = तेनाक जगसँ सबम राति मे होवयवला जोग-टोन । भाति
 = झाक, ध्यात, सोझा । यदुपनि = श्रीकृष्ण । भाम-भूमि = घूमि घूमि । कोला-
 हल = हल्ला । गए = जाव ॥

७४ * × क ख ।

१ - × क ख । २ - × क ख । ३ - राए - ख ।

नन्दीपति हरि मुख मनु^४ आब ।
जननि जसोमति कण्ठ लगाब ॥

[ततो यशोदा-प्रवेशिका-गीतम्] - ८

प्रसव भवन सज्जो बाहर भेली ।
वेदी निकट जसोमति गेली ॥
सज्ज सखीगत मज्जल गावे ।
मुनिहुक मन धन मोद बढ़ावे ॥

पुरवधु वेडलि अति अभिरामे ।
बोदिस उडुगन विच हिमघामे ॥
कनक-कलसे जळ कएल सलाने ।
तनु भेल मौजल मुकुर-समाने^५ ॥

सिर^६ सिन्दुर तनु पीअरि^७ सारी ।
तखनुक जे^८ देखल तन्दक नारी ॥
से की देखत जगत पुनु आने^९ ।
नन्दीपति कवि कह परमाने ॥

(ततो वेदिका मध्ये काऽपि^{१०} न्यासकुशला कामिनी पद्मिनीपत्राकारं चित्रं लिखितवती । तस्य चित्रस्योपरि^{११} सकृष्णा यशोदा मज्जलक^{१२} सं सम्मु-
खीकृत्य^{१३} उपविशति । ब्राह्मणवर्गेण वेदिकामन्त्रेण श्रीकृष्णस्य शीर्षोपरि दूर्वा-

[तखन यशोदाक प्रवेश करबाक गीत] - ८

वेदी = आङ्गनक बीच में बनीओल लखीय चबूतरा । धन मोद = अतिशय
आनन्द । पुरवधु वेडलि = नगरक स्त्रीगण सँ घेरलि । उडुगन विच = तारेगनक
बीचमें । हिमघाम = चन्द्रमा । कनक कलस = सोनाक बेल । तनु = देह । मुकुर
= अण्ठा, दर्पण ॥

(तखन वेदीक बीच में क्यो अरिपत देवा में पटु स्त्री कमलक पात सनक
चित्र लिखलनि । ओहि चित्र = अरिपत पर कृष्णसहित यशोदा मज्जल-कलसके
सामने कय बैसैत छथि । ब्राह्मणलोकनि वेदिक-मन्त्र सँ श्रीकृष्णक माथ पर दूर्वा-

४-मनु × = ख । ५-समाने-ख । ६-सीर-ख । ७-पिअरि । ८-× (अभाव) ।
९-जाने । १०-विन्यास-का । ११-चित्रोपरि-ख । १२-कृष्णा ।

क्षतं दत्तम् । ततः पुरवधूभिः^{१३} दधिधान्यदूर्वा-पत्रवकदलीफलान्वितं नूतन-
वंशपात्रं पुनः पुनः भूमी निधाय श्रीकृष्णशीर्षोपरि प्रदक्षिणीकृत्य^{१४} गीतं
गीयते^{१५} ।

[अथ गीतम्^{१६}] - ९

बाभन वेदे^{१७} बाल^{१८} चुमावे ।
ब्रजवनितागत मज्जल गावे ॥
देखि कमलमुख अतिमुख पावे ।
जननि जसोमति कण्ठ लगावे ॥
जसोमति कोर देखब जदुराजे ।
ते^{१९} कर सहस^{२०} नयन सुरराजे ॥
पटह आदि सब बाजन बाजे ।
नाथ नोक नट सुन्दर साजे ॥
आनन्दे मगनि सकलि नरनारी ।
सगर नगर भरि बिलह सुवारी ॥
नन्दीपति कवि विरचलि बानी ।
बेषु अभय वर सारङ्गपानी ॥

क्षत देलनि । तखन नगरक स्त्रीगणलोकनि दही, धान, दूबि, पाकल केरा सब
सँ भरल नवीन वांशक पात्र = चुमाओलक डाला के बारम्बार भूमि पर रखि
श्रीकृष्णक माथ पर प्रदक्षिण कय गीत गवैत छथि ।)

गीत--९

बाल चुमावे = बालक श्रीकृष्णक चुमाओल करवैत छथि । ब्रजवनिता =
ब्रजक नारीसभ । जदुराज = यदुराज श्रीकृष्ण । सहस = हजार । बांशि इन्द्र
बनाम लेलनि । पटह = डोठ । बिलह = बँटैत छथि । सारङ्गपानी = शार्ङ्ग-
पाणि श्रीकृष्ण ।

१३-पुरवधूभिः । १४-प्रदक्षिणं कृत्वा ।

१५-गीयते । १६-× । १७-क ख । १८-साहस-ख ।

[शोहा]--

जन्म-दिवस सञ्जी नन्दभुज, दिवस-दिवस उपचीत ।
 कहए न पाबिअ १६ आन किछु, उपमा इन्दु सचीत ॥१३॥
 जनि जसोमति लाए तनु दिन लगबधि १७ दस लेल ।
 काम एहन इस दिवस बिच जनि ११ दुइ मासक भेल ॥१४॥
 एक दिन आनि १८ उगारि कहूँ, कोर कए लेल किशोर ।
 सजव तनय तनु जानि कहूँ, जनि तयत हर कोर ॥१५॥

अथ गीतम् - १०

मोहि रोग लागओ रे सोर सोना ।
 छो-छो कान्हो करि छिअ कोना ॥
 जहिजन सञ्जी बिलहल हम १९ सोना ।
 के जन कजोन दहुँ कएल अछि टोना ॥
 दूध-भरल बन फटइल मोरा ।
 मन उदवैग माइजे गति तोरा ॥
 चारि पहर निति कहरेत तोरा २० ।
 देखि देखि बैरज रह नहि मोरा २१ ॥

उपचीत = बढ़त गेलाह । उपमा इन्दु = चंद्रमाक सदृश कह्य उचित
 थिक ॥१३॥ लाए तनु = पुत्रक देह लय । दस = दस बैर ॥१४॥ आनि उगारि-
 कहूँ = देहमे उबटन लगाय । सजव तनय तनु = पुत्रक देहके सजायव । तयत
 = अछि ॥१५॥

गीत - १०

सोर सोना = हमर सोनाक समान पुत्र । बिलहल = बाँटल । सोना = सुवर्ण ।
 कजोन दहुँ = कोन प्रकारक । निति कहरेत = रति मे देवैतीक थिकट सभ्य
 करैत ।

१६ - पाबिअ । २० - दस लाउथि । २१ - जनु । २२ - ओम । २३ - सज ।
 २४ - तोही । २५ - मोही ।

नन्दीपति भव हरि बन लेला ।

जसोमति मन किछु भरओस भेला ॥

(उत्तांगारी श्रीकृष्णः कतिजन मासान् नीरवा एकवारं भूमौ सर्पाकारेण
 सञ्चरितः । यशोदा इदमावर्षं दृष्ट्वा अवन्तरम् आगोदविशेषेण गीतं
 गायति ।)

अथ गीतम्--११

देख देख नन्द ! कान्ह कर संपा २६ ।
 चुचिहुक २७ भरम चाप फुल चरा २८ ॥
 कमल नयन २९ कर बलय विरजि ३० ।
 शृंगु नु शृंगु नु घुषरु बाजे ३१ ॥
 ससरि ससरि खस, कोर न मोहावे ।
 कर धरइत पुनु मुख मनु ३२ आवे ॥
 जे दिन तात कहत हरि तोही ३३ ।
 से दिन सुदिन होएत कवे मोही ३४ ॥
 नन्दीपति कवि कौतुक ३५ गवै ।
 नन्दतनय रसमय कुस भावे ॥

कंसानुरः--(पूतना ३६ प्रति) पूतने ! त्वं याहि श्रीकृष्णवधाय नन्दगोपगृहं प्रति ।
 पूतना--तथाऽस्तु । (इत्युक्त्वा ३७ याति ।)

गीत--११

कान्ह कर = कृष्ण करैत छथि । संपा = सञ्चरण, साप जकाँ घुसकैत छथि ।
 भरम = भ्रम सँ । चाप = पकड़ैत छथि । कमल नयन = कमल सनक आँख
 छनि । कर बलय = हाथ मे मट्ठा । तात = बाबू, पिता ।
 कंसानुर--(पूतनाक प्रति) पूतने ! तो जाह श्रीकृष्णकेँ मारबाक हेतु नन्दगोपक
 घर ।
 पूतना--वेस । (ई कहि जाइत अछि ।)

२६--सापा । २७--चुचिहुक । २८--चापा । २९--नयन । ३०--विराज । ३१--बाजे ।
 ३२--मनु । ३३--तोही । ३४--मोही । ३५--कौतुक । ३६--इत्युक्त्वा पूतना प्रति कः
 इत्युक्तं पूतना-प्रति-क । ३७--क ।

अथ पूतना-प्रवेशिका-गीतम्--१२

हरिवध कसे कएल^{४२} उपदेश ।

कपट-रूप पुतना परवेश ॥

कुच दुहु कालकूट लेल लाए ।

दंख अनु लेख^{४३} नेओ ते हनु छपाए ॥

राति अन्धार सुतल सबे जानि ।

बापिनि ततए गुलाइलि आनि ॥

नन्दकिशोर कोर कए लेल ।

हुहु कर धरि थन बिष-दुध देल ॥

नन्दोपनि कवि कह परमान ।

आधे^{४४} कठिन तोर परल परान ॥

(श्रीकृष्ण करकमलेन पयोधरं नृहीतया मुखमारोप्य प्रहारेणाऽऽकषितं
दुग्धं पिबति^{४५} ।)

अथ पूतना विलाप-गीतमाह--१३

हुमे न एहन हरि जानल, मानल अपराधे ।

न हनु, न हनु सुनु^{४६} सिरिपति तिरिवध अछ बाधे ॥

(उत्तान सुतनिहार श्रीकृष्ण किल मास विलाप एक बेर भूमि पर साय
जकां बसुकलाह । यशोदा एहि आचम्यके देखला पथ विलक्षण प्रसन्नता सँ
गीत गवैत छथि ।)

पूतनाक प्रवेश करवाक गीत--१२

हरिवध = कृष्णके मारवाक । कुच = स्तन मे । कालकूट = बिष ।

(श्रीकृष्ण अपन करकमलसँ स्तन पकड़ि मुँह लगाय आधात सँ लेखिके
दूध पिबैत छथि ।)

४२ = कल । ३६ = हल = क ख । ४३ = ० = क ख । ४४ = ० = ख ।

फटदछ भार कलेवर, तेवर भेल भानी ।

बाधे सतिखने थन छोड़व^{४७}, उर उठदछ आनी ॥

उमिलु उमिलु धन सिरिपति, पुनु हमर निहोरे^{४८} ।

एहन करम पुन न करव, राखव जिव मोरे^{४९} ॥

नन्दोपनि कवि गाओल, हरिवध अनुरागी^{५०} ।

पुतनाओ पाओल परम पद, हरि रहु उर लागी^{५१} ॥

गीतार्थे श्लोकः--

पूतना पतिना भूमी श्रीकृष्णेन विताविता ।

ततो हाहावि-शब्देन यशोदा सविश्रुतिविता ॥१॥

यशोदा-

(पूतना-वधास्थलीपरि श्रीकृष्ण पतितं दृष्ट्वा सःवरं क्रोदे

कृत्वा पुनः पुनः कण्ठे निवाय) आः पाप ! आः पाप !! कि

किं विहिता, ^{४२}अज्जवि एदस्स सुदस्स ण आसा ।

[किं कृतं विहिता, अद्यापि एतस्मिन् सूतस्थे न वाशा ।]

(ततो नन्दप्रवेशिका-गीतम्)- १४

हाँ-हाँ सबद सुनि^{४२} तविवेध ।

दरवरि नन्द देल परवेश ॥

पूतना विलाप-गीत गवैत अछि--१३

न हनु = नहि भोड़ु । सिरिपति = श्रीपति, कृष्ण । तिरिवध अछ बाधे =
स्त्रीवध निषिद्ध अछि । भार कलेवर = भार सँ वेह । उर = छाती मे । निहोरे =
प्रायना ।

गीतक अर्थ मे श्लोक-

श्रीकृष्णक द्वारा मारलि गेलि पूतना भूमि पर खसलि । तकर हहाएव
बाध सँ, सुतनि यशोदा उठि गेलीहि ॥१॥

यशोदा- (पूतनाक छाती पर श्रीकृष्ण केँ खसल देखि फटवय कोरा मे लव बार-
बार कण्ठ लगाय) हाय रे हाय ! आओ एहि पुत्रक आशा नहि
बुझारछ ।

४२ = यशोदाक हे - ख । ४३ = निहोरे - ख । ४४ = मोरे । ४५ = अनुरागी ।

४६ = जानि । ४७ = आधे विषे तस्य । ४८ = सुनि ।

महर हहर कहर सनि तासु ।
 दुष्ट विवदते^{४६} हरि हह विव जासु ॥
 की परकार करव एहिकाल ।
 के जन, कजोन घर कामिनि बाल ॥
 पड़लि पुतना दूरसत्रो देखि ।
 निकट जाइत पुते बुगल बिसेशि ॥
 नन्दकिशोर कोरे कए लेल ।
 कह कवि कोविद बाहर भेल ॥

(दोहा)—

बाहर कए हनु हाथ बरि, जननि सहित जदुराए ।
 कृष्ण कमलमुख भूमि चुनि^{४७}, राखहि^{४८} गहवरे लगाए ॥१८॥
 पापनि सारनि हाथ सत्रो, जनि^{४९} राखल एहि काल ।
 से तुअ दिनानाथ प्रभु, सदा करषु रखपाल ॥१९॥
 गाइक नागरि^{५०} हाथ धरि, हरि तिर चाखु^{५१} दीप ।
 नेछेछि-पेउछि दुन^{५२} हरि कए, सबहु देल आशीस^{५३} ॥२०॥
 छिप्र विप्र सब आनि कहू, सब सत्रो वेद पढ़ाए ।
 सहस्र गाए सकृत्ति कहू, सब के देल बटवाए^{५४} ॥२१॥

(सिखन नन्द-प्रवेश गीत)-१४

सबद = शब्द । सविशेष = अमाधारण । दूरवरि = शीघ्रता से । प्रवेश =
 प्रवेश । महर = मोघ (नन्द) । हहर = विकल भय बीड़लाह । हर जिव = प्राण
 हरलन्हि । कामिनि बाल = स्त्री ओ बच्चा ॥

जनि राखल = जे (प्रभु) रक्षा कयल । दिनानाथ = दिनानाथ (गुरु)
 वा दीनानाथ (दीनाक नाथ विष्णु) । रखपाल = रक्षा ओ पालन ॥१८॥

४६ - विवदते । ४७ - चुनि । ४८ - राखहि । ४९ - जनि । ५० - नागरि ।
 ५१ - चाखु । ५२ - दूर दूर - 'क' । ५३ - आशीस । ५४ - बटवाए, 'क' ।

(अथ^{५५} नन्दभाषितं परमेश्वरस्य कीर्तनगीतम्)-१५

जय जय जगपति दीनदयाल ।
 जनि राखल मोरि^{५६} कामिनि बाल ॥
 समित कएल जनि ई उतपात ।
 जुग-जुग रहओ सन्धिक पक्षपात ॥
 जाहि सुमर सुर-नर सबकाल ।
 से तुअ सतत करषु रक्षपाल ॥
 बालक-पालक पर उपकारि ।
 असरन-सरन उचित असुरारि ॥

नन्दोपनिषद् कवि विरचलि बानि ।

देशु अभय बर सारङ्गपानि ॥

(गीतार्थन श्लोकः) :-

नागरि = नाहरि । हरि तिर = कृष्णक मण्डि पर । नेछेछि-पेउछि =
 हाथ धूमाय धूमाय मंगल मंगल ॥१८॥

छिप्र = शिघ्र (शीघ्र) । विप्र = ब्राह्मण । आनिकहु = आनि कए ॥१९॥

(अथ नन्दक कहल परमेश्वरक कीर्तन)-१५

जगपति = जगदीश । जनि = जे प्रभु । समित = समित (शान्त) । उतपात
 क्षोभ । सुमर = स्मरण करैल । सर-नर = देव ओ मानव । पालक =
 पालनकर्ता । पर उपकारि = परोपकारी । असुरारि = देशक शत्रु । सारङ्गपानि
 = विष्णु ॥

(गीतक अर्थ मे श्लोक) :-

जे देव (भगवान्) एहि बच्चाके गर्भ मे प्रतिदिन पालन कयलनि
 एथन रक्षा कयल जन, (पुतनाक) बाहिक पिबडा मे पड़ल देखि बचओलनि
 तथा जाहि भगवानक पवित्र चरणकमलक ल्यान सब देवता करैत लखि ओ जे
 तीनु श्लोक मे उच्च पदके प्राप्त कयने छथि से भगवान् हमर एहि
 पुत्रक सेवा रक्षा करषु ॥१८॥

५५ - अथ आह - क । ५६ - मोर ।

गर्भे च प्रतिपालितः^{१०} पतिवित्तं येनाऽऽप्नुता रक्षितः^{११}
 दृष्ट्वाऽयं भृजपञ्जरे निपतितो^{१२} देवेन येनाऽऽकृतः^{१३} ।
 यस्मैकस्थ पतिवपञ्जपदं ध्यायन्ति सर्वे सुराः^{१४}
 प्राप्नुता येन जगत्प्रयोजक-पदवी^{१५} पुत्रं स मे रक्षतु^{१६} ॥१०॥
 (बोहा)।

ओमरा^{१७}सिसुगन राखिकहुः कहहु जसोमति गेल ।
 दृष्टि अवसर हरि हेरिकहुः चरणे^{१८} शकट डेलि डेल ॥१०॥
 दृष्ट्वा शकट हरि ताहि तर, जसोमति दुर सगो देखि ।
 छातो पिडइते हाथ हुहु, दोहलि पाण उपेखि ॥११॥

(अथ गीतम्)-१९

कहु कहु सिसुगन गोही ।
^{१९}ओमरा राखि गेलहुं हमे तोही ॥
 पडैंग सुतल छल मोरी ।
 के लए शकटतर गेल किसोरा ॥
 शकट भंग किए भेला ।
 एत उतपात कबोत कए भेला ॥
 सिसुगन भाखल ताही ।
 अवहते दोसर न देखल काही ॥

(बोहा)।

ओमरा सिसुगन रक्षक मे बच्चा न भके । चरणे शकट पपर से गाड़ीके । उपेखि न उपेक्षा कर ।

गीत- १९

ओमरा = ओमरबाह, रक्षक । शकट = शकट, गाड़ी । किसोरा = बालक कुण्ठके ।
 उतपात = उपद्रव । भाखल = कहल । हरि तह = कुण्ठक द्वारा । कोहाइ =
 क्रोधित ॥

१०-पालित- 'क' 'ण' । ११-रक्षित- 'क' 'ण' । १२-निपतित- 'क'
 'ण' । १३-अकृत- 'क' 'ण' । १४-देवेन- 'क' 'ण' । १५-पदवी- 'क' 'ण' ।
 १६-रक्षतु- 'क' । १७, १८-ओमरा- 'क' ।

हरि तह एत^{२०} उतपाते ।
 ई कहि सिसुगन लगाओल लते ॥
 जसोमति उठलि कोहाई ।
 ऐसनि कहहु स नल अछि माई ॥
 मन्दोपति कवि गाऊ^{२१} ।

एत जसोमति सुत कण्ठ लगाऊ^{२२} ।

(बोहा)।

अति तातिल हरि जानिकहुं, कतोएक विचर बिताए ।
 जसोमति ई मन दिद कर, बाधि^{२३} अखरि लगाए ॥ १२ ॥

(ततो गीतम्)-- १७

अति तातिल हरि जानी ।
 उठलि जसोमति ई डिङ ठानी ॥
 बड़ दुख देख छह मोही ।
 अब हरि बाधि धरव हमे सोही ॥
 जानल अउज जत फोई ।
 हरिक तिखिक^{२४} सखी सवे छोट होई ॥
 जसोमति रहलि लजाई ।
 ई बुझि तखन हरि हलल बाचाई ॥
 अखरि सहित चलु चुपे ।
 जमला-अरजुन तारक^{२५} रुखे ॥

(बोहा)।

तातिल = अकाठी, तंग कपनिहार । दिङ = निश्चय ॥ १२ ॥

गीत- १७

जउइ = डोरी । तिखिक = त्रिवलीक स्थान (पेट ओ डर) । हलल = रहल ।
 जमला-अरजुन = यमलाजुन (अजुन नामक माल, जे यमल (जीआ) छल,

★ उतपातिल = (एक विद्वानक दृष्टि के) ।

११-ई ॥ १०-गाव- 'क' 'ण' । १२-लगाऊ- 'क' 'ण' । १३-राखि ।
 १४-बाधि- 'क' । १५-तारक- 'क' ।

वाँक^{११} पड़ति बिहू फारी^{१२} ।

अति कीसले दुहु हलल उपारी ॥

तन्दीपति कवि माने ।

अधम असुर^{१३} उडि चहल विमाने ॥

(दोहा)-

*कतोएक बिबस बितायकहु^{१४}, जसोमति जललए नेलि ।

पलटि पाछु^{१५} हरि हेरि कहु^{१६}, अति आकुलि^{१७} मने भेलि ॥२३॥

देखि देखि हरि-मुख-नयन, खन बिसमय खन हास ।

कोख जाति हरि, शिर कलस, आइलि अपन अवास ॥२४॥

[अथ २१ गीतम्]-१८

आग महर^{१८} तोर वाँकल पूत ।

एहिखन आगु होइत^{१९} अजपूत ॥

हम अति अधम हमर रहि भूत ।

की तमु करम, तोहर एक पूत ॥

दूटा एके ठाम रंगहि जनमल छल । तारक हथे^{२०} तारक राखक समान
नगगर । मौझ^{२१} नीच मे, बिहू^{२२} विमाने । हलल उपारी^{२३} उखाड़ि देल । अधम
असुर^{२४} नीच देखि जे वृषक रूप मे छल ॥

(दोहा)-

पलटि^{२५} पड़ि । हरि हेरि कहु^{२६} = कृष्णके पाछु अवत देखि ॥२३॥

हरि मुख नयन = कृष्णक मुहें हो आशिके । बिसमय = आश्चर्य । शिर
कलस = माथ पर बेल छप ॥२४॥

गीत- १८

महर = मोप, मन्द । तमु करम = हुनक (कृष्णक) कर्म । पूत = पुण्य । परिजम
= परिवारक लोक सेवाक वर्ग । परपुत लायि = आनक पुत्रक हेतु । जे मति =
हिनक जे बुद्धि छनि ताहि सी । दिनेक = कोनो दिन ॥

७१- मरी । ७६- खारी । ७७- दसुर चलल । ७८- कत एक बेरि ।

७९- पाछु हेरि कहु^{१६} ख । पाछु हेरि हरि- क । ८० मने आकुली । ८१- X

- ख । ८२- हमर अवे । ८३- होएत ।

मन छल विकल वृषि नहि भेल ।

पाछु लागल जमुना तिर नेल ॥

जे सिसु सहज उवरि धरि ऊठ ।

ते कैसे चलत कहत सब सुठ ॥

किछु दिन कुठओ-गिलओ बस आव ।

आनस करओ घरओ धन-घान ॥

कि करत^{२७} परिजम परपुत^{२८} लायि ।

जे किछु होएत हमहि दुखभाषि ॥

नन्दीपति हम सेजव ने पस ।

जे मति दिनेक हिनक नहि आस ॥

(दोहा)-

की बुस अबुध गोधारमन, कान्हू^{२९} करथि कत रंग ।

खन बालक, खन सुहन भए, बज-बनितामन संग ॥२५॥

एक दिन^{३०} जाइत पथ कहु^{३१}, मिलु बृषभानु दुलारि^{३२} ।

औचर धए बिलमाए धर, देखि^{३३} छकित सब नारि ॥२६॥

(ततो राधिका-प्रवेशिका-गीतम्)-१९

पयोमति मोर उपराधे ।

हरिक चरित्र माइ बड मन्द लाने ॥

कोर सुतल तोर कान्हू ।

ते जग जानहु हरि छथि नान्हू ॥

(दोहा)-

अबुध = अज्ञानी । कान्हू = कृष्ण । रंग = लीला ॥२५॥

बृषभानु दुलारि = राधा । बिलमाए = राकि, बिलम्बित कय । छकित =
आश्चर्यित ।

(तखन राधिकाक प्रवेशक गीत)- १९

उपराध = उलहून । मन्द = अथलहू । धन-पाने = खन पिबैत । कटेछथि

८४- कय । ८५- परिपुत । ८६- ० । ८७- कुमारि । ८८- देख ।

एतए^{१९} करवि अन-पाने ।
 ओतए कटे छवि तरुणक काने ॥
 जाइत जमुना-पथ आजि ।
 वन^{२०} सओ^{२१} बाहर जेल मरुराजि ॥
 ओंचर धयलनिह मोरा ।
 कातहुक अनमल तोर किशोरा ॥
 तखनुक तमु बेवहारे ।
 अवे^{२२} कि कहव हम अपन कपारे ॥
 पुछह^{२३} सकल सखि आनी ।
 तेहि^{२४} परमान होइत मोर वानी ॥
 कह^{२५} सखिगण मन लाई ।
 अननि जसोमति नहि पतिआई ॥
 नन्दीपति^{२६} अवधारी ।
 कृष्ण चरित सभ छकित मोवारी ॥

(ततः प्रविशति राधिका गीतम्) - २०

हमर कहल जत^{२७} यदि फुलि भेला ।
 कोन परि कान्ह सकट तर भेला ॥
 दोसर वचन मोर^{२८} सुनु अवधारी ।
 कह^{२९} कह के पुतना-वधकारी ॥

तरुणक काने = युवकहु सौ बड़ल बड़ल चाकि रखेत । मरुराज = श्रीकृष्ण ।
 परमान = प्रमाणित । अवधारी = युवत छवि ॥

(तखान राधिका गीतक संग प्रवेश करित जकि) - २०

जत = जतैक । सकट तर = गड़ीक तर । अवधारी = बुझि । अगुर
 = देख । मुमुधि = अजानी ॥

८२- एतह । ९०- तो ९१- से । ९२- पुछह सखी सेआनी । ९३- नहि ।

९४- कहकोविचक, कहहु सखीगण- वा । ९५- नन्दीपति कवि- क वा ।

९६- यत यत । ९७- ० ।

अमुर एक विरही-रूप आई^{३०} ।
 ताहि नवन स कोन गिराई^{३१} ॥
 ऐसनि मुमुधि तोहे जसोमति माई ।
 ने चिन्हह अपन धाक मरुराई ॥
 नन्दीपति जसोमति रूप भेली ।
 राधा ऊठि अपन घर गेली ॥

(दोहा) -

जसोमति देखल एक दिन हरिके^{३२} खाइत माँटि ।
 अति कोपे^{३३} आइलि निकट करे लय काँटक साटि ॥२७॥

(गीत) - २१

हे हरि ! पानि कयलह^{३४} जिव मोरा ।
 हेहरि भेलहु^{३५} हमे हँदइत तोरा ॥
 हमे हरि जेहन जन छह^{३६} मोही ।
 जगिह माँटि कहै छिअ^{३७} तोही ॥
 काँटक छडी अने छिअ^{३८} जोहि ।
 रह रह कका^{३९} कहै छिअ तोहि ॥
 चिट्ठे^{४०} कि उठव अवे लागत छोकी ।
 चेरिक पुत जके हलबाहै होकी ॥

(दोहा) -

कोपे = कोप सौ । साँटि = छडी ॥२७॥

गीत - २१

पानि कयलह = अत्यन्त परेशान कयलहु । जिव = प्राण । हेहरि =
 भगवन् । अनिवारी । जोहि = ताकि । कका = तोहर काका (नन्द) के ।
 चिट्ठे = चीत्कार कय । चेरिक पुत = दासीक पुत्र । हलबाहै छोकी =

३०- आइ- क । ३१- गिराउ क । ३२- लय काँटाके । ३३- करहु ।

३४- हरिहे कतेक हउव हम तोरा । ३५- छो । ३६- छो । ३७- छो ।

३८- काह । ३९- (दू पाँतीक अभाव) ।

नन्दीपति कवि विरचल वानी ।
किंचु पैमि मुकाएल सारङ्गपानी ॥

(दोहा) —

नहि किल, नहि किहु भाषिकहुं, माधव हलु मुख बाए ।
देखि बदन-विस्तार अति, यशोमति बठलि डेराए ॥२५॥

(अथ गीतम्)-२२

गनमोहन मुह^१ बाऊ ।
गहिमा अपन हुडाऊ ॥
यशोमति छिडि अरि देखु ।
अति अजगुत कए लेखु ॥
रशि मूर, लागर साते ।
सम्भू महि^२ भृगु-तते ॥
चौदह भुवन अवासे ।
अजार कहव कस रासे ॥
देखि भराइलि^३ महतारी ।
^१आनंद मुनल मुरारी ॥
नन्दीपति कवि गावे ।
नन्दतनय^४ भुल भावे ॥

हरवाही गेन = (छडी) । किंचु पैमि = बालमण्डली से घेरितथाव । सारङ्ग-
पानी = श्रीकृष्ण ॥

(दोहा) —

भाषिकहुं न कहि । बदन - विस्तार = मुहुँक विशाल रूप ॥२५॥

गीत- २२

गनमोहन = कृष्ण । छिडि = छिडि । अजगुत = आश्चर्य । रशि = चन्द्रमा ।
सुर = देवता । भृगुताते = ब्रह्मा । भराइलि = डरे भारी भेल, शिथिल
भेल । महतारी = माता यशोदा ।

२- मुखा । १०- ११- डेराइलि । १२ मन से तेहिबाव मानल हारी ।
१३- नन्दतनय रसमय ।

इति द्वादश — नामाङ्गनित — महाकवि — नन्दीपति — विरचित-

कृष्णकेशिमालायां श्रीकृष्णवतारो

नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

आनंद मुनल = आनन्द ही मुँह मुनि लेन वा 'आनन' (मुँह) मुनल ।
मुरारी = श्रीकृष्ण । नन्दतनय = श्रीकृष्ण ॥

बारह गोट नाम सँ शुरू महाकवि नन्दीपतिक बनाओल

कृष्णकेशिमाला मे श्रीकृष्णवतार नामक

प्रथम अङ्क समाप्त ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(दोहा) —

नन्द विचारल सबहु मिलि, मोकुल वास पुरान ।
ते एतेक^१ उत्तमत होक की विचार ब्यमान ॥२६॥
पद्य-भाषीकी यानि नहि, समुता नेलि सुबाए ।
बुझावन गए पर करिअ, मुखहि चराबिअ बाए ॥२७॥

(तनो नन्दगोप-वृषभानुप्रभृतयः वृषं विहाय गोमहिषीभिः सह बृन्दावनं
अति सर्वे निष्कास्ताः ।)

द्वितीय अङ्क

एते उत्तमत = एतेक उत्तमवा गए-जायके ।

(तनो नन्दगोप, वृषभानु इत्यादि गोपसब-वृषके छोड़ि गाय ओ गहि-
सिअ संग बृन्दावनक प्रति-विदा भेलः ॥)

१-एत सभो-क १ २-नए-बा ३-म्या-क, स्व-क १

(शेहा) —

पाँच बरख सजो नएस किछु^४ ऊपर हरिकी भेल ।
सज्जे सखायन सग दिन एतए ओतए चलि गेल ॥३॥
कर सर धनुषी^५ तुकमा पनही^६ पएर विराज ।
कछुटी पाटक, हाटक, कर बलमा घबि राज ॥४॥
श्रुति कुण्डल हीरा^७ नमक, पिपही वेनु बजाव ।
सगर दिवग जमुना निकट, खाएक बैरि घर आव ॥५॥

(ततो हलधर-प्रवेशिका-गीतम्) — १

चलल जसोसति हरिक उदेस^८ ।
एहि अवसर हलधर परवेस ॥
लटपटि पाग लाग बड़ नीक ।
उड़लि गुड़ी गुन गहि-गहि जीक ॥
असित अम्बर^९ तनु चलइत घूम ।
जनि भाउरि सिखि-सिखा सधूम ॥
अरण नयन, आनन अभिराम ।
लए अरविन्द उमल हिमधाम ॥
नन्दोपनि कवि कीतुक गाव ।
नन्दतनय रसमय दुस भाव ॥

वएस—अवस्था । सगर दिन—सम्पूर्ण दिन । ३।

कर—हाथ मे । सर—बाण । धनुषी—छोट धनुष । तुकमा—तूणीर । पनही—
जूता । कछुटी—कच्छी, जंघिया । पाटक—रेशमी । हाटक—सोनाक बनल मट्टा
(बलया) क कान्ति (सबि) हाथमे सोझित ॥४॥

श्रुति—कानमे कुण्डल ओ ताहि मे हीरा नमक ॥५॥
(वलरामक प्रवेशक गीत) — १

अवेस = खोज मे । गुड़ी गुन—गुड़ीक डोरी । असित अम्बर—नील वस्त्र ।

४—किछु हरिकी उरध । ५—धनमी तुकमा । ६—चोरा । ७—बदेस ।

८—अमर—कल ।

(ततः प्रविशति हलधरो गीतेन) — २

हे मा ! अपन तनय हरि हँदु ।
पाथर दए कोरल^{१०} मोर लटू ॥
बिनु अपराध सबहु सजो दूदु ।
रजहुक पुत न एहन^{११} हथकूदु ॥
हमे परनारि हलइ छिज कही ।
ई दिहु आवे रहव नहि सही ॥
नन्दोपनि कवि कीतुक गाऊ ।
हरिपद पङ्कज हृदय लगाऊ ॥००॥

(शेहा) —

एक दिन बाआ हरीककहु^{१२}, गोविन्द गेल वन माँझ ।
कर कोटाहल बाळमन, परइते^{१३} अबइछ सखि ॥१॥
(ततो वकायुर-प्रवेशिका-गीतम्) — २
अतिबल बकायुर विबुधारि^{१४} ।
पवन धीर कर बाँधि पमारि^{१५} ॥
एक टोर भेदनि एक^{१६} अकास ।
बालक सकल भेल सतरास ॥

भाउरि—बाळ भर लपटैत । सिखि सिखा—आगिक घघरा । सधूम = धुआँ
सहित । अरण—लाक । आनन अभिराम—मुँह सुन्दर । लए अरविन्द—कमल
लय चन्द्रमा उमलाह ।

(तखन बलराम गीत नवैस प्रवेश करैत छवि ।) — ३

तनय हरि—पुत्र श्रीकृष्णके । हँदु—अपराधकर्म सँ रोक । रजहुक—राजाक
सेहो । दिहु—निश्चय ।

(वकायुरक प्रवेश-गीत) — १

विबुधारि—देवताक शत्रु । पवन धीरकर—हवा के स्थिर कयलक । भेदनि
—पृथ्वी पर । सतरास—सयभौत । अनि परहार—अत्यधिक प्रहार करैत ।

१—जेहन । १०—री । ११—री । १२—एक भेल अकास ।

अति परहार आएल पुनु पास ।
हरि हेरि कएल हरख^{१३} परगाम ॥
मन्दीपति आवे इहे विचार ।
बहुनक बइरि होएत निस्तार ॥

(दोहा) —

मुद भेल बड़ि काल धरि, बकासुर^{१४} बाकल जानि ।
बुढ़ करे^{१५} चीरल^{१६} बज्ज धरि, सत्वर सारंगपानि ॥७॥

(बकासुरो भूमि पपात । इति दृष्ट्वा अनन्तरं सर्वे बालकाः^{१७} समोदाः) ॥८॥

(दोहा) —

एक दिन बालकबन्ध संग गोविन्द गेता बत मौल ।
कर कोलाहल बालगन परइते अवइल सौंभ ॥८॥

(सजः अघासुर प्रवेशिका-गीतम्) — ४

पथ पड़ि रहल अघासुर आए ।
बड़ मोट कए बइसल मुहु बाए ॥
अति ऊँच परवत सेहस्रो समाए
बाघ सिह देखि दुरहि पड़ाए
कतओक सिनु पहिनाहि जलि गेल ।
हरि हेगु अवे न समटि मुख लेल ॥

हरि — देखि । हरख — हर्ष । बइरि — शत्रुता । निस्तार — समाप्त ।
बज्ज — चौच । सत्वर — जल्दी । सारंगपानि — कृष्ण ॥७॥
(बकासुर भूमि पर लसल । ई देखला पर राम बालक प्रसन्न भेल ।)

(अघासुरक प्रवेश गीत) — ४

पथ — बाट पर । अघासुर — पापस्वरूप देव सापका रूप मे । परवत — पहाड़ ।
समाए — समान लागल । अवे — अघासुर । सरप — सर्वरूपी अघासुरक । एहि-
सह — एहि सँ । हलधि — मारधि ।

(अघासुर भूमि पर लसल ।)

१३ — हाथ । १४ — बकासुर । १५ — चिर । १६ — भत्ता ।

एहि अवसर हरि कए^{१८} अनुसार ।
कारि सरप^{१९} सिर भेल बहार ॥
मन्दीपति एहिह की बाड़ि ।
हरि निज हाथे^{२०} हलधि जिव काड़ि ॥

(अघासुरो भूमि पपात ।)

(श्लोक) —

वृन्दावनस्य निकटे हरिणा चाऽश्वकैः सह ।
अघासुरवधः कृतः ॥९॥

(इति निष्क्रान्तः) ॥१०॥

(दोहा) —

निज निज बाछा हाँकि कहु, संगे सखायन लेल ।
कतोएक दिवस विताए कहु, विरिवावन हरि गेल ॥९॥
उपवन दीप्तल नन्दसूत, पिपही धेनु बजाव ।
सने भोजन कर भाव कर, कत कत रंग लगाव ॥१०॥
चरइते^{२१} चरइते^{२२} सास बत, कतोएक बाछा गेल ।
कृष्णक महिमा बुझइ^{२३} लए चतुरानन हरि लेल ॥११॥

(श्लोक) —

वृन्दावनक समीप मे श्रीकृष्ण बालकलोकनिक संग अघासुरक वध कय
अघासुरक वध कयलनि ॥९॥ (ई कहि बहार भय गेलाह ।) ॥

(दोहा) —

निज निज = अपन अपन । विरिवावन = वृन्दावन ॥९॥ उपवन = वनक
समीप । भाव = दीवधूप, खेल ॥१०॥ माझ = वनक बीच । चतुरानन =
बहा । हरि लेल = हेरल कयल ॥११॥ ओहधि = खोजधि । जाजो = बावत ।
चतुरानन वृष्ण । आगकहु = आबिके ॥१२॥ सिनु बाछा = बालक ओ बच्छाके ।
विधि = बहा । सिरिजि कहु = बनाव के ॥१३॥ गव कहु = नवीन बनाय के ।

१७ — कएल । १८ — सरप । १९ — अघासुरवध । कृष्ण बकासुरयोसरस — क,
अघासुरवध कृष्ण । २० — हाथ । २१ — बुझए लाई । क. हा ।

से जोहृदि गए बाँधी धरि जसोदासुत जुहुनह ।
 साधव उपवन आएकहु फेरि हरल चरबाह ॥१२॥
 जे सिसु^{२१} बाछा बिधि हरल सकल विरिजि कहु लेल ।
 जेहने जेहने जे अछल, तेहने तेहने भेल ॥१३॥
 नव कए विरिजल नन्दसुत, ई सबे धिक केओ आन ।
 से शङ्का ककरहु नहि^{२२}, अपने अपने जान ॥१४॥
 कतोक दिवस दिताएकहु, विरिदावन हरि गेल ।
 ओहि^{२३} छन सिसु बाछ सकल, बिधि बेकत कए देल ॥१५॥

(अथ गीतम्) ५

बाछा विनिन मिहारी ।
 आकुल सबे धेनुआरी ।
 हुँकरि हुँकरि सबे आवे ।
 २४ए धन धूध पिआवे ।
 २५सिसु सिसु आनि मेराऊ ।
 हरि हरि हरल बुझाऊ ॥
 नन्दीपति कवि भागे ।
 कान्हे कएल परधाने २६ ॥

(दोहा) —

जस सिसु बाछा बिधि हरल, ताहि ताहि के देल ।
 एक एक जकरा अछलल, तकरा बुझ बुझ भेल ॥१६॥

नन्दसुत = श्रीकृष्ण ॥१४॥ ओहि रूप = जेहने जेहने छल ताही रूप मे ।
 बिधि = ब्रह्मा । बेकत = व्यक्त प्रकट ॥१५॥

गीत- ५

विनिन = वन मे । धेनुआरी = गाय । सिसु = बालक (चरबाह) सब ।
 सिसु आनि = बाछा आनि । मेराऊ = मिलओलक । हरि हरि = कृष्ण
 देखिके । परधाने = शास्त्रीकरण वा परधान ॥

२१- सिसु बाछा । २२- नहीं । २३- जोहि - क बा । २४- कए धन ।
 २५- सिसु । २६- परधाने । २७- अछल ।

गोप-अष्टमी जामिकहु, सागन्द सकल गोआर ।
 इन्द्रक पूजा करइरन कए सबहु^{२७} रचल विचार ॥१७॥
 निज निज गए बुहाए कहु, सबके देल हकाय ।
 भोग देल मैदा महिस, राजल सब उपहार ॥१८॥
 जगज्जन विविध प्रकार कइरइ, भातक भित्त^{२८} राशि ।
 खीरि पुरी टका वही, एकओ वरसु नहि वासि ॥१९॥
 कथिलाइ पूजाइ इन्द्रके, कीरेर तन्हि तहु अलि काम ।
 सब तहु गोवर्द्धन विपुल, तन्हिकहि दिअ एहिठाम ॥२०॥
 नीक^{२९} कहै छथि नन्दसुत^{३०}, सबहु कएल अंगिकार ।
 एहि अवतार परवत उार, देखल एक अवतार ॥२१॥
 परवत सज्यो हंसि डेठ भेल, विश्वम्भर अवतार ।
 भात-विमन भोजन कएल, जत छल विविध प्रकार ॥२२॥
 जे जकरा ईसित ३१ अछल, ते ते ते बर लेल ।
 नव आवि बल्लव सकल, अपन अपन घर गेल ॥२३॥
 (ततः^{३२} श्लोक) —

यदि श्रुत्वा^{३३} सुरैश्वर्यं न कृतं मम पूजनम् ।

^{३४}असन्नुष्टेन सकोधं तन्वादीन्^{३५} बलवान् प्रति ॥२४॥

(दोहा) —

जसु = जकरा ॥१६॥ गोप-अष्टमी = भाद्र शुक्ल अष्टमी ॥१७॥ व्यञ्जन
 उत्तरकारी । राशि = डेर ॥१८॥ कथिलाइ = कियेक । तन्हि तहु = हुनका
 (इन्द्र) से । दिअ = भोग लगाउ ॥२०॥ अंगिकार = स्वीकार । अवतार = देवताक
 मनुष्य रूपमे आगमन ॥२१॥ ईसित = अभीष्ट । ते ते = से व्यक्ति । ते बर =
 अभिलषित वरदान । बल्लव = गोप ॥२३॥

(संज्ञन श्लोक) —

हमर पूजा नहि कएल गेल—ई सुनि जे इन्द्र असन्नुष्ट भय कोधपूर्वक
 नव आवि गोपसभक प्रति ई कहलखिन—के कृष्ण धिक ओ के बलराम

२७—करए लाइ । २८—भित्त । २९—निजके । ३०—सुनि । ३१—
 क अभाव । ३२—निक । ३३—पूत । ३४—ईसित । ३५—सतो ।
 ३६—छत्ता । ३७—असन्नुष्टेन-क ल । ३८—बलिन ।

इदमुक्तं तदा तेन, को हरिः को हलामुघः ।
गोपानां गर्वनाशाय, पश्यन्तु भग किङ्कराः ॥३॥

(बोहा)

इन्द्र पञ्चाशोक मेघके, ई कहि बारम्बार ।
कए बरखा आकुल करब, जह अछि गए गोआर ॥२४॥
पसरल जलधर जाल जके, बिरिडासन सह-रीस ।
गानि पड़ल अँधकार अति, पसु के पशु परि पीस ॥२५॥

(अथ गीतम्) - ६

बासव^{४०} विमुक्त, विपन धन, कीदहु अछि होइनिहार ।
बड़ बड़ बुन्द उखरि सन मुसर सन जलधार ॥२६॥
कपड़ते^{४१} धेतु धरासक, कठिन काल अवधारि ।
बाघहि रहल वछा^{४२} कत, आकुल गए गोआरि ॥२७॥
बड़ कए रीस^{४३} बड़ाशोक, बालक भेल विचारि ४३ ।
कासोएक कतहु रहसो^{४४} गहु, बड़ मन्द कपल मुरारि ॥२८॥
नन्दीपति कह एहि लए, जनु केओ आये डरए^{४५} ।
की होज तन^{४६} तारा तह, एहि अछि जनए सहाए ॥२९॥

(गीतम्) - ७

पसु^{४७} प्राणी अति आकुल जानि ।
करे गिरिवर बह सारंगपानि ॥

शिक ? गोपयभक्त गर्वके नष्ट करवाक हेतु हमर सेवक सभ जाओ ॥३०॥ ३॥
(बोहा) - जलधर - मेघ । पसुके - मालजालके ॥२५॥

गीत - ६

बासव विमुक्त - इन्द्र विरुद्ध छवि । विपन धन - विषाद (दुःख) से मुक्त मेघ
अछि ॥२६॥
धरातल-पृथ्वीपर । अवधारि - विचारि बाघहि - खेतहि, गाम सँ हटल ॥२७॥
रीस - ईर्ष्या । मन्द - अशलाह काज । मुरारि - कृष्ण ॥२८॥

४० - विमुक्त बरित । ४१ - बाछा । ४२ - वेत । क । ४३ - विचार ।
४४ - डेरए । ४५ - ललए - क । ४६ - पसु ।

ता तर राखल गए गोआर ।
के कर केकर एहन उपकार ॥
वसुधा बुन्द परए नहि^{४८} पार ।
की तेज नील^{४९} जलद जहाधार ॥
कामहि छाह रहल जदुराए ।
परिजन के पल्लवात बुझाए ॥
गए महिसि सभे सुखे खइ खाए ।
एहिउँ^{५०} तर दिस सान बिताए ॥

नन्दीपति कह किछु नहि^{५१} भेल ।
इन्द्र अपन सन कए मुह मेल ॥

(बोहा) -

५१ कसओक दिवस बिताएकहु, गए बराबए मेल ।
शिशुगन बस सपान लए, समुता गिर दिस मेल ॥३०॥
कालिन्दी कालिय^{५२} अछल, करइते^{५३} पत उतवात ।
मे हरि कवि करन सजो, ता बिरे दए बड़ लल ॥३१॥

गीत - ७

पसु प्राणी - गाय महिसि आदि पशु ओ मनुष्य । करे - हाथ सँ । गिरिवर
- गोवर्धन-पर्वत । सारंगपानि - कृष्ण । ता - ताहि । के कर - के अपक्ति कय
सकैछ । केकर - कंकर । वसुधा - पृथ्वी पर । की तेज - की छोटत ? नील
जलद - नीलवर्णक मेघ । जदुराय - कृष्ण । पल्लवात - पल्लवात, अभिलाषा ।
एहिउँ - एकरहु । अपन सन कए मुह - अवस्तुत भगके, हारप्रथ भयके ।

(बोहा) -

कालिन्दी न समुत नरी मे । कालिय अछल^{५२} कालिय नामक विशाल विषधर
साप छल । उतपान न उपदेव ॥३१॥

४८ - मे । ४९ - नीलज जलज - कख । ४९ - एहि उत्तर । ५० - गद्दी ।

५१ - ० ० (वृ पौनोक्त अभाव) - क । ५२ - काली । ५३ - करइत - ।

ओतए कृष्ण कालिक५४ सङ्गे, जल निमग्न भए गेल ।
एतए विकल वल्लव सकल, कतए गेल की भेल ॥३२॥
हसि हलधर कहूँ तात केँ, हरि वीँ ककर तरास ।
कमलापति असरन सरन, मन जुगु करिअ५५ उदास ॥३३॥

(ततो गीतम्) - स

कालिक५६ विषधर सहए न पार ।
अतिगुस्तर५७ हरि—चरणक भार ॥
अखन चरण दए चहुँल मुरारि ।
कत फाटल जनि पङ्क दरारि ॥
जनि दल५८ कदल वसरि सिर गेल ।
दसन जोह बेधि बाहर भेल ॥
जखने नागिनि काँसि कण्ठ पल्लेल ।
तखने मातल हरि विषधर बोल ॥
कर करुणा कत कोशल भाखि ।
जिवि६० ग.७ ब्रिजि गेल हरि हनु राखि ॥
आवे नहि एतए तोहर निरबाह ।
पसु६१ सानुख जल पीउल चाह ॥
चरनदीपति नहि मरुड तरास ।
सागर सतत करह गए वास ॥

निमग्न = निमग्न, डूबि गेल । वल्लव = गोशर ॥३२॥
हलधर = बलराम । तात = पिता । तरास = बास, डर । कमलापति = लक्ष्मी
पति, विष्णु ॥

(तखन गीत) - स

गुस्तर = भारी । कत = कथा । पङ्क दरारि = पीक सखयला पर जेना दरारि
फाटि जाइत छैक । दल कदल = केराक पात । दसन = दाँत । काँसि =

५४- कालिक ॥ ५५- करीअ ॥ ५६- काली ॥ ५७- चरण भर (एहि पाँती मे एतयहि
अखि) - क. ख. ॥ ५८- कथा । ५९- दलक बल । ६०- जीव-क. ख. ।
६१- पसु । ६२- ०० (५ पाँतीक अन्त)

(ततो३३ जलाशयस्थ प्रविशति श्रीकृष्णः । सर्वे साश्चर्यं पश्यन्ति।)
(दोहा) -

नन्द यमोदा आदि कए, जे केशो छल तर तारि ।
देखि सकल साजसु सुख, अबइसे निकट मुरारि ॥३४॥
ताहि दिवस सजो कृष्ण राजी३४, सबकाँ अधिक सिनेह ।
तर तारी जानल सबहु, ई केशो अपुरख देह ॥३५॥

इति द्वादशनामाऽन्वित-महाकवि-नन्दोपनिषद्-चरित-श्रीकृष्णकल्लि-
मांसायाः तरुण-तामरस-लोचनो नाम
द्वितीयोऽङ्कः ।

कानिकय । कोशल = चतुरता हो । मरुड तरास = मरुड डर । सागर =
समुद्र मे । सतत = सदाखन ॥

(तखन जलसी आबि श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि । सब आश्चर्य
हो देखैत छथि ।)
दोहा -

आदिकय = इत्यादि । दिवस सजो = दिन हो । अपुरख = अपूर्व
॥३५॥

द्वादश नामाऽन्वित महाकवि नन्दोपनिषद् अन्तर्बोल
श्रीकृष्णकल्लिमांसा मे तरुण-तामरस—
लोचन (तवीन फुलापल लाल कमल सन
श्रीसिखला) नामक द्वितीय
अंक समाप्त ।

३३- ततः प्रविशति—क. ततो जलाशयस्थ श्रीकृष्ण ततो—ख ।
३४- कवि-क. कवि-ख ।



अथ तृतीयोऽङ्कः

(दोहा) —

कतोएक दिवस बिताएकहुँ, हरिकी जीवन भेल ।
अति सुन्दर हेरव हंगव, गति रतिपति जिति लेल ॥१॥
सखी सहित श्रीराधिका, कर जमुना—जल केलि ।
बलटि पाछु नहि हेर केओ, रमस मगनि संभ भेलि ॥२॥
केओ लक्ष्मिमुखि केओ कमलमुखि, कुरङ्गनयनि केओ नारि ।
जनि जगमग कर सहस ससि, बोदिस कला पसरि ॥३॥
एहि अवसर हरि जाएकहुँ, कीसले जमुना—तीर ।
बोली बीर बोराएकहुँ, कदम चढ़ल जदुबीर ॥४॥

राधिका — (गीतेन^१) — १

अम्बर वएछ अतारी ।
ये लए कदम तस चढ़ल मुरारी ॥
अभरण एक बस लेहे ।
हरि ! परिधान—वसन मोर बहे ॥
सबहुँ सखी पट पाऊ ।
हमारहि किए एति मन बिलमाऊ ॥
एत^२ कोतुक किए तोही ।
कारन कजोष कहह कुहु मोही ॥

तृतीय अंक

(दोहा) — जीवन = युवावस्था । गति = कृष्णक चालि । रतिपति = कामदेव-
के ॥१॥ केलि = खेल । बलटि = चूरि के पाछु कसो नहि तकलव ।
रमस मगनि = हँसी—मजाक मे मगन ॥२॥ लक्ष्मिमुखि = चन्द्रमा-
सन मुँहवाली । कुरङ्गनयनि = हरिज सनक आसिवाली । सहस

१- गीतम् । २- एति ।

किए^३ सोहे^४ पारह गारी ।

हमे न सोहर हरि ! सरहोजि^५ सारी ॥

गौर^६ मुख सबइछ आगो ।

तोइउं करह हरि ! ततबहि^७ लागी ॥

हमहुँ बुझिए तोर भावे ।

से मन बासि करह ! हरि आवे ॥

नन्दीपति कवि भावे ।

नन्दतनय रसमय सुख भावे ॥

श्रीष्णः— *वश्लवसुते । आभरणस्य कि प्रयोजनम्, तदालिङ्गनं देहि ।

राधिका— (गीतेन) — २

सखि सवे परिहरि भेली ।

ऐसनि विपति मोहि भेली ॥

हमे एकतरि बलभाँक ।

परइते अबइछ साँस ॥

गसि = हजारो चन्द्रमा ॥३॥ कीसले = कलकुल, चतुरस्रां ॥४॥

राधिका— (गीतक द्वारा) — १

अम्बर = वस्त्र । अभरण = सहना । परिधान वसन = पहिरन
वस्त्र । पट = वस्त्र । कोतुक = उत्सुकता । पारह गारी = मारि
पड़ैत छह । आगो = आगि, ज्वाला । ततबहि लागी = ताही लेल ।
'मन बासि करह' = नहि होयतह ॥

श्रीष्ण— गोपपुत्रि ! सहनाक हमरा कोन प्रयोजन अछि ते^१ आलिङ्गन
दएह ।

राधिका— (गीत सं) — २

परिहरि = छोड़ि । जिवमार = प्राण लेनिहार । जल बीवर = पानि

१- कोए-क सा । २- सरहोज-क ख । ३- मुख-क सा ।

४- तन बहि । ५- वल्लभ, प. ० ।

ओवे की करव परकाश ।
 मोरे लेखे भेल अन्धार ।
 तोहि छरि ! नन्दकुमार ।
 चिन्हल खोर जीव-मार ॥

जल धीवर, वग गोप ।
 अति मोहल अतिहीन ॥
 मृति अठलिहू देखि जाहि ।
 पड़ो हमार दुख ताहि ।

हमे न करिअ अंगिकार ।
 जे मने आव विचार ॥
 तन्दीपति कवि गाव ।
 तन्दसनय बुझ आव ॥

(ततः श्लोक) —

एकाकिनी विवस्त्रा च यादोवण-सुखाङ्गताम् ।
 परोक्षे तव धर्मस्य यथायुक्तं तथा कुरु ॥१॥
 आकण्ठ्ये राधिका—वायस्य कृतकृत्यो जनार्दन ।
 वृक्षादागत्य निकटं भाषते ह विहितं यथा ॥२॥

(ततो राधिका-करकमलं पृहीत्वा पुनः पुनः सविकारं पश्यति ॥)

मे मलाह ओ बनमे गोअर विशेष बलशाली भय जाइछ । अंगिकार
 न रहीकार ॥

(एकर बाद श्लोक) —

एकसरि, नाइदि ओ जलजम्बु सँ डरायलि हमरा अपन धर्मक परोक्ष मे
 जे उचित हो से कर ॥१॥

राधिकाक वचन मृति समुष्ट श्रीकृष्ण माल पर से लस आवि यथोचित
 बजलाह ॥२॥

(तखन राधिकाक करकमल पकड़ि बारम्बार देखैत छथि ।)

६— भाषितं ।

राधिका — १०५ शय ! कथय !! अहं वि तुभ धम्मसस परोक्षे; जहा जुत्तं
 तहा करेहि । बल्लह-सुख बल्लकारेण एदं ण जुत्तं । मए वि तुभ
 ईरिसो पुरुषो अज्जवि कोवि ण दिट्ठो । अहवा तिअ-धेअणा-समुद्धं
 जलजम्बो साअरस्स अलक्षित्ता पो होइ । [कृष्ण । कृष्ण !!
 अहमणि तव धर्मस्य परोक्षे; यथा-युक्तं तथा कुरु । बल्लभ—सुता-
 — बल्लकारेण एतन्न युक्तम् । मयापि तव ईदृशः पुरुषः अद्यापि
 कोपि न दृष्टः । अथवा स्त्री-वेदना-समुद्रः जलजम्बोः सागरस्त्वैव
 अलक्षितो न भवति ।]

(योहा) —

राधा सजो^{११} रतिरङ्ग कर, नागर नन्दकुमार ।

अति अन्तर^{१२} करि राधिका तखनुक उचित विचार ॥१॥

राधिका— (सोइगेत) —

जहन लोहर भरोस करि, तेहने सोहे कए देख ।

आगुर धरइते हाथ धर, सेहे^{१३} उपलक्षण भेल ॥२॥

(ततो गीतम् १४) - ३

हरि कर अन्तर दाने ।

तइओ रमणि मन नहि परमाने ॥

राधिका— कृष्ण ! कृष्ण !! हमहूँ अहाँक धर्मक परोक्ष मे पड़लि छी, जे उचित
 हो से कर । गोप-पुत्रीक बल्लकार सँ ई बाण टीक नहि भय
 रहल अछि । हमहूँ अहाँक सन पुरुषकेँ खाइ धरि ककरहु नहि
 देखने छलहुँ । अथवा नारीक वेदनाकरी समुद्र, समुद्रक जहाज सय
 जकाँ अस्थि सँ ओभल नहि होइत अछि ।

(योहा) —

रतिरङ्ग न केलि कोड़ा । नागर नन्दकुमार । अन्तर न अन्तर ॥१॥

राधिका— (विकल भएकेँ) —

सेहे उपलक्षण न तकरे परि, जएह कहूँ बरितार्य भेल ॥२॥

१०— (दूनु पोथीक पाठ असंगत अछि ।) ११ सँ १५— अन्तर,
 १६— सेह । १७— योहेत ।

अम्बर अङ्ग भरि लेला ।
 बहोधिहि हेरि दौड़ि उठि वेला ।।
 गुरुप-हृदय नहि धीरे ।
 केदहुं पलटि पुन हुरधि न धीरे ।।
 पयहु परग डर मानी ।
 निरखि निरखि कर कान्हुक भाने ।।
 रसमय कए अवधाने ।
 गुर गरबस पहिर परिधाने ।
 नन्दीपति देखि नारी ।
 सखि सब जाए देत परतारी ।।

(शोहा) —

दुर सजो^{१०} देखल सखीगण, राखा कर अतिरोष^{११} ।
 तोहरा सभके की कहव, हमरा करसक दोष ।।^{१२}

(तलो गीतम्- ४)

चिन्हल चिन्हल सखि ! तोही, १२ हमे ओही ।
 परिहरि छिछिहि मोही ।।
 सुनु सुनु संकट भोरा, नहि धोरा ।
 बड़ मन्द तन्दकिशोरा ।।

गीत- ३

हरि कहु^१ कृष्ण कवल । अम्बर^२ बसवक^३ रसनि^४ तुन्दरी । परमाने^५
 विश्वास । केदहुं^६ कह^७, कदाचित् । धीरे^८ वस्व । पयहु^९ रासतो मे । निरखि
 देखि^{१०} कान्हुक भाने^{११} कृष्णक प्रतीति (कृष्ण त ने अदंत छवि से ज्ञान) ।
 अवधाने^{१२} सम्हरि । परिधाने^{१३} वस्व ।।

(शोहा)

अतिरोष^{१४} खूब तामस । करमक^{१५} भाग्यक ।।^{१६}

१५-०० (वृ. पंतीक अभाव)-क । १६- देखि चतुरा नारी । १७- ली- क हा ।
 १८- अवरोध । १९- अह तव मिलि । २०- बड़ छवि मत्व ।

आँवर २१ धएलहि बेरी, हेरि हेरी ।
 हठहि बितल^{२२} बड़ि बेरी ।।
 तखन वसन हुनि देला, हमे लेला,
 भवितव्य छल से भेला ।।
 नन्दीपति^{२३} कवि गावे, पछतावे ।
 जावे हीनए रह तावे ।।^{२४}

(शोहा) —

कतोएक दिवस बिनाएकहु^{२५} अधि लय कएल पवान ।
 सखी सहित श्रीराधिका, बट भेटल भगवान ।।^{२६}

श्रीकृष्ण—

(गीतेन)- १

प्रतिदिन एहि पथे जाहे ।

बधि दुध बेवि-बेवि जाहे ।।

धरि पावलिहे^{२७} हमे आवे ।

कए छाएव निज काजे ।।

ओही^{२८} दिन बिसरल तोही ।

काने परि मिललिहे मोही ।।

लए सखन चहु^{२९} धीरे ।

रोहे हगे ध्याम सरीरे ।।

गीत- ४

ओही^{३०} ओहीटाम, निर्जन वाट मे । परिहरि^{३१} छोड़ि । मय^{३२} अवललह
 स्वभावक । भवितव्य^{३३} भावी ।।

(शोहा)

पवान^{३४} प्रयाण यात्रा । भगवान^{३५} श्रीकृष्ण ।।^{३६}

श्रीकृष्ण— (गीतक द्वारा)- १

पथे^{३७} वाटे^{३८}, रास्ता री । पावलिहे^{३९} पाओल । निज^{४०} अवत ।

सखअर^{४१} निगाछ पर^{४२} । धीरे^{४३} वस्व लय । तिर^{४४} तट पर ।

३५- घर फेरि-फेरी-क २२- कत । ३६- कह आवे । ३७- कै ।
 ३८- गीतिह । ३९- ओ-विन ।

एहि तिर हमहि जगती ।
 के हग गह उतपाती ॥
 सबहु सखा मिलि आऊ ।
 दधि दुध माखन खाऊ ॥
 गोचि धनि सबहु कहाऊ ।
 अपन अपन घर जाऊ ॥
 सन्दीपति कवि पाई ।
 कान्हू उठल मनुषाई ॥

(दोहा) -

की देव उत्तर ताहि हमे, जे मोहि शोभल जगत् ।
 ई कहि कान्हू पयान कए, आरम्भ भेल उतपात् ॥६॥
 कान्हूरे कर धर राधिका, वही देल फटकारि ।
 गारि देखें, समे कृष्णके, गोपी छुटलि गोहारि ॥७॥

(अथ प्रथम-गीतम्) - ६

आनी पाछी अनेक छलि ।
 समे गोपी एक भेलि ॥
 एकहि धर समे धरलि ।
 कृष्णक उपर छुटि खसलि ॥

जगती = घटवाह, सेवा लेनिहार, उतपाती = उकट्टी, धनि =
 धन्या प्रेमिका । मनुषाई = उन्साहित ॥

(दोहा) -

ताहि = तनिका । जगती = सेवाक रूप मे । कान्हू = कृष्ण । पयान
 = प्रस्थान (राधाक दिस) । उतपात = उपासक ॥ कान्हूरे = कृष्ण राधाक
 हाथ धरल । गोहारि = रक्षा मे ॥१०॥

पहिल गीत - ६

धरलि = आक्रमण करलक । छुटि खसलि = टूटि पड़लि । कोनहु पाग = केओ
 गोपी कृष्णक मुईठा धरलक । फाड़ = धोतीक कसल बन्धन । उकरि = कूटि ।

२७. गोहारि = क । २८ - यति ।

कोनहु पाग, कोनहु फाड़ ।
 कोनहु धएल कृष्णक बाड़ ॥
 उपरि उकरि धरि धरि ।
 कोनहु धएल पाँज ३९ भरि ॥
 केओ बधि, केओ मार ।
 केओ ककरहु हाक पार ॥

गाल ठुनुक पीठ जाट ।
 केओ गोपी चिउटी काट ॥

कोनहु झटहा, कोनहु नेप ।
 केओ धही मुह लेप ॥
 कान कनेटी, मुक्का धाड़ ।
 ककरहु अस्त्र दुषक भाड़ ॥

केओ धर, केओ छोड़ ।
 केओ कइव कपाड़ फाड़ ॥

काँद बाज छाती पीठ ।
 केओ जोह ३० पाथर ईट ॥

वीड़ रहल कृष्णक अड़ ३१,
 सबहु देल ३२ दाँत खड़ ॥

पाँज = बाहुपाश । हाक पाड़ = सोर करव (बल्लान) । ठुनुक = अङ्गुष्ठा पर
 तर्जनी भोजि गाल पर प्रहार । चिउटी = अङ्गुष्ठा पर से कसिके खचा बचाएव ।
 झटहा = प्रहारक हेतु फेकल जाइत डंठा । नेप = डेगा । भाड़ = भाण्ड, डबा ।
 काँद = कानय । जोह = खोजत अछि । दाँद = दाँत, स्थिर । अड़ = ओत, ओट
 मे । देल दाँत खड़ = आश्चर्यित रहल, लज्जित भेल । खल = शिथिल, हारल ।
 दोहाइ = प्रार्थना । कोहाँकाँ = अहाँके । पए = निश्चय । कान्हू = कृष्ण । पाओ
 = पाथर । बाहरि = कवि सन्दीपतिक प्रसिद्ध नाम बाहरि । अपात
 = विपत्ति । कबुल = गलल । जगती = सेवा ॥

२९. पास । ३०. मोह । ३१. खड़ । ३२. सबहु देल ।

बूझि बूझि अपने बल ।
 सबहु गोपी कएल शल ॥
 काँदि काँदि राधा कह ।
 पुछल पीछा माँझि सह^{३३} ॥
 हसर दोहाइ हलु छाड़ि ।
 कजोन फल अँचर फाड़ि ॥
 जजो ओहाँकाँ इहे पए ।
 ओहि पार खेव गए ॥
 कान्ह छठि आनल नाओ ।
 सबहु गोपी देल पाओ ॥
 कह बाँदरि इहे^{३४} अनात ।
 राधा कबूल कएल जमात ॥

(तृती द्वितीय-गीतम्)- ७

हरि हे ! अति आकुल मन भोरा ।
 कतेक सहन हमे कौतुक तोरा ॥
 फूटल नाओ, टूटल कछारि ।
 कोने परि हमे धनि उत्तरव पारे ॥
 एहि जमुना—जल कतहु न पाहे ।
 देव अमहार पार लए^{३५} जाहे ॥
 चने बुन्द धरिस^{३६} इसहु दिसि मेहा ।
 आवे अधिक भेल जीव सन्देहा ॥

तखन द्वितीय गीत- ७

आकुल = विकल । कौतुक = मजाक, हँसीठट्टा । कछारि = नाओ खेदवाक
 काँटक दण्ड । धनि = सुवर्ती । अमहार = कण्ठक मोलीमाला । चने = सवन,
 अविक । मेहा = मेघ । हलु हारी = निराश भेल । पथ जनु चढ़ = रास्ता सँ
 जनु गुजरव ।

३३- सह । ३४- एहे । ३५- पाहे । ३६- धरिस बगहु दिसि ।

सबहु^{३७} सखी मित्रि हलु हलु हारी ।
 बिनु रे पुरख पथ जनु चढ़^{३८} नारी ॥
 नन्दीपति कह^{३९} कजोन उपाई ।
 उषमग नाओ करइ अछि माई ॥
 (४० अथ तृतीय-गीतम्)- ८
 हरि हे ! एतेक करहु कथिछाई^{४१} ।
 आवहु अभिमत कहहु धुनई ॥
 सभे सखि पार छतरि घर गेली ।
 ऐसनि^{४२} विपति काहु नहि भेली ॥
 सबकी पीर सबहुकाँ चोली ।
 सभे परिहरि हमरहि सखी^{४३} छोली ॥
 भल होअ रुबिअ^{४४} होअहु वधभागी ।
 एत परिपञ्च भेल हमरहि लागी ॥
 नन्दीपति कवि कह परमाने ।
 पथ रे रमनि पुख पुरख ते^{४५} जाने ॥
 (श्रीकृष्णः हठात्कारेण राधिका-करकमलं गृहीत्वा पुनः
 पुनः सविकारं पश्यति ।)
 श्रीराधिका— (सकोषे गीतेन कथयति)— ९
 कहु कहु कइसन जमाते ।
 के छोहे, के तोर ताते ।

आब तेसर गीत- ८

अभिमत = अभिप्राय । पीर = वक्त्र । चोली = देहक वस्त्र (जवाज) । परिहरि
 = छोड़ि । छोली = ठट्टा । वधभागी = हत्याक पापक भागी । परिपञ्च =
 प्रपञ्च, छल । पथ रे रमनि = आत्मक नारीक ॥
 (श्रीकृष्ण बलजोरी राधाक करकमल पकड़ि बारबार विकार
 सहित देखैत छथि ।)

३७- सबहु । ३८- चढ़ । ३९- कह । ४०- अथ च । ४१- कथिछाई । ४२- ऐसनि ।
 ४३- सखी । ४४- रुबिअ । ४५- न जाने ।

थक देखि डेराहुह बापे ॥
 तोहरा बड़ बल दावे ॥
 छोड़ छोड़ आँवर मोरा ॥
 दधि दुध माखन मोरा ॥
 तखो लेलाह ४६ गिम—हारे ॥
 आवे न करह किए पारे ॥
 ऐसन करम मोर मन्दा ॥
 देखहु ४७ कर दन्दा ॥
 ने ४८ धारिअ एक कोड़ी ॥
 ने हमे तोहर नोड़ी ॥
 किए हेरि ४९ हलह डराई ॥
 कारन कहह बुझाई ॥
 रह रह नन्दकुमारे ॥
 आवे करब परकारे ॥
 बाप हमर दरबारी ॥
 भूप-भवन जपकारी ॥
 कंस ५० हनब जवे जानी ॥
 सभे दुध होएतह पानी ॥
 सुनह ५१ सुनह जदुराई ॥
 आज बुझव मनुसाई ॥

राधिका— (कोषपूर्वक गीतक द्वारा कहैत छथि)— ६

कइसन जगति ॥ केहन सातिक सेवा देव । तति ॥ बाप । दावे ॥
 बलक दावी । गिमहारे ॥ कण्ठक मोती माला । करम ॥ भाग्य ।
 मन्दा ॥ कमजोर ॥ देखहु ॥ देली पर । के कर दन्दा ॥ भगवा के
 कय सकैछ । नोड़ी ॥ दासी । हेरि ॥ देखि । हलह डराई ॥ डेराप

४६—लेलाह । ४७—कर । ४८—न एक धारिअ । ४९—हरि हलह डेराई ।
 ५०—कंस हनब पवे । ५१—सुनह ।

तन्वीपति कवि गावे ।
 रेखावे सहस्र छिन्न तावे ॥

[गीतार्थे श्लोकः]--

नो दूरादपि चागता परिचिता नो दाऽपि चोरप्रजा
 नाऽहं कीतुक-भाजन^{५२} । तथ पुनस्तत्तत्स चेदी न वा ।
 नाऽन्या काऽपि कुटुम्ब-वर्जित^{५३} । परा बोध्या न नीचात्मजा
 गोपुत्रस्य पयोधरहारकः^{५४} ! हरे ! दुरं^{५५} न किं तिष्ठसि ॥३॥

ततो गीतम्-१०

छोड़ छोड़ आँवर मोरा ।
 माधव । मोर निहोरा ॥
 किए बिलमावह मोरी ।
 भल न कहत कोओ तोही ॥
 हमे वृषभान-बुलारी ।
 एत नहि उचित मुरारी ॥

रहल छह । नन्दकुमारे ॥ कण्ठक । परकारे ॥ प्रतीकार । भूप-भवन ॥ राजाक
 घरक । कंस हनब ॥ कंस मारयूह । बुझ हावतह पानी ॥ बबला लेख जमतह,
 तखन बूझि पड़तह । जदुराई ॥ कण्ठक । मनुसाई ॥ जसाहित भेनाइ ॥

(गीतक अर्थ मे श्लोक) —

मे हम दूर सँ आयलि छी, ने तोहर परिचिज छी, ने चोरनी छी, ने तोहर
 ठकबकछा छी, ने तोहर बापक दानी छी, ने जान छी, ने अजाति छी आ ने नीच
 जातिक पुत्री छी । हे बचछाक दुध छिन्ननिहार हरि ! तँ दूर हटल कियेक ने
 रहैत छह ॥३॥

गीत-१०

निहोर—प्राथना । बिलमावह—रोकि देर लगबंत छह । भल—नीक ।

५२—गावे सहस्र । ५३—भाजना । क । भाजनस्तथ । छ । ५४—वर्जित ।
 ५५—दुरे ।

ऐतने करन मोर मन्दा ।

कि कहति^{११} साधु जनरदा ॥

परिहृष कान्ह कुरीती ।

हठे नहि होइति पिरीती ॥

नन्दीपति कवि गावे ।

भजनहि पद भल आवे ॥

(श्रीकृष्णने बलात्कारेण वल्लवसुता-सम्भोगं कृतमेव । राधिका शोद्धेन
नेत्राश्रुपुरितमुखी^{१२} नखाग्रेण भूमीं लिखति ।)

श्रीकृष्णः - बल्लव-सुते ! कथं विधीदसि ? (इति उत्त्वा^{१३} सागरार्थं
पश्यति ।)

[दोहा]--

जखो आवहु बल्लव-सुता, प्रतिदिन पास हमार ।

तखो हमे छोड़िख तोहि पुनः नहि तज्यो नहि परकार ॥११॥

मने अवधारल राधिका, इहे उचित एहि काल ।

भजनहि पद्ये करिनाम भल, चुप भए रहू तत्काल ॥१२॥

श्रीकृष्णः - बल्लव-सुते ! मीन स्वीकारमेव, तथापि स्कुटमादिदेति ।

मन्दा - अघलाह । नन्दा - नन्दि । परिहृष - छोड़ू । कुरीती - अनुचित काज ।

हठे - बल्ल सौ । पिरीती - प्रेम । भजनहि - गओले सौ ।

(श्रीकृष्ण बल्लवोरी गोपपुत्री राधाक सम्भोग कथयति । राधा उद्देग सौ
मुँह पर मोर भरलि नहक जगिला भाग सौ मानि पर किछु लिखै छथि ।)

श्रीकृष्ण - गोपपुत्री । किसेक विधि होइत छी ? (उठाय अपराधी जकाँ
देखैत छथि ।)

[दोहा]--

बल्लव-सुता - गोपपुत्री, राधा । परकार - उपाय ॥११॥

अवधारल - विचारल । भजनहि पद्ये - स्वीकारे कयला सौ । तत्काल

- ओहिसमय ॥१२॥

११ - करति कायु । १२ - नेत्राश्रुना मुखमाश्रितं - क. स. १. १२ - उत्त्वाय ।

राधिका -

(गीतेन) - ११

मुनू^{१४} मुनू नन्दकुमार ना ।

अनाइति न रह बिचार ना ॥

किछु न देखिअ परकार ना ।

हैं हमे करिअ अंगिकार ना ॥

एहि पय मोर गतागत ना ।

सबे दिन तोह समुपगत ना ॥

आवे न दोसर मन मोर ना ।

सपथ करिअ हरि तोर ना ॥

निरधन पाओल हेम ना ।

दिहू भेल प्रेमक नेम ना ॥

गन्वीपति हरि हेरि ना ।

रमनि हनलि मुख फेरि ना ॥

श्रीकृष्णः - प्रिये ! यासि ?

(राधिका तपन-तमसा-पारमागम्य पुनः श्वासं परित्यजति ।
श्रीकृष्णः हारं ददाति । राधिका करकमलेनाऽऽरोपयति कण्ठे ।)

(इति निष्क्रान्तीः^{१५})

॥ (प्रस्तावना बल्लवी-गृहगमनस्य) ॥

श्रीकृष्ण - गोपपुत्री ! चुप भेनाइ स्वीकारे धिक, तैयो साफ कहू ।

राधिका - (गीतक द्वारा) - ११

नन्दकुमार - कृष्ण । अनाइति - प्रतिकार नहि रहला पर । अंगिकार -

स्वीकार । गतागत - अवगता । समुपगत - आगमन । हेम - सोना । दिहू

- स्थिर । नेम - निश्चय । रमनि - सुन्दरी ।

श्रीकृष्ण - प्रिये ! जाइत छी ?

(राधा समुनाक पार आवि फेर श्वास छोड़ैत छथि । श्रीकृष्ण हार दैत
छथि । राधा करकमल सौ कण्ठमे धारण करैत छथि ।)

(हुइक प्रस्थान)

॥ गोपपुत्री राधिकाक घर अखनाक प्रस्तावना समाप्त ॥

११ - मुनू मुनू । १२ - निष्क्रान्ता ।

(ततः श्लोकः)-

सायं च भवनं राधा सम्प्राप्तो गोमर्षः सह ।

लोकेषु भौतिककलेशः सच्चैरावेदितः पुनः ॥४॥

(नती महोपप्रतापेन चीत्कारं कृत्वा चतुर्दिशं पश्यति । तत्क्षणं विहसति, रोदिति । इत्येवं दर्शनानन्तरं सर्वे गोमर्षं पश्यन्ति । ततो गो-महिषी-निवास-स्थलादपि सम्प्राप्तो वृषभानुः ।)

वृषभानुः - (श्लोकेन) -

अग्निभयं राजभयं भयं चौरस्य किं न वा ।

अथवा दुःखितः कोऽपि कोऽपि रुद्धो गृहादपि राधा

कलावती - अजडत्त ! कोको, को ऊणो ? [आर्यपुत्र ! शोकः कः पुनः ?]

वृषभानुः - (दोहा) -

धनि ! तुअ वदन मल्लीन देखि, नाना शक्का बाहु ।

दुलहनि बेटी राधिका, की तन्हिकां दुख गाहु ॥५॥

(तत्क्षणं श्लोकः) -

गौतमवत राधा गाय ममहिष संग गाम पत्र पट्टे चलि (तात्पर्यं जे गाइयो सम आयलि ओ ताहीकाल राधा गेहो आयलि) । लोक सभ मे जोर सौ भौतिक कट (भूत लागव) के बकट कयलनि ॥४॥

(तत्क्षण बड़ जोर जोर सौ चिचिआप बारुभर तकैत छथि । लगले हूँसेत छथि कनैत छथि । तखन गाय-महिसिक घरि सौ वृषभानु (राधाक पिता) पहुँचलाह ।)

वृषभानु - (श्लोक सौ) आगि लगवाक भय धिक, कि राजाक शासनक भय धिक कि चोरक भय धिक ? अथवा केओ मुली अछि कि केओ घर सँ रुसल अछि ? ॥५॥

कलावती - आर्यपुत्र ! शोक धिक, बार की रहत ?

वृषभानु - धनि - श्रीमती ! नाना शक्का - अनेक तरहक सन्देश ॥

५१ - सच्चैरावे ॥ ५२ - क हा ।

कलावती - (सगदगवांकारं गीतैः) - १२

मुनु मुनु धिआ, मुनु मुनु धिआ ।

आवे न जिउति मोर दुलहनि धिआ ॥

आवे की भवनपति हमरा ५१ पुछू ।

बेटीक दशा देखल ५२ अछि किछू ॥

जे मोर दुलहि ५३ लगजोल भूत ।

मज्जे मुनु तकर मरओ जेठ ५४ पूत ॥

एतिजने ककरहु न रह उफाट ।

धारल ५५ वए धिक इहे ५६ मत जाट ॥

अरिजन ५७-परिजन आनह देआए ।

समरधि बेटी हाथ मज्जे जाए ॥

नगदीपति कबि कह परमान ।

अपनहि ई दुख छटत ५८ निदान ।

वृषभानुः - (सकोषं राधा निकटं गत्वाऽनन्तरमिदमुक्तवान् ७१ राधिका प्रति) मुने ! कीदृशी रीतिरियम् ?

राधिका - (लोषणे क्षमीत्य तावमुखं शीघ्रं ७२ महोपप्रतापेन चीत्कारं कृत्वा भूमौ निपतति ।)

कलावती - (दुःख सौ अस्पष्ट अक्षर मे गीतक द्वारा) - १२

धिआ - बेटी । भवनपति - गृहपति । दुलहि - बेटी के । मज्जे - हमरा

सौ । उफाट - उपद्रव करवाक गर । धारल - स्थापित कयल, कुत्रिम,

ढोना कयल । जाट - दाघ । अरिजन परिजन - सकल परिवार के ।

वृषभानु - (शोधपूर्वक राधाक लग जाव तखन ई कहलनि राधाक प्रति) पुनी ! ई केहन व्यवहार धिक ?

राधिका - (हुत आँखि खोलि विताक मुँह देखि अत्यन्त जोर जोर सौ चीत्कार कय भूमि पर खसैत छथि ।)

५१ हमरा । ५२ देखी छिअ । ५३ दुलहि के । ५४ ठेठ । ५५ मायल । ५६ ई भय । ५७ अरिजल परिजन । ५८ छट । ५९ मुक्त । ७० - ० - ० - (एतय सौ अधिम दोहा तकक अभाव) ।

कलावती - हा सुष्टु ! गदासि गदासि । [हा सुते ! गतासि, गतासि !!] (ततः
कृष्ण वक्षःस्थलं तादृश्यति) ।

(दोहा) -

की कहति राधा अप्पकहुँ, यलें कर प्रेम-प्रसंग ।
तावत ते जदुताथ की, पाण-से बडल छल चङ्ग ॥१४॥
कोनटा लगल कृष्ण कह, देखि देखि राधा-रङ्ग ।
जे अछि तसु मने काज मोर, ते एत करइछ भङ्ग ॥१५॥

(७४ परकां सजो सुनि हरि वखनि, करि किल तापिक भेग ।
दोसर हमर सत के एखन, एहि अर्थक उपदेश) ॥१६॥

(ततः ७५ प्रविशति श्रीकृष्णः)

श्रीकृष्णः ७५ - (निरीक्ष्य) हयमेव कलावतीनां रीतिः ७७ । (वक्षः श्लोकेन) -
मुसां किन्तु मुनेन म गव - महामन्त्रस्य पाठेन किं
कि नानारस-नृत्य-गीत-कविताभाषाभिप्रायेण च ।
वाङ्मयं कोऽपि न शिक्षितं किमपि वा नूनं मया ज्ञापये
सर्वं नृपति विस्मृतं सुवचना ७६ - चेष्टा-चमत्कारतः ७७ ॥१६॥

कलावती - हाय पुत्री ! चल गेलें, चल गेलें !! (तखन हाथसँ छाडी पिटैत छथि ।)
बै-मे (राधा) । जदुताथ मे कृष्ण । पाण बडल अतिशय प्रेम
करैत । बङ्ग भगवानुल ॥१४॥

राधा - रङ्ग भगवानुल वषा वा अनुराग । तसु भगवानुल । भङ्ग भगवानुल,
ताल ॥१५॥

हरि-कृष्ण । तान्त्रिक भेग मे कृष्ण तान्त्रिक भेग भय भगवानुल उल
जवनाक विचार फल ॥१६॥

(तखन श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि ।)

श्रीकृष्ण (देखि) इयैह चतुरताधिकं चालि विक । (तखन श्लोक सी) -
गुरुपसभक गुण सी की कामदेवक महान् मन्त्रक पाठे सी की अनेक रस,
नौच गीत कविता ओ भावक प्रयोगहि सी की हाथत ! ते हम केओ (विशिष्ट
व्यक्ति) छी आ ते निछु शिवा लेने छी, परन्तु हम सब किछु जनैत छी । से सब
एखन एहि सुन्दरीक चेष्टाक चमत्कार सी तिरारि गेलहुँ ॥१६॥

७३ - प्राङ् चङ्ग ७४ - (५ पांतीक अभाव) - क । ७५ - ० (अग्रिम श्लोकक
आव ६ पांती अछि) - क श । ७६ - ० - क श : ७७ - कलावती निरीक्ष्य ।
७८ - कमवरा । ७९ - की । ८० - ता. क. ते-सा । (एकर आवाज इति निष्का त. छेक ।

(श्रीराजिका लोचन उन्मील्य ७१ पश्यति । श्रीकृष्णो ७२ गत्वा सकोपं
पश्यति । सा चीत्कारं कृत्वा सूचयति ।)

कलावती - कथन ! कथन !! परस ७३, परस, पुअ वि विअसही मह ७४ सुजा
७५ जीअण पइरइ । [कृष्ण ! कृष्ण !! पश्य, पश्य, तव गति
प्रियतमो मम मृना जीवनं परिहरति ।]

श्रीकृष्ण - (सहर्षम् उत्थाय) राजिके ७६ ! चेतन्यं कुरु ।

वृषभानु - (श्लोकेन) -

किं नाम तव रे प्रेत ! पश्य वा किं प्रयोजनम् ।

सत्वरं कान्तं गच्छ विहाय मम पुत्रिकाम् ॥७७॥

श्रीराधा ७८ - ब्रह्मविद्याचोदहम् । उन्मत्तोऽहम् । अले ७९ अले बह ८० । मयि
पहल मा कुनु यास्यामि । (अरे अरे बहलम ! मयि प्रहारं मा
कुरु, वास्यामि ।)

(ततो ब्रह्मविद्यापचारं अथवा मन्त्रादिवाङ्मय ८१ क्लेशयति ।
राजिका समक्षं ८२ लज्जया अधोमुखं पश्यति ।)

(श्रीराजिका अञ्जि लोलं तर्कं छथि । श्रीकृष्ण जाप कीधपूर्वक देखैत
छथि । राधा चीत्कार कर मुखिल होइत छथि ।)

कलावती - कृष्ण, कृष्ण ! देख, देख, अहँक प्रिय मयी हमर बेटी जीवन -
स्थान करैत अछि ।

श्रीकृष्ण (प्रसन्न भवे ऊठि) राधा ! होश मे आउ ।

वृषभानु - (श्लोक द्वारा) -

रे प्रेत ! मोहर की नाम विकीर ? कतर पठाओल छे ?

कोन फाज छीक ? हमरा बेटी के छवि भेटवय वन जो ॥७८॥

श्रीराधा - हम ब्रह्मराक्षस बिकह ८१ । हम उन्मत्त (उन्मत्त, पराकमी) छी । अरे
अरे मोक्षार ! हमरा पत्र पहार जव करह । जायव ।

७१ - ० - क श । ७२ - श्रीकृष्ण दृष्ट्वा क । ७३ - पश्य, पश्य । ७४ - सह ।

७५ - वि अण येहवेनी । ७६ - का । ७७ - ब्रह्मविद्या - वषसवी ब्रह्मविद्या - क ।

७८ - अहो बहलम हरलबहार मा कुरु । ७९ - अले अले अमितमेव - क । ८० - मया ।

कलावती- १ मुणु! कथं सुख इरिगी अवस्था? २ विशेषेण मां कथय । [सुते
कथं तव ईदृशी अवस्था? विशेषेण मां कथय ।]

राधिका- (गीतेन कथयति)- १९

सुनि उठि भवन छाड़लि हम छीके ।

तकर उचित २० फल पाओल नीके ।

समे सखि आउलि २१ हमहि एकजाऊ

एकसरि हमे धनि पथ भोजिजाऊ ।

भूतहि पाकड़ि तर जवेरेर पगु देला ।

तेहि खने २२ सखी मोहि कीदहु भेला ।

फोएल चिकुर, फारल हम चीरे ।

निज सख विहुटल अपन शरीरे ।

भल छल मरण होइत वर आजे ।

के की कहत तकर होअ जाजे ।

न-सीपति जखी मोर हित होई ।

२३ जनि जानलि से २४ राखिअ गोई ।

(तत्काल मगेशी उपचार सौ वा मरुत आदि सौ अत्यन्त कष्ट

इत छथि । राधा होअ से आवि छाजे नीचा तर्कत छथि ।)

कलावती- पुत्री! कोना सोहर एहन दशा भेलह? नीकजका हमरा कहह ।

राधिका- (भीतक द्वारा कहैत छथि)- [गीत सं० १३]

भवन - घर । छीके - छकरह, छिकला पर । नीके - पर्वत ।

धनि - सुवर्ती । पथ - बाट । भूतहि पाकड़ि - जे पाकड़िक गाछ भूताहि

अछि । मगु - बाएर । कीदहु - किदत, अज्ञात अवस्था । चिकुर - केस । चीरे -

वस्त्र । निज सख - अपन नह सौ । विहुटल - नछोड़िके धपल । जनि - नारी ।

गोई - गुप्त ।

११-मु । १२-सौ कि-क; सा विशेषी माकय-सा । १३-० । १४-आऊ हम

पखिजाऊ । १५-जे-क; घस-ख । १६-खनरी । १७-मे जानल । १८-राखिअ ।

(दोहा ६६)--

भूपभानु आदि गोप सकल महिमा कृष्णक देखि ।

सीता तथाओल सबहि जत, जेअ अपुरव देखि ॥१७॥

... ..

अन्धमे सबहु १०० पवान कल जत छल गोप गोखार ॥१८॥

× ×

× ×

× ×

जति उत्कण्ठा मिलत लाइ, विफल राधिका प्राण ।

कथयव दिअ विताएणहु, दखि लग कएल पवान ॥१९॥

पातहिरी बेलाल अछल, बहुपति समुना तीर ।

इति धूरहि सौ राधिका, पुलकित भेल तरीर ॥२०॥

(अथ सखेहो भूखना गीतम्--१४)

जगमग जेति अधिक भलभांती ।

कलए दिवस शशि ऐसन कांती ॥

अनल शिखा शिहो भन वहि आवे ।

पवन परसि झितलता आवे ॥

जखी कहू ई पुनि नामनि रेहा ।

अधिर होइत तखी तकर यादेहा ॥

दोहा--

महिमा-महत्त्व । गोप अपुरव-अज्ञान मन ॥१७॥ १८॥

उत्कण्ठा-साधुसुकतापूर्ण इच्छा । पवान-वात्रा ॥१९॥

समुपति-कृष्ण । पुलकित रोमाञ्चित, अतन्वित ॥२०॥

[एकर बाद सखेहो होयवाक गीत - १४]

दिवस-दिन मे । शशि ऐसन-चन्द्रमाक समान । कांती-कान्ति;

प्रकाश । अनल शिखा-आगिक धधरा । पवन परसि-हवा सौ स्पर्शक ।

१७-... (दोहाक अभाव) - क । १०० - ६ । १-हाथ । २-खल ।

३-बुद्धेहो । ४-गीति अधिक भेल । ५-कलेक ।

धल जलरह नहि ई दिड़ जानी ॥
ते सरसिज न हलिय मने मानी ॥

नन्दीपति कह की कहव आने ।
साधा गले धिकि इह परमाने ॥

जखो मोहि पुछिअ यवारथ ।
आवे हमे खेलहु कृतारथ ॥

गीतार्थेन श्लोकः--

इयं दिवस - सुप्रभा भवति मेव चाध्या कला
न वाऽपि कमलावली विचलिता च नम्रानना ।
हिमाऽपि हि विरचितऽनलशिखा १० न सौदामिनी
तथा भवति राधिका कुलयाऽन्विताऽऽस्याम्बुजा ११ ॥ ॥ ॥

श्रीकृष्णः प्रिये ! आश्चर्यसम् ॥

[ततो गीतेन--१५]

आज सुदिन दिन भेल मोर १० ।
अनेक दिवसे दरसन तोर ११ ॥

वामिनिरहा - विजलोकक रेखा । अधिर - चञ्चल । धल - पृथ्वी पर । जल-
रह - कमल । दिड़ - निश्चय । सरसिज - कमल । हलिय - प्रकटित करैत छी ।

गीतक अर्थक द्वारा श्लोक -

दिन मे प्रकाशित होइत ई चन्द्रमाक कला नहि भय सकैछ, चलैत भूडी
भुकाओने कमलो नहि भय सकैछ, शीतल ओ देखी घरि स्थिर रहने ने अग्नि
शिखा आ ने विजलोकक विक । तखन ई एहि पृथ्वी पर कमलमुखी राधिका
भय सकैछ ॥ ८ ॥

श्रीकृष्ण - प्रिये आज ।

६ - जी । ७ - अति धीर होइत ते । ८ - ते सरसिज । ९ - लप्रानना ।

१० - लाऽपि । ११ - स्याम्बुजा । १२ - मोर । १३ - भेल मोर ।

एतनुक हृदय हमर यन ।
न भेल, न होएत काहु मन ॥
वक्षिगुनि ! करह समुख मुख ।
तोहे हमे प्रेम पहिल मुख ॥
तोहे मोरि १४ प्रेम परसमनि ।
छठि कर धरह हमर धनि १५ ॥

होअओ हृदय मोहि परतिति १६ ।
वेकत करह अनुभव रिति १७ ॥

नन्दीपति नहि निरवह ।
निजो मुखे नारि कतहु कह ॥

(ततः पूर्वाक्रमेण संयोगं कृतयेव ।)

श्रीराधिका - (विहरय) अहोअहा ! तन नियमस्य निर्वाह !
श्रीकृष्णः - प्रिये ! १८ कथमतीक्ष्णखण्डेन मां सन्ताडयसि ?
बोहा -

ओ रिति माधव-राधिका, कए किरिडा १९ कत दीन ।
दिने दिने जाइलि गीति अति, एकओ न अपन अधीन ॥ २१ ॥

(तखन गीतसँ) - १५

यवारथ - वास्तव मे । कृतारथ - धन्य । समुख मुख - मुँह सोझी । पर-
समनि - स्पर्शमणि । कर - हाथ । परतिति - प्रतीति, अनुभव । वेकत - व्यक्त,
प्रकट । निरवह - निमज्जत । निजो मुखे - अपना मुँह ।

(तखन पहिलके सवाँ सम्योग कयलनि ।)

श्रीराधिका - (हँसि) अहा ! अहाँक एहि नियमक निर्वाह भेल !
श्रीकृष्ण - प्रिये ! कियेक भोव तआरि सँ हमरा कटैत छी ?
बोहा -

ओ रिति एहि प्रकारे । किरिडा - क्रीडा, विहार । दीन - दिन समया ॥ २१ ॥

१४ - मोर । १५ - धनि । १६ - तोही । १७ - रीखी । १८ - अहोअहा । १९ -
कथं भवतिक्षण । २० - कृडा ।

सामुह्य कर समसागतन, परिहरि लोकक लाज ।
 नर-नारी आनल सबहु, पुहु काँ सुदिह समाज ॥२१॥
 राधाजी तेजल अपन धर११, हरि तेजल घरदार ।
 सह भोजन, सह शयन पुनु, सहै सबसह सञ्चार ॥२२॥
 + + +
 नोपसखा१२ सञ्ज एक दिन, मेझोसा गोविन्द गेल ।
 धनि आनन१३ दिन खेल देखि, दिवसक शक्ति सम भेल ॥२४॥
 श्रीविठ्ठलओल ओतए सजो, दिस दस अछि अटकाओ ।
 प्रेम परिच्छा बुझए लाइ, किहु करे छवि ताओ ॥२५॥

(ततः प्रविशति पत्रहारकः पत्रं ददाति ।)

राधिका- (पत्रं पृष्ट्वा पत्रावलोकनान्तरं१४ सखीं प्रति) सहि१५ विशाल-
 विज ! महु पुरुष-मञ्जनस्य प्रसादेन किं किं न भविस्सति, एवं
 किं ? [सखि ? विशालाक्षि ! मम पुरुष-मदनस्य प्रसादेन किं किं न
 भविष्यति, एतत् किम् ?]

परिहरि-छोड़ि । सुदिह समाज-अनिष्ट सम्पर्क ॥२२॥ तेजल-
 छोड़ल ॥

सह = सहहि । शयन = सुतनाइ । सञ्चार = सम्बन्ध । सञ्चार-
 नमन ॥२३॥

मेझोसा = नोत पुरव । गोविन्द = कृष्ण । धनि आनन = राधाक मुह ।
 दिवस = रास । दिवसक शक्ति = शत्रुक बन्धन ॥२४॥
 अटकाओ = रुकवाक । परिच्छा = जाँच ॥२५॥

(तखन चौठी अननिहार प्रवेश करै छवि । पत्र दैत छवि ।)

राधिका- (पत्र लप देखि सखी केँ) सखी विशालाक्षी ! हमरा कामदेव
 सनक सुन्दर पुरुष (श्रीकृष्ण) क कृपा सौ की की नहि होवत, ई की
 भेल अछि ?

२१-सखल - क । २२-सखा । २३-जानन दिन खेल विजि । २४-मनोरमिह-
 सुक्त सखी-क । २५-सही विशालाक्षी पुरुषमनसादेन किं किं न
 भविष्यति एवं किं ।

(दोहा) -

तखनुक मोर मन तेहन छल, न गुनल निज-कुल हानि ।
 धाड़ उपर कए होअ नहि तखनुकि ओहनि मलानि ॥२६॥
 पहिला बएसक पहिल रस, पहिल संग सहवास ।
 शिव शिव ! तेर१६ सवे दुरि गेल, ठाम रहल उपहास ॥२७॥
 छजर दसन छजर वसन, अभरण एकओ न अञ्ज ।
 कामिनि काँ किछु साठ नहि, बड़दत्त विरह तश्ज ॥२८॥
 घर - बाहर कए राधिका, बरिस नञोन जलघार ।
 पुन पुन पध हेरि हेरि हिय, निरदय गन्धकुमार ॥२९॥

(ततो गीतेन - १६)

कोने मोर१७ तारि जवम देल, कि१८ ककर लेल,
 पहिलहि बएषा विरह भेल ॥
 शिव शिव साल परग मोर, कि जीवन जोर,
 बाने जति होएत बिबहुँ ओर ॥
 पुनु पुनु मदन पुरुष-मनि ! कि हमरि सनि,
 जजो तोह देखहु अपनि धनि ॥

(दोहा)-

न गुनल नहि विचारल । निज कुल हानि न अपन कुलक हानि ।
 ओहनि मलानि एहन दुःख ॥२६॥ बएसक = अवस्थाक । शिवशिव
 = हाय हाय ! ॥२७॥ दसन = दाँत । वसन = वस्त्र । अभरण =
 पहना । साठ = सजावट ॥२८॥ नञोन = अँखि । पध हेरि हेरि = बाद
 देखि देखि, हिय = हृदय मे । निरदय गन्धकुमार = कृष्णक निरदा करय ॥२९॥

(तखन गीतसँ) - १६

कोने के (विधाता) । तारि = स्त्रीक रूप मे । ककर लेल = ककशा हेतु । साल
 १६- सौ सवे दूरि । २७-मोर ओरे तारि । २८-को कर ।

तजो तोहे बुझह विरह दुख, हेरि मझ मुख
पर जिव बधइते वड मुख ॥
एक बेरि भयम भेलाह तोहे, कि एहि कोहे,
विरह विकल विरहिनि शोहे ॥
रसमय नन्दीपति कह, बड अनरह,
सुपुख सोनि जदि दुख सह ॥

(इति मूर्च्छति । ततः प्रविशति विशालाक्षी ।)

विशालाक्षी- सहि बल्लभगुण^{३३} ! समस्ससिहि, समस्ससिहि । [सखि
बल्लभमुते ! समाश्वासिहि, समाश्वासिहि !]

राधिका— (ससंज्ञ^{३१} लोचन उन्मील्य पुरतोऽवलोक्य भीतेन) - १०
सजल सघन घन देखि देखि
कोने परि प्राण रहत सखि ॥

शरदक सखि निशि कैसनि ।
एहि तह अधिक की ऐसनि ॥

जत जत छल मोहि भीतल ।
से सभे दए दुख बीतल ॥

॥ वेवेत अछि । परम = मर्मस्थल । जिवहु = ओर = प्राणक अन्त । मदन = काम-
देव । पुष्य-गति = पुष्य मे स्थित । धनि = स्त्री । हेरि मझ मुख = हमर मुँह
देखि । पर जिव = दोसरक जीवन के । बधइते = छुट्या करैत । तोहे = काम-
देव । कोहे = कोधे । शोहे = डाह सँ । अनरह = अनर्थ ॥

(ई कहि मूर्च्छि होइत छथि । तखन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि)

विशालाक्षी— सखी बल्लभ-पुत्री ! चेतना मे आब, चेतना मे आब ।

राधिका— (होशमे आवि आँखि ताकि आगू देखि गीत सँ) — १०

३९-बहु-क । ३०-मुखे क. ख । ३१-संज्ञेन ।

परम बेरि पहु परतछ^{३२} ।

अंजलि^{३३} जलहु सन्देह अछि ॥

अवधि-रिवस परि धनि सह^{३४} ।

कामिनि हृदय हाल^{३५} कह ॥

^{३६}नन्दीपति कह^{३७} मन गुनि^{३८} ।

अपनहि हरि अओताह^{३९} पुनि ॥

(तर्प्य राधिका-विलापवाक्य समागता कामाक्षी द्वितीया सखी श्री-
कृष्ण सह ।)

कामाक्षी - हि ! सम्पत्तो बल्लभ-सुओ^{४०} । [सखि! सम्प्राप्तो बल्लभ-गुल ।]

(राधिका ससंज्ञ लोचने उन्मील्य श्रीकृष्ण दृष्ट्वा भूमी निपतति ।)

श्रीकृष्ण - हा चिक् ॥ सन्देहे धातिता^{४१} मया । (इति उत्थाप्य भीतेन वक्ष-
यति ।)

(अथ गीतम्) - १८

सुन्दरि ! की कोलि बोचब^{४२} तोही ।

बड कए मुख अछइत मुख जगिरल, तकर^{४३} उचित फल मोही^{४४} ॥

सजल = जल भरल । सघन घन = गाढ़ मेघ । सखि = चम्पूमा । निशि =
राति मे । कैसनि = कैहन । एहि तह एहि सँ । बेरि = शत्रु । पहु = स्वामी ।
परतछ = प्रत्यक्ष । अंजलि = आजुर मे ।

(राधाक वचन सुनि दोसर सखी कामाक्षी कृष्णक संग आयलि ।)

कामाक्षी - सखी ! पहु चलाह गोपुत्र श्रीकृष्ण ।

(राधा होशमे आवि आँखि ताकि श्रीकृष्णके देखि भूमि पर खसैत छथि ।)

श्रीकृष्ण - हाय हाय । सन्देह मे दए देख हम हिनका । (ऊठि गीतक द्वारा
कहैत छथि ।)

३२-तख । ३३-अंजलि । ३४-सह । ३५-हार-क. ख । ३६-० (वृ-
पत्तिक अनाप) - क. ३७ - कवि कह । ३८-गुनी । ३९-ओताह । ४०-०
-क. ख । ४१-मुख । ४२-पतितम् । ४३-बोचब सखे तोही ४४-० ।
४५-मेही ।

हमरे बिाहे तोहे किबहु^{१६} करे छह, ^{१७}ते लिखि लिखनि पठाऊ^{१८}वा
मनाएक लाइ^{१९} मोहि तिरिबध लगइल भागे भलहि भल आऊ ॥
काहि कहव पुख के भविआएत, मोरि भेलि^{२०} वाहत छाती ।
हरि हरि ॥ हरि हमे की कएल निजा करे, कण्ठ लगाओल काती ॥
^{२१}एक रे जानि छवि तोहे सनि पेअशि, ता सजो कएल बेआजे ।
^{२२}कसलो कनक बहन बह के देख, धिक^{२३} धिक धिक मोर काजे ॥
पड़ल हमर अपराध कमलमुखि ! तोहे^{२४} किए तेजह पराने ।
पड़लो पुखल मुख होअ कुदिवस, ई ^{२५}जग के नहि जाने ॥
मन्दीपति भन, बुभल तोहर मन, एतेक करह कविलाई ।
जे जिये आवे ओहण नहि करवे, बर लेह सपथ कराई ॥

राधिका—(संयंत श्रीकृष्णमुखमवलोक्य सख्या ^{२६}सह निष्कांता सखीगृहं
प्रति ।)

श्रीकृष्ण—हा प्रिये ! परित्यज्यैव गतासि । सखि^{२७} विशालाक्षि ! त्वं याहि
प्रियानिकटं समोपकाराय ।

गीत सं०—१८

बोवय = बोंवय । जगिरल = अंगीकार कमल, स्वीकारल । लिखनि =
चिट्ठी । मनाएक = मनपचाक हेतु । तिरिबध = रक्षीबधक पाप । पाहुन =
पाथर । हरि हरि = हाय हाय ! हरि हमे = हम श्रीकृष्ण । निजाकरे = अपना
हाथे । काती = खड़ग । पेअशि = प्रेमिका । बेआजे = छल, चञ्चना । कसलो
कनक = खान चवओलो सोनाके । बहन बह = आनि मे जस्य । मुखल = मुख ।
राधिका—(चितना मे आवि श्रीकृष्णक मुँह देखि सखीक संग सखीक घर बिस
बिया भय गेलीहि ।)

श्रीकृष्ण—हा प्रिये ! छोड़िये कय बलि गेलहुँ । सखी ! विशालाक्षी ! तो जाह
प्रियाक समीप हमर उपकारक लेल ।

१६—बोवहुँ । १७—ते । १८—ऊ । १९—लाए । २०—भेल । २१—एके ।
२२—कएलो । २३—अधिक अधिक धिक काजे = क । २४—जग जव ।

२५—ज सह । २६—० ।

विशालाक्षी—(विष्कांता ।)

श्रीकृष्ण—(इलोकेन)

मरणं यौवनारम्भे धनारम्भे धनशक्तिः ।

प्रेमारम्भे च विपरीतो भाग्यधन्यस्य लक्षणम् ॥१॥

(ततो गीतेन^{२८})—१६

के जान कजोन रोवे^{२९} रुसि भेलि रामा ।

अपनहि आज वेकत भेलि वासा^{३०} ॥१॥

(एतस्मिन्मर्थे श्लोकः)—

नो जानामि कथं दृष्टा राधिका रमणी मम ।

स्वयञ्च ^{३१}वामद्वयार्थम् अर्थवा^{३२} ^{३३}सदेवितं पुनः ॥१०॥

तद्व्यअं तकर हमे करिय वेआने ।

अकरे बिरहे^{३४} मोर निकल पराने ॥१॥

(अस्यार्थेन श्लोकः)—

जानामि तु न पुरे^{३५} रीति न ^{३६}वाऽऽगमिष्यत्वधुना प्रिया वा ।

ध्या^{३७} कथं तस्याः^{३८} किपते तथापि महाऽऽकुलोऽहं बिरहेण सख्या ॥११॥

विशालाक्षी—(चलि भेलि ।)

श्रीकृष्ण—(श्लोकक द्वारा) यौवनक आरम्भ मे मृत्यु, वतक आरम्भ मे धन-
हिक नाश ओ प्रेमक आरम्भ मे विधोम भेनाह अभागलक लक्षण
धिक ॥१॥

(तखन सौतक द्वारा)—१६

कजोन मे कोन रामा मे सुन्दरी । वेकत मे व्यक्त प्रकट । वासा मे सुन्दरी,
विपरीत भेनिहारि ॥१॥

(एहि अर्थ मे श्लोकः)—

मे जानि जे हमर सुन्दरी राधिका कियेक रुसि रहलीहि । वासा (सुन्दरी)
सबक अर्थ के (विपरीत भेनाह) आइये स्वयं आवेवित कयलनि अलि ॥१०॥

तकर मे तहि प्रियाक । वेआने मे ध्यान, मरण ॥१॥

(एकर अर्थ नौ श्लोकः)—ई निरनय जनी छी जे हिलुक रीति एखन नहि अलि,
आ ने ओ प्रिया एखन अपने करतीह । तयो हुनक ध्यान करैत छी,
जनिब बिरह नौ हम महात् विखल छी ॥११॥

१०—गीतम्—कः १५—वासा क । १६—वासा । १७—रादेवितं । १८—पुरे
पुखे क छ । १९—राम मित्यधुना । २०—हृष्येयधु ।

नयन काजर नहि, मुख नहि पाने ।

निज घनि ऐसनि देखबु पचवाने ॥III॥

(अस्वार्थेन श्लोकः) -

लोभने कज्जलं नास्ति, नास्ति^{१४} ताम्बूलमानने ।

ईदृशं सुवर्ण-वस्त्रं, कामः पश्यतु साम्प्रतम् ॥१२॥

^{१५} नखे लिखि लिखि कय तसु निरमाने ।

^{१६} चरन परल^{१७} छिञ्च ऐसन गेजाने ॥IV॥

ध्याःवाऽऽलस्य नखाग्रकेण पुरतः सा साम्प्रतं दृश्यते

कृशं यातवतीं सुमुत्तिमधुना तस्याः^{१८} प्रियायाः पुनः ।

सोऽहं तच्छरणाश्रुजे निपतितो ह्य राम ! किं मे भ्रमो^{१९}

विक्षीणोक्तिरियं प्रमीलितजनेनाऽऽलोकिता किं पुनः ॥१३॥

रमनि-विरह तह बुख नहि भारी ।

कखनि मिलति मोहि प्राणप्रिआरी ॥VI॥

निज घनि = अपन प्रियाके । पचवाने = कामदेव ॥III॥

(एहि पदक अर्थ सँ गीत) -

जकरा आँखि में काजर नहि ओ मुँह में पान नहि छेक, एहन अपन परनीक मुँह एखन कामदेव देखबु । (कामक प्रति आक्रोश थिक ।) ॥१२॥

नखे लिखि = मन सँ चित्र रूपे लिखि कय । तसु = प्रियाक । निरमाने = चित्ररचना । ऐसन गेजाने = एहन बुद्धि कयल ॥IV॥

(एहि पदक अर्थ सँ गीत) -

ध्यान कय आगु मे नहक अप्रधान सँ लीखि (चित्र बनाय) हुनका एखन देखि रहल छी । तखन तमसायल-मान-करैत ओहि प्रियाक मूर्ति के पुनः देखि हम हुनक चरण कमल पर शक्ति पड़लहुँ । ई की हमरा भ्रम भय भेल ! ई हमर निश्चिन्तावस्थाक उक्ति थिक, आँखि मुनल स्वत्तिक द्वारा की ओ झेललि गेल ? ॥१३॥

१४-० । १५-खने । १६-चरन । १७-अछि । (अस्वार्थेन श्लोकः)

१८-तस्याऽऽलस्यया । १९-रमा । २०-प्रेमीयिता । २१-प्राणा प्राणानोऽद्यमौ ।

(अस्वार्थेन श्लोकः) -

विदलेषादपि दुस्तहं शिव शिव !! ^{२२} प्रेमाश्रितानामिहं

दुःखं दोषतरं यथा किल तथा नाऽस्य जगन्मण्डले ।

इत्थं पश्यन्तीं विना मम पुनः ^{२३} प्राणप्रवाणोद्यमो

नो जानामि सत्तानामप्यति कदा प्राणप्रिया राधिका ॥१४॥

मनइ^{२४} नन्दोपति कवि कलानिधि ।

रसलि रमनि निक सेहो^{२५} बड़ सिधि ॥VII॥

(^{२६} अस्वार्थेन श्लोकः) -

यस्यापि वनिता कटा समागच्छति ^{२७} सा यथा ।

तर्कयामि तदा तस्य सा चैव भिदिरद्भुता ॥१५॥

(ततः प्रविशति राधिकायाः^{२८} सह विशालाक्षी, राधिका^{२९}-निवास-गृहद्वारे, नीलतोपचारधरा । कामाक्षी च ।)

विशालाक्षी - सहि ! समाम्यसिहि, समाम्यसिहि । [तखि ! समाम्यसिहि, रमनि-विरह तह = प्रियाक विरह सँ ॥VI॥

एहि पदक अर्थ सँ श्लोक -

हाय हाय !! विद्योगदुःख सँ अधिक असहनीय ई (प्रियाक कसब) दुःख प्रेमीक हेतु जेहन पैव होइछ, तेहन संसार भरि मे दोसर दुःख नहि अछि । एहि तरहें कामकमुखीक जिना हम प्राणप्रवाणक पछोग करैत छी । ने जानि प्राणप्रिया राधिका कहिवा अछीनीहु ॥१४॥

कलानिधि = कवि नन्दोपतिक नाम । रमनि = सुन्दरी, प्रिया ॥VII॥

(एकर अर्थ सँ श्लोक) - जिनक प्रिया रसलो पर जखन आवि जाइत छथिन ते तर्क करैत छी जे तखन हुनक ने एक अद्भुत सिद्धि भय जाइत छनि ॥१५॥

(तखन राधाक संग हुनक घरक द्वार लग विशालाक्षी, ओ ठंढा उपचारक हेतु अपन कामाक्षी पबेल करैत छथि ।)

विशालाक्षी - सहि ! धैर्य धरू, धैर्य धरू ।

२२-मन - क ॥ २३-इहे । २४-४ - ४ - ४ । २५-सा स्वयम् ।

२६-X । २७- (इत्थं सँ पूरा गीतो विशालाक्षीक उक्तिक भाव अछि) - क ख ।

विशालाक्षी— (विह्वल) सहि ! मां पुच्छसि ? तुमं पि किं ण जानसि ?
[सखि ! मां पुच्छसि ? स्वयं किं न जानासि ?]

राधिका— (गीतेन -- २०)

सीतल भेल^{१०} सभे आनि ।

साजनि ! एक जिव हुमरहि लागि ॥

सबहु^{११} छाडलि निअ रीति ।

साजनि ! आवे अधिक भेल भीति ॥

सजल नखिन दल सेज ।

साजनि ! बरए विरह बहुतेज ॥

चा दने चौपुन धाधि ।

साजनि ! बड़ मन्द विरह वेआधि ॥

आवे की करव परकार ।

साजनि ! हृदयक हार अंगार ॥

राखल नेह गुकाए ।

साजनि ! से आवे विरहे^{१२} वेकसाए ॥

नन्दीपति अन गीत ।

साजनि ! ^{१३}कुदिवसे^{१४} केअओ न हीत ॥

(इति मुच्छति ।)

समाश्वसिहि !]

राधिका— सहि ! बिसालविल ! असु बुवलस किमोवधं जानसि ? [सखि
विशालाक्ष ! अस्य दुःखस्य किमोपधं जानासि ?]

राधिका— सखि विशालाक्ष ! एहि दुःखक कोन औपध जनैत छह ?

विशालाक्षी - (हैरि) सखि ! हमरा पुछैत छी ? की अहाँ नहि जनैत छी ?

राधिका— (गीतक द्वारा) — २०

सीतल न छडो वस्तु ! जिव न जीवनका लागि न हेतु । भीति न भय । सजल न जल
राहित । नखिन दल न पुरइनि क पातक ओछाओन । चा दने न चाननही । बाबि न

१० - सभे मे । ११ - कुदिवसे ।

कामाक्षी—देवी ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि । [देवि ! समाश्वसिहि,
समाश्वसिहि ।]

राधिका— (ससंभ्रम नेपथ्याभिमुखमवलोक्य गीतेन) --- २१

कत उदवेग कहब तोहि, सजनि मे ।

आब उचित एह थिक मोहि ॥

^{१०}दरवरि प्राण उपेखिअ, सजनि मे ।

^{११}पुनु न पुख-मुह देखिअ ॥

बाड़ उपर कए^{१२} हे इते^{१३}, सजनि मे ।

^{१४}लाजे रहइ^{१५} हम ^{१६}मरइते^{१७} ॥

पिआक पेअसि भए आवे ^{१८}पुनु, सजनि मे ।

^{१९}केओ अभिमान कए जनु ॥

आवे हम ककर विलासिनि, सजनि मे !

केओ जनु बोल^{२०} बहुआसिनि ॥

नन्दीपति कह निरगय सजनि मे !

^{२१}कारिअ पुरुष कण्ठमय ॥

जवाला । बैआधि न व्याधि । परकार = उपपन्न । हाय अंगार = भीतीक
नाला अक्षोरा नन लगैत । नेह - स्नेह । वेकसाए - व्यक्त होइछ । कुदिवसे =
अधलाह दिन भेला पर ॥ (ई कहि एच्छित होइत छनि ।)

कामाक्षी—देवी ! धैर्य धरु धैर्य धरु ।

राधिका— (हृदयकाय नेपथ्य दिग देखि गीतक द्वारा) --- २१

दरवरि - शीघ्र । उपेखिअ - उपेक्षा करिअ, त्यागिअ । पेअसि -
प्रेमसी, प्रेमिका । अभिमान - गर्व । बहुआसिनि - बधूरी, बधू

कहि सम्बोधन । निरगय - निर्णय । कण्ठमय - वक्त्रका छली ।

१० - आव बस । ११ - कोरि । १२ - हेरइति । १३ - लगैतो । १४ - X ।

१५ - मरइति । १६ - आव पुनु । १७ - बयो । १८ - कह । १९ - कारि पुरुष ।

कामाक्षी— (गीत में)—२२

साजनि^१ ! आवे जचित नहि मान ॥४७॥

एखनुकि^२ रीति हूँ झोहन देखै छिज^३ जायल पजो^४ पंचवान ॥
^१कुसुम-रचित सेज ^२दी। विवसि देखि, बिर नहि रहए गेआन ।
 सबनुक धरज धरम न पाविसि मुनि मुनि निक निका नान ।
 जूझि ^३रयति शकमक पर चौबसि^४, एहन समय तहि आन ।
 एहन समय पड़-मिलन जेहन थिक^५ जकरहि होअ^६ से जान ।
^७जिवसि तरङ्ग शिवासि सङ्ग-उरअं शम्भु निरमान ।
 आरति पहु परतिवह^८ मंगइछ, कह धनि सरबसु^९ दान ।
^{१०}कुसुमे कुसुमे कलि विलसि विलसि अलि करए अधर मधु-पान ।
 अपन अपन पहु सबहु बेगाओल, भुखल सोर जजमान^{११} ॥
 "हम कि कहव सखि ! तोहें कमलमुखि, अगहि कह समधान ।
 सज्जित मदन-वेदन अतिदाहन, मंजीवति कवि भात ॥

कामाक्षी—

(गीत में)—२२

पंचवान—कामदेव । कुसुम-रचित—फूलक बसाओल । सेज
 —झोछाओन पर । विवसि—प्रकाशित होइत । गेआन—जान ।
 पिक—कोइलीक । जूझि रयति—जड़क राति । जिवसि-तरङ्ग—
 वेहक रेखाक्षी रहारि । शिवासि—संजरे ओ फारीक (रोमान-
 वाली नारी ओ पैदक नाम सबछ) । उरअं=स्तनकली शिवालङ्क निर्माण
 भेल अछि । आरति=आर्ति, विकलता सँ । पहु=स्वामी । परतिवह=
 विधिपूर्वक दान स्वीकार । सरबसु=सर्वस्व । कुसुमे=प्रति फूलक कली
 पर । विलसि=विलास कय । अलि=अँरा । अधर मधुपान=दोर रूपी

४० - X । ४१ क । ४२ छी । ४३ - ५ । ४४ - कुसुमा । ४५ - वीपक
 देखि । ४६ - रनि । ४७ - चानिति । ४८ - मिलन जेहने मुख - क' । ४९ - हो ।
 ५० - X (दू पांतीक अनाम) - क' । ५१ - प्रतिवह । ५२ - सर्वस्व । ५३ - कुसुम
 कुसुम कल विलसि विलसिनि अलि मालति कह मधुपान । ५४ - भेजमान ।
 ५५ - X (एतय सँ दोहा संख्या अठतीस धरिक अनाम) क' ।

राधिका—विशालाक्षी ! मां जिअइ कि पयओअ^१ अहका तस्य कि कज^२ ?
 [विशालाक्षि ! मां जीवितेन कि प्रयोजनम् ? अथवा तस्य कि
 कार्यम् ?]

विशालाक्षी—सहि ! सत्ये भणसि । [सखि ! सत्ये भणसि ।]

राधिका—तयो कि भणसि ! [तय कि भणसि ?]

विशालाक्षी^३—(दोहा)—

कहवा कह पनियेद सखि । हमहुं बुखल सोर सार ।

जनि क गियाओ तोहि पुनि, अपनहि छवि ऐनिहार ॥४८॥

राधिका—(विह्वल ह्रिपदेन^४)—

साजनि ! ओ हसे अरि नहि, दुर गेल दुख गेल आन ।

हमरा हुनकर^५ कोज नहि, जाओ कि रहओ परान ॥४९॥

ओ सिचह सापत तेल लए, तोहरो बुखल गिरोति ।

मुइला के कोओ मार नहि, इ अलि जगत भरि रीति ॥५०॥

केओ जनि आवह मोर लग, एहन होएत किए आज ।

हमरे मुइने कोन छति, के अलि ककरा लाज ॥५१॥

मनुक पान करैछ । बेगाओल=सोअओलक । जजमान=आश्चर्यप्रता ।

सज्जित=जमा कयल । मदन-वेदन=कामधमना ।

राधिका - विशालाक्षी ! हमरा जीवन में कोन काज ? अथवा हुनका कोन
 काज ?

विशालाक्षी—तयी ! सत्ये कहैत छी

राधिका—सखने ओ कहैत छह ?

विशालाक्षी—कहवा=कथन, उ-स । परिचयेद=अवधि, विराम । सार=

गुड़ अभिप्राय । गियाओ=उत्कण्ठित ॥४८॥

राधिका—(हंसि दोहाक द्वारा)—ओ—कृपा, हमे अरि—हमरे शत्रु । आन=

अन्त अनावसीन ॥४९॥ सिचह=सिञ्चन करैत छह । सापत=

१-प्रयोजन । २-कार्य । ३-सत्य । ४-X । ५-X ।

११—ह्रिपदेन दोहा । १२—हुनक ।

सुख लए सब केओ प्रीति कर, जगभरि के नहि जान ।
 यदि जीवा सुखते^१ हुनहि, सकरहु मरण निदान ॥३१॥
 (ततः प्रविशति श्रीकृष्णः । श्रीकृष्णो राधिका-चरणतले उद्विषति ।
 तदाऽड्डास्थिता प्रिया कुञ्जिवागमहस्तस्मापारेण निवारिता ।)
 विशालाक्षी—(निकट गत्वा लीचनवत्कारेण विज्ञापयति) राधिके ! चरणतले
 श्रीकृष्णरितपठति ।

राधिका—(सखरमुपविष्य तस्वयाम्मार्जितं कृत्वा ब्रामह्मस्तेन पटोत्सारणं
 कृतवती ।)

विशालाक्षी १३—(दोहा)—

लज्जे^२ सकुच मुख चोर जकी, बिरह^३ वेअकुल देह ।
 आज तेजत तोर प्राण पहु, एति मिल मिलन सन्देह ॥३४॥

राधा—(दोहा १४)—

एहि सब कहने सबक नहि, हृदय जरल अछि मोर ।
 पुष्टक परिचय देल मोहि, प्रेम कहल हम तोर ॥३५॥
 १०पेअसि बिरह जे प्राण तेजि, से अछि जग केओ आन ।
 कपटी क^४ कहइत सुकर, करइत कठिन निदान ॥३६॥

तप्त ॥३१॥ जनि—नहि ॥३२॥ जीवा सुखते—सुख सँ जीवाक छति
 मरण निदान—हृमर मुख कारण धिक ॥३३॥

(सकर बाद श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि । ओ राधाक पए लग बैसैत छथि
 तखन कनेक उठलि त्रियाके मोड़ल वाम हाथक द्वारा से ऊठव सँ मना कय-
 लनि ।)

विशालाक्षी—(लग जाय दृष्टिये^५ कृष्णक सकार करैत कहैत छथि) राधिके !
 पए लग श्रीकृष्ण छवि ।

राधिका—हृदय बेसि कपड़ा सरियाय वामाहाये^६ घोष ससारलनि ।)

विशालाक्षी—सकुच—सकुचित होइछ । तेजत तोर प्राण पहु—तेह्य पति
 प्राण त्यागधुहु ॥३५॥

राधा—सबक—साधक, काण । पुष्टक—कृष्ण अपन ॥३६॥

१३—० । १४—उक्त दोहा । १५—विशति ।

ई मग जामि अबहु तहु, हमहु न^७ हुनेकर नारि ।

१०जकरा कन्हते^८ साठिन नहि, से कर काज विचारि ॥३७॥

श्रीकृष्ण—(ब्रह्माञ्जलि १६) प्रिये ! प्रसीद । १०क्षम्यतामयमेकोऽपराधः ।
 राधिका—(संकोषं गीतेन)—२३

आब की पेअसि^९ कहै छथि, सजनि मे !

कोने लाजे मुह^{१०} अबवे^{११} छथि ॥

कथिलए एतथ^{१२} अबे छथि, सजनि मे ।

देखल नहि सोहव^{१३} छथि ॥

१०साक्षी सभके^{१४} रखै छथि, सजनि मे ।

हमै नहि काहु बजबे^{१५} छथि ॥

१०पुष्टक-प्रीति रिति^{१६} छन पर, सजनि मे !

१०दरवरि जायु अपन घर ॥

अपनहि अपन कटि^{१७} सर सजनि मे !

से जग^{१८} फिए^{१९} करुणा कर ॥

मन्वीपति सुनु मोरा^{२०} पहि, सजनि मे !

२०घोहरहु एतथ^{२१} कारण नहि ॥

पेअसि बिरह—प्रेमिकाक विशेष मे । सुकर—सुलभ, आसान ।
 निदान—उपाय ॥३३॥

तहु—हुनका एहन जानि । साठ—सार्ध, प्रतीकार ॥३४॥

श्रीकृष्ण—(कर जोड़ि) प्रिये ! प्रसन्न होइ । एकटा एहि अपराधके^{१०} क्षमा कहु ।

राधिका—

[कोषपूर्वक गीतसँ]—२३

पेअसि—प्रेयसी, प्रेमिका । मोहवै छथि—भीक लगैत छथि । साक्षी
 —साक्षी, गवाही । दरवरि—धीध्र । पहि—पादवै, लग ॥

१६—० । १७—(एहि सँ पूर्व गीत सँ—२२क अन्तिम दू पांती धरि 'क' पोथी
 मे नहि अछि ।) १८ कन्हते^८ साठिन । १९—ब्रह्माञ्जलि—क ख २०—क्षम्यतां
 मम कोऽपराधो । २१ विशति । क ख । २२—मुह देखै । २३—सोहाइ २४—० ।
 (दू पांतीक अन्त्य) । ख । २५—पुष्टक गीत रीति । २६—फेरि बर । २७—नाह ।
 २८—से की जाय । २९—घोर पाही । ३०—सोरहु । ३१—एत काल धिनही ।

(इति निष्कान्ता सख्या समम् ।)

श्रीकृष्णः - प्रिये वर्तते वाचस्पति सा रीतिः ?

[ततो गतिते]--२४

हरि हरि । मलिन^{३२} विलासिनि, जगभरि^{३३} कैओ जनु देख ।^{३२}देखति विरहे विष-भोजन, एति^{३३} तिल भरि ते विशेष ॥बैगलि रह, उठि अनुसर, समुख^{३४} होइत मुख फेरि ।एहिह^{३५} कोन पराभव, पलवि पाछु नहि हेरि ॥

भल मन्द एकओ ते बाजए, उकुतिहि विरह बुझाव ।

मोर बेल जव जत^{३६} अभरत, परिहरि मोरहि देखाव ॥

जे मोर करए सीम पन, तकरहु सौ नहि बाज ।

ता सओ^{३७} होएत समागम, ई अछि^{३८} कठिन बड़ आज ॥

तन्वीपति कहु तखनुक, शिव शिव ॥ हमर निहोर ।

देखति मेअसि कहइत, जाइछ आब जिव मोर ॥

(ततः प्रविशति^{३९} सख्या समं राधा)

(सखीक संग बहार भय मोल ।)

श्रीकृष्ण - प्रिये की एखनहु सएह रीति अछि ?

[गत सौ]--२४

मलिन विलासिनि - अगन कामिनीके दुःखी । तिल भरि - धोड़वो

कालक हेतु । विशेष - कोनो नव बात, परिवर्तन । बैगलि रह -

'बैगु' ई कहला पर उठि विदा भय जाइछ । समुख = सोझा । फेरि -

घुड़ाय लेत छवि । एहिह - एहि सौ अधिक । पराभव - दुःख ।

भल मन्द - नीक-बेआय । उकुतिहि - दलिये सौ । अभरत - सहन ।

परिहरि - त्यागि । मोरहि - हमरहि ॥

(नखन सखीक संग राधा प्रवेश करैत छवि ।)

३२ - ख खोसा इति । ३३ - मलिन । ३४ - जग भैओ जर जनु - क । ३५ -

पियसि विरह । ३६ - एति तिल भरि - क । ३७ - पुछुनि । ३८ - कह - क । ३९ -

रत मत - क ख । ४० - लो । ४१ - अछ - क ; अछि कठिन पुनु - ख । ४२ - पति-

असि श्रीकृष्ण । ('तखना सम राधा' ई कोनहु मे नहि अछि ।)

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! अतः परं को विचर ?

विशालाक्षी - देइ ! देओ^{४०} पुच्छइ । [देवि ! देवः पृच्छति ।]राधा - (सखीक^{४१} द्विपदेन) -शौतल होअ जयो^{४२} सहकर, सखि^{४३} शौतलता तेज ।तेअओ ते हुनि हम आव सखि ! एक राग एक^{४४} तेज ॥३९॥

श्रीकृष्णः - विशालाक्षि ! भयनु, भयनु । सलब-सुता नियमस्य निर्वाह करोतु ।

(इति निष्क तः)

(वोहा) -

^{४०}तखनि विचारिए^{४१} हरि बुझाव, राधा कएल बड़ मान ।

सत्वर एहां सौ निकसि पछिअ, अपनहि जाइति निदान ॥४०॥

उपटल^{४२} एक पुलवाटिका, कहु अछ^{४३} ओहि गाय ।भटवय से हरि तए मए^{४४} सुनि रहल ओहिठाम ॥४१॥

००

००

००

(तयो^{४५} बापकरेण वयनाच्छादनमुत्पाप्य^{४६} अर्द्धोर्ध्वसञ्चरित -
वक्षिणकराग्रेण मञ्जीरानाह्वानं^{४७} कृतमेव ।)

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! एकर बाद की विचार अछि ?

विशालाक्षी - देवि ! श्रीकृष्ण पुछैत छवि ।

राधा - (कोवपूर्वक वोहा सौ) - सहकर - पूर्व । सखि - चन्द्रमा । शौतलता

ठंडइ । तेज - जोड़ि देव । हुनि - हुनक । श्रीकृष्णक । तेज - ओछाबोन

पत्र ॥३६॥

श्रीकृष्ण - विशालाक्षि ! बेस बेस । गोपपुत्री अपन नियमक निर्वाह करतु ।

(बहार भय मोलाह ।)

हरि - कृष्ण । सत्वर - सीध । निकसि - निकलि । निदान -

उपाय ॥४०॥

उपटल - उजड़ल । मए - जाय ॥४१॥

४० - एतओ क । ४१ - द्विपदेन वोहा । ४२ - ० । ४३ - सखि हो पाएक ।

४४ - तेज । ४५ - ०० (वृ पतिवैक अभाव) - क । ४६ - ० । ४७ - उकटल - क ।

४८ - छल । ४९ - गेल । ५० - सख । ५१ - वयनाच्छादनमुत्पाप्य । ५२ - सजीव-

विशालाक्षी—देह ! किं भणसि ? [देवि ! किं भणसि ?]

राधिका—(बोहो)~

सुन्दर आसन हूँ देखि, अति आकुल मन मोर ।
कतय गेल छवि की करप; मन ठरे अछि नीर ॥४२॥
भल भल सजनि ! चिन्हल तोहि, तोहरे ई परिपक्व ।
५५ जो जन अह्न अधोन रह, से की अनि के वञ्च ॥४३॥

विशालाक्षी * (बोहो)

बड़ कटीन हमे ५५ पड़ल छिअ; एकहु न जीवक बाट ।
५५ तखने सोहें पाहन ५५ भेलिह, आव भेलिह तोहें पाट ॥४४॥
५५ जाह जाह जौ ई कहिअ, लमलहु जनि तोहि भूत ।
दूटल वचन कि ५५ पुरुष सह, केहनो होए कपूत ॥४५॥
(इति सर्वे निष्क्रान्ताः अन्वेष्टाय श्रीकृष्णस्य ।)

(ततः प्रविशति विशालाक्षी)

विशालाक्षी—(बोहो)~

कतए कतए नहि जोहल ५५ छिअ, कतहु न मिललाह मोहि ।
पुरुष मन बड़ कठिन सखि ! किदहु करस हुनि ५५ कोहि ॥४६॥

(जो राधा वामा हाथें धोए उठाय आधा ऊपर उठल रहिना हाथक अप्र-
भान सौ सखी सबकेँ सोर कयलनि ।)

(उत्तम विशालाक्षी प्रवेश करै छवि ।)

विशालाक्षी - देवि ! की बहैन छी ?

राधिका - सुपहुक - सुन्दर स्वामीक ॥४७॥

भल - नीक जकाँ । परिपक्व - चालि विकहु । वञ्च - ठकत ॥४८॥

विशालाक्षी - पाहन - पाथर । पाट - रेशम ॥४९॥

कहिअ - कहवाये ॥५०॥

(तमकेओ कृष्णक खोज मे बहार भय गेल ।)

(उत्तम विशालाक्षी प्रवेश करै छवि ।)

नाहता । ५६ - ये जन घर । ५७ - ० । ५८ - सखनि । ५९ - पाहुन
भेलिह । ६० - जाह जाह जौ करि कहव । ६१ - की । ६२ - कतय कतय
नहि बोहल । ६३ - हन ।

राधिका—(जहें गेन निदामाँ सुखोरिधता गौतेन ५५)~५५

५५ के जन कथोनि बोले तेजलहि हमरा ५५ ।

पर रे रमनि रस लुधुधल मनरा ५५ ॥

मिज कर परस ५५ परस मिज देहा ।

५५ निन्दक भरम भेल पिआक सन्देहा ॥

तेहि अवसर हम उठलिहु ५५ जानी ।

हरि हरि ! भेलहु परस दुखभागी ५५ ॥

हेरि हेरि पीन पयोधर भारे ।

कत दिन तेजव तयन जलधारे ॥

उपवन उपगत दछिन ५५ समीरे ।

किदहु करत ५५ पुनु परसि वारीरे ॥

मन छल सुपहु होएत सुखदाता

मन परिचय, नव विरह विधाता ॥

जकर रमनि हम, कहिअहु ५५ ताही ।

देखलि तोहरि धनि विकल वताही ॥

नन्दीपति ५५ धिक्जोन सन्देहा ।

५५ भेह विरह हो तेहन सिनेहा ॥

विशालाक्षी—जाहल - जाकल । पुरुष मान - पुरुषक मान करव, खसब ॥५१॥

राधिका—(विकलता सौ सींग मे चुत्तिकेँ छटलि सीत सँ)~५५

पर रे रमनि - बीसराक स्त्रीक किछक मे आसक्त भौरा । मिजकर

परस - आन हाथक स्पर्श सँ आन भेहक स्पर्श भेल । निन्दक भरम

- नीमक सन्देह । पिआक - ताहि मे विषयमक । पीन पयोधर -

पुष्ट स्तन । उपगत - आगत । दछिन - समीरे - देखिनाही वनात । पर-

सि - छवि । विरह विधाता - विषमोद देनिहार । इ धिक्जोन -

ई शिकति ।

५४ - तम गौतेन कथयति - क ख । ५५ - की जनि । ५६ - भोरा क ख । ५७ - बहुरा ।

५८ - परति (प्राप्ति क्षमिहता) । ५९ - निन्दक । ६० - जायि - क ख । ६१ - भागि

- क ख । ६२ - दछिन - क ख । ६३ - होएत पुद । ६४ - कहिअ - क ख ।

६५ - कह लखनक चेहा । ६६ - बहैन ।

(बोहा) —

अति उत्कण्ठा मिलन लाइ, बाबूल^{१०} मदन विकार ।
सखी पडाओल राधिका, वैकत भेल सब भार^{११} ॥४७॥
पड़ल हमर अपराध^{१२} बड़^{१३} नारि सीध-मति भोरि^{१४} ।
पुरुष महाशय सकल सह, यिनति करबि कल जोड़ि ॥४८॥
‘एज वग हुनसखी’ भेट नहि, तावत रखिअह गोए ।
रो कश्जिह^{१५} सखर सखी, जिइइते परसन होए ॥४९॥

(ततः प्रविशति विशालाक्षी)

विशालाक्षी (श्रीकृष्णस्य निकटं गत्वा गीतेन) — २९

माधव ! भल मे कहत केहो तोही^{१६} ।
ते^{१७} भोरि^{१८} पिअसि ठाओलि मोही ॥
तोहें नहि रोहन अकर होए हँसी^{१९} ।
‘मुपुन पुरुष ते^{२०} बिसर पेअसी ॥
राधा-कन्या सुनि ओहिठाम ।
गलओ ने^{२१} पधिक करए विश्राम ॥
तौर नयन, मुख ‘हनि हरि हरी ।
‘अधिरि अपरसि जनि भेटलि पुतरी ॥

(बोहा) — मदन विकार — का-वासना । वैकत — व्यक्त ॥४७॥

भोरि — अजानी । महाशय — उदार ॥४८॥

गोए — गुप्त । सखर — शीघ्र ॥४९॥

(तत्तन विशालाक्षी प्रवेश करैत छथि ।)

विशालाक्षी — (श्रीकृष्णक लग जाय गीतसी) — २९

भल — नीक । पिअसि — प्रेयसी । राधा-कन्या — राधाक दुख ।
पलओ — पलोभरिक हेतु । अधिरि अपरसि — अहुरायल अयना

७७ — किं । ७८ — नाह । ७९ — हुने + का + को — भोरि । ८० — परवत । ८१ —
हह । ८२ — तोहि — का । ८३ — ते तोहि ओतए पिअसि पडाओलि मोहि । ८४ —
हसि क, हसी — ख । ८५ — पुरुष पुरुष — क । ८६ — पए । ८७ — वस ले पधिक
८८ — हरिहरी । ८९ — आव अपरसि ।

सामहुँ आधे नहि कसति राधे ।

मुपुन छेमिए^{२२} बलि अपराध ॥

तयोपति कश्चि कह पंगाने ।

पाछिल सन^{२३} मोहि कैओ जनु^{२४} जाने ॥

(ततः श्लोकः)

श्रीकृष्णः^{२५} — न सा राधा, न सा सीतिः । मोहि सम्प्रति मो^{२६} हरिः ।

पुनश्चेदं विशालाक्षि ! अयि । वा नद, मा नद ॥५०॥

विशालाक्षी — (बोहा)

नहि कहने परकार नहि, रोवहि पए^{२७} पुनु आज ।नारि भारि कए^{२८} कओल जल, कहदहुँ^{२९} कबरा लाज ॥५१॥

श्रीकृष्णः — (सक्रोधं) विशालाक्षि ! मां जानासि, तथापि दुराग्रह न स्थजसि ।

(विशालाक्षी निष्क्रान्ता)

राधिका — विशालाक्षि ! सहि ! ‘‘अदो कवयो ? [विशालाक्षि सखि ! गतः
कृष्णः ?] (इति मूर्च्छति । ततः ससंज्ञं गीतेन) —

मे । पाछिल — पहिलुका नग, रोहन पहिने कठोर छदहुँ ॥

(तत्तन श्लोकः)

श्रीकृष्ण — एवन मे ओ राधा छथि, मे ओ प्रेम अछि आ मे हमही ओ श्रीकृष्ण
छी । हे विशालाक्षी ! आव फेर जनु बाजू, जनु बाजू ॥५२॥

विशालाक्षी — परकार — तरीका, उपाय । कहदहुँ — कोन ॥५०॥

श्रीकृष्ण — (काय सहित) विशालाक्षी ! हमरा जगत छह, तेवो दुराग्रह नहि
छोड़ैत छह ।

(विशालाक्षी बहार भय गेलि ।)

राधिका — विशालाक्षी ! सखि ! बल गेलाह कृष्ण ? (मूर्च्छित होइत छथि ।)

५१ — पै छेमिए अपराधे । ५२ — सर । ५३ — जनि ।

५४ — न । ५५ — ओतए । ५६ — कय कोन — कख । ५७ — कीबहु । ५८ —

(एतय ही ‘मूर्च्छति’ तक अयना) । ५९ — ततो राधा ।

परदेश गेल बहुत परिहरि ।
 काहि कहव दुख हरि हरि ॥
 सुपहु आनि हमे भजलिहु ।
 कोपहु कहे नहि भजलिहु ॥
 सुमरि सगल सन्धिकर ।
 अहनिमि नीर नयन बरे ॥
 मिअरहु धन मौर नगर ।
 आतर अछि जनि सगर ॥
 आन करै भेल जाने ।
 बुझल ने पुरुषक माने ॥
 केओ जनु बोल मर मारव ।
 भवितव छल बहु साधव ।
 नदीनि कह अनुभव ।
 सबतहु दुख मनोभव ॥
 (इति मूर्च्छति ।)

कनेक बालक बाद होसने आनि गीतक द्वारा) — गीतसं० - २७
 परिहरि - छोड़ि हरि हरि - हाय हाय ॥ भजलिहु - वरण कयल
 कोपहु - कोपहु ही । कहे - अभिय कथा । सुमरि - स्मरण कय ।
 अहनिमि - विनराति । मिअरहु - निकटहु । नगर - कुशल नाथक ।
 आतर - अंतर, दूरी । सगर - समुद्रक । आन - करम कमलहु
 कोनो काज आ भेल कोनो दोसरे । माने - अभिमान । मर मारव
 - कृष्ण अवलोक छथि । भवितव - भावी । साधव - सनाएथ ।
 सबतहु - सबस अधिक । मनोभव - काम ॥
 (सुनिहत होइत छथि)

१ - बिरह उठत मोहि घरी घरी (बोतर चरकक रूपमे) । २ - हुन भजलिहु ।
 ४ - कहक दू - क । ५ - भजलिहु - क ख । ६ - तेहिकर ।
 ७ - करैत हमे भेल । ८ - बुझल कठिन ने - क ख ।

विशालाक्षी - सेमास्यसिद्धि । [समाश्वसिद्धि ।]

राधिका - (संज्ञ) - (दोहा) -

सुपहुक १० कहने कएल नहि, बड़ कए बड़ाओल सोक ११ ।
 से आये अपनहि चलल छिअ, कि कहत गामक लोक ॥ १२ ॥
 (इति निष्कास्त ।)

(दोहा) -

राधा अवगत देखिकहु, कएल मलिन मुख-कांति ।

सूति रहल हरि काछिकहु, बुढ़ बिस दोपटा जाति ॥ १५ ॥

राधा - (श्रीकृष्णनिः ।) गस्वा बदनाच्छादनं विमुच्य १२ सगद्गदाक्षरं

गीतेन कथयति । [गीतसं० - २८]

साधव ! मोर निहोरी १३ ।

कोपहु बाजहर ४ मोहि हेरि एक बेरी ॥

ने कर सुजन मुख बाधे ।

ज अनुगत कर अत अपराधे ॥

१५ ज जोहन पवन १६ उवाही ।

सुरभि सुरभि नहि वह ताहि १७ छाडी १८ ॥

विशालाक्षी - वैद्य छल ।

राधिका - (होश मे अथि) सुपहुक - विपतमक । सोक - दुख वा सोख, मनो-
 रथ ॥ १२ ॥

(बाहर भय नलि ।)

(दोहा) - राधा - राधाके । मुखकांति - श्रीकृष्ण मुहक कांति दुखी बनय
 छल । हरि - कृष्ण ॥ १५ ॥

राधा - (श्रीकृष्णक लग आय हुनक मुह पर सँ बस्व हठाय बिल्लल स्वद मे
 गीतक द्वारा कहैत छथि ।) - गीतसं० - २८

निहोरी - पार्थना । कोपहु - तथगाइयो कय । हेरि - देखि । सुजन -

८ - १० । १० - सुपहु कहने । ११ - सोक । १२ - विमुच्य । १३ - बिस हेरी -
 क । १४ - बाजहर एक बेरी । १५ - जो जोहन । १६ - उवाही - क । अपकारी
 - क । १७ - रहता । १८ - छाती - क ।

१६वेचलहु मानिक मोती ।

१७भए गर परित अधिक बेह जोती ॥

नन्दीपति कवि माने ।

मुपुख निधुर नर २१ रहए निदाने ॥

(अवि ४ । गीतसं०-२२)

मोर मुइल मुख २२ देखिअ ।

२३जओ मोहि आवे २४ उपेखिअ ॥

२५हमरहि के लात मारिअ ।

२६जओ किछु २७ आन बिचारिअ ॥

२८आवे जओ खलि रहीअ ।

पहु हमारहि लए करीअ ॥

२९हमरहि विधुर नहाइ ।

३०जओ मोर देल कहि खाइ ॥

नन्दीपति एह मुनइत ।

आग उठल पहु हसइत ॥

नीकलोक। मुख-बाँधो - मुख में बांधा। अनुगत - शरणागतव्यक्ति। सत - सँकड़ो। पवन - वायु। उपाड़ी - गाछके उपाड़निहार, उपद्रावी। सुरभि - बसरतमें। सुरनि - सुगन्धि के। बेचलहु - छोड़ो कयला पर। मानिक - मणि। गर परित - गरा में पवि। मुपुख - उत्तम। नर - निदाने - निर्णीत अछि ॥

(आओरो । गीत सं०-२२)

मोर - हमर। उपेखिअ - उपेक्षा करी। पहु - पति। हमरहि - विधुर - हमर मुइल पर पत्नीहीन भय ।

१६ - बेचलहु। २० - लओ तकर अधिक हो। २१ - निठुर रहै। २२ - मुख-क। २३ - जओ। २४ - आवे। २५ - हमरहि शोणित नहाइअ। २६ - जओ। २७ - एहि - क। २८ - × × (दू वांतीक अनाथ)। २९ - ० (स्वान रिक्त)। ३० - हमर देल।

श्रीकृष्णः—(लोचने उभेल्य राधिका - मुखमवलोक्य) —

(दोहा १) —

“पिअसि ३१-विरह जे प्राण तेज से जन अछि केओ जान ३२ ।

कपटी काँ कहइते ३४ मुहर, करइते कठिन निदान” ॥१३॥

(अंक—३, दोहा—१७)

३३“जत जत तोहे घनि ! कहल छल ३४तत तत भेल परमान ।

जओ हमे विवितहि आवे छिअ, किछु ३५ नहि तसु समधान ॥१४॥

हमरा ओ पितौत विधि, अहँकाँ सहोदर भाय ।

३६तोहे तु ओहीकाँ पक्ष सबे, हमरा केओ न सहाय ॥१५॥

३७तारा काँ नहि वास को, राहु गरासल ४०चान्द ।

तकरहि मारथि जानि यम, जकरहि लाइ सबे कान्द ४१ ॥१६॥

जकवा अछि संसार मुख, तकरा जीवक काज ।

हमरे जिवने कोन फल मरण उचित थिक आज, ॥१७॥

श्रीकृष्ण - (आजि सोकि राधाक मुँह देखि) पिअसि विरह - प्रेमिकाका

विरहमें। कपटीकाँ - धोखेबाज के। निदान - उपाय ॥१३॥

परमान - प्रमाणित। तसु - ओहि बात सभक। समधान - समाधान,

उत्तर ॥१४॥ विवितौत विधि - विधवा वा भान्य प्रतिकूल अछि।

सहोदर - अनुकूल। तोहे तु - अहाँ सब अही छी ॥१५॥ तारा -

तरेयन। वास - डर (राहुक प्रसित करवाक भय)। राहु गरासल

- ग्रहणकाल में राहु प्रसित कयल। यम - यमराज। कान्द - कर्नत

अछि ॥१६॥ संसार-मुख - संसारक मुख ॥१७॥

एके करे - राधा अपन एक हाथ सँ। घोषट - घोषके। हरि-

३१-द्विपदेन-क। (एतय 'ख' दोषी में दोहा संख्या १४ दोहरायल अछि।) ३२-

पिअ मिमि। ३३-ने। ३४-रहइते। ३५-यत यत। ३६-०० फ ख।

३७-किछ नहि एहि में सान-क। ३८-तोहे ओ-क। ३९-तारा का नहि

वास कि। ४०-काय।

४२ एक करे घीघट सखारिकहु, दोसरे करे लए पान ।

अति हठे हरिमुख पान दए, कए सुख, करण निदान ॥४८॥

धरि भवि पाँच उठाएकहु, हरिके सुवदनि लेल ।

विरह पराभव दुर गेल, नव कए समिलन भेल ॥४९॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति द्वादश-नामाऽन्वितः महाकवि-नन्दीपति-विरचित

श्रीकृष्णकेलिमालायां राधाकृष्णमतमोचनो

नाम तृतीयोऽङ्कः ॥

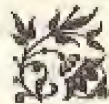
मुख - कृष्णक मुख मे । पान - ताम्बूल । करण निदान - शोक छुट-
वाक उपचार ॥४८॥

सुवदनि - सुमुखी राधा । विरह पराभव - बियोगदुःख । समिलन -
सम्मिलन, समागम ॥४९॥

(संभ केओ बहार भय गेल ।)

इति द्वादश-नामसं युक्त महाकवि नन्दीपतिक वनाश्रित
श्रीकृष्णकेलिमाला मे 'राधाक द्वारा कृष्णक भाग छेड़ाधर'

नामक तेसर अङ्क समाप्त ॥



४२ - एक रे ओ' घट । ४९ - तृतीयः स्कन्धः - क ख ।

अथ चतुर्थोऽङ्कः

(कन्दर्पवितार-माधवी राधादि-विलासकुशलः 'सकल-गोपिकाभिः सह
कतिचन^१ दिवस्वान् विहारं कृत्वा मथुरा-गमनं संचिन्तयति ।)

(अथ दोहा) -

व्रजवासी शान्त्य सकल, अहोनिशि हरिक समाज ।

सगँहु सह गोकुल अधिक, कोटि कोटि सुरराज ॥१॥

समुदासीर कदम्ब वन, बट निकुञ्ज सब ठाम ।

राधा माधव केलि कर, जनि रति^२ - सङ्गे काम ॥२॥

माधव भेल छवि गोपसूत, कारण गोपी - रास ।

बँकुल^३ दुमिल^४ बुझव^५ दिहु एहन विलास ॥३॥

(अथ रास-गीतमाह) - १

समूहणा सजस्त गोपिकाङ्गना कलावती ।

अनेक नायिका, मुरारि एक नायिका - पत्नी ॥

चारिम अङ्क

(कामदेवक अवतार स्वल्प-सुन्दर श्रीकृष्ण राधा आदि गोपीसभक संग
विलास करवा मे गहु नव सभ गोपीक संग कतेक दिन विहार कय मथुरा
नगर जयवाक विचार करै छथि ।)

अहोनिशि - दिनराति । हरिक समाज - कृष्णक सभ । सगँहु सह - स्वगँहु
सँ । सुर राज - देवताक रूप मे शोभित ॥१॥ बट - बड़का नाछ । निकुञ्ज

- लतानुह । रति सङ्गे काम - कामदेव अपन पत्नी रतिक संग ॥२॥

छवि गोपसूत - गोआरक घैटाक रूप कारण कयने छथि । दिहु - निश्चय ॥३॥

(आब रास-गीत कहैत छथि) - १

गोपिकाङ्गना - सुन्दरी गोपी सभ । रती - केलि । कुमुद्वती - कुमुदिनी ।

१ - सकल । २ - कतिदिनसँ । ३ - रतिक । क ख । ४ - दुमिल ।

विचित्र कओन जओन बहुत^५ कृष्ण सी करए रती^६ ।
 कि^७ एक चन्दिनी, अनेक फलितना कुमुद्वती ॥
 प्रभुन हार दए विहार हाव^८ कए बिलासिनो ॥
 विहार कए विमोहनी कतेक हूँच—हासिनी ॥
 कतेक बेरि हाथ जोड़ि जोड़ि बोनती करए ।
 कतेक के वादर्थ कूड़^९ करथि पीडिता तसए ॥
 समच्छ बच्छ राख^{१०} तीरि बधि रज्जु बाहुके^{११} ।
 कतेक देरि चूमि चूमि बाधि^{१२} राधिकानु के^{१३} ॥
 नचाए नगि^{१४} कए कतेक हस्ततालिकादि दए ।
 बाजब माव गोपिका कतेक नरकी भए^{१५} ॥
 कलावती कतेक बीपरीत^{१६} लए बेलाकुलि ।
 हृदय बुझाव, गए लगाव कृष्ण भाल टोकुलि (१४) ॥
 (१५) मुरारि कए बधूक भेष, गोपिका पुरुष कए ।
 अथक ई^{१७} नशक एहि रज्जु रज्जु कलि कए ॥
 नितान्त कान्त विद्वरूप इष्ट भाव^{१८} भावई ।
 'सबुद्धि' कामिनी^{१९} हृदयक हाव राव भगवई ।

प्रभुन हार । कूडक गजरा । हाव — कामजनिन चेष्टा । हस — मनोहर । वदर्थ
 — अकारण, बेकसूर । समच्छ बच्छ — समक्ष में बच्छा के । तीर — सीक । बधि
 रज्जु बाहु के — छोरीरूपी बहि के बड़ाव । बाधि — छेकि वा बांन्हा नगि —
 नाऊटि । हस्ततालिकादि — धपड़ी । बीपरीत लव — विपरीत रतिक हेतु सए —
 जाय । कृष्णभाल — कृष्णक कपार में । मुरारि — कृष्ण । बधूक — स्त्रीक । पुरुष
 कय — पुरुषक रूप धारण कय । नितान्त — अत्यन्त । कान्त — प्रिया विद्वरूप —
 विराट् स्वरूप (श्रीकृष्ण) क । इष्ट भाव — अभिलषित भावनाक रूपमें । भावई
 — ध्यान करैत अछि । हाव — बिलास चेष्टा ॥

५—बहुत । ६—रति-कख । ७—अनेकजो चन्दिनी फलितना-कख ।
 ८—हार-कख । ९—कूड़ भएकय । १०—राखती विचरि रज्जुबाहुके ।
 ११—बाधित बाहुके—कख । १२—नानी । १३—चए । (१४) — बालटीक ;
 मालही-कख । १४—विपरीत । (१५) — मुरारी । १६—तवा करे ।
 १७—० । १८—हृदयक । १९—भावही ।

राधिका—सहे ! रहलजैमि । बिबल्ला कि भणामि । [सहे ! लज्जे ।
 बिबल्ला कि भणामि ?]
 श्रीकृष्ण—प्रिये ! विपीयसीसि मुक्त^{२०} वससा नासि, ततो लज्जेर^{२१} कथम् ?
 मोदसा-गहससंखक^{२२} बरबिलासवती त्वमेका केवल तैव ?

(ततः श्लोकः) —

कत्वा रागबिलासं^{२३} कान्तारादागतो भवन्तम् ।
 गोपीभिः सह देवो बिबल्ल-कामो दामोदरो विजः ॥१॥
 (इति सर्वे निष्क्रान्ताः)

(अथ दोहा)

मानवाहु^{२४} अति पीन डर, हरि हलधर दुहु भाए^{२५} ।
 प्रभुना तीर कदम्ब तर, प्रसिद्धि सरम बिलाए ॥१॥
 कसे कहल ई मुनिकहु^{२६}, केशी अमुर बजाए ।
 हरि हलधर दुहु गता अछि, तकरा मारह जाए ॥२॥

राधिका—प्रिय मित्र ! लज्जाएत छी । ते^{२७} बिबल्ला हम को बाव ?

श्रीकृष्ण—प्रिये ! विषाद करैत छी से उचिते, बल्लभी ते नहि छी, तखन लज्जा-
 इत छी कियेक ? सोलह हजार नायिका मेखे छ बिलासिनी अहाँ
 एकनाथ नहि छी की ?

(तखन श्लोक) —

गोपीसभक संग रास बिलास कय जानवान् बिबल्ल-कामना-बला
 श्रीकृष्ण बग सँ घर अवलाह ॥१॥

(सभ बहार भय गेल ।)

(दोहा) —

मानवाहु^{२८} — मनुष्यो भयके^{२९} । अतिपीन डर — अत्यन्त पुष्ट छातीबला ।
 हरि हलधर — कृष्ण श्री बलराम । सरम — अम, कुसुमी, इष्टदीप्तक
 ॥१॥ के ते अमुर — केशी नामक राक्षसके^{३०} । मत्त — गर्वमुक्त ॥२॥

२०—लज्जसी बरि मो किल्लो — कख । २१—वससासि । २२—
 बलबिलास—कख । २३—कान्ताराजा । २४—मानवाहुति पीन-कख । २५—
 भाई । २६—(एक सँ केवल 'क' गोपीक पाठ थिक) ।

[तरङ्गासुर प्रवेशिका गीतम्]—२

केशी असुर देल परवेश ।

अति बलमन्त भयानक भेष ॥

हिंसि हिंसि लुरे लुरे मेदनि काट ।

मद जल बरिसि पिछवकर बाट ॥

कुदए कुरङ्ग जके दोस उड़ाए ।

जनि विने डोलए चओर फहराए ॥

छो पवन-जित चलबह वान ।

कोपल देखि निरोधल कान ॥

मन्दीपति आवे नहि परकार ।

जखने होएत हरि कुधि असवार ॥

(सतः प्रविशति केशी)

(दोहा)

केशी इ कहल कृष्ण के, आवे कतए तोहे जाह ।

कोपल हरि ! असवार हमे, तरङ्ग समुद्र अवाह ॥१६॥

(केशी दैत्यक प्रवेश करवाक गीत) - २

हिंसि-मारिके हिंसाकय । लुरे-लुरे सौ । मेदनि-मेदिनी, पृथ्वी ।

मदजल-मदा हाथोक कनपट्टी सौ बहैत पानि । बरिसि-बरसाय ।

पिछव-पिछर । कुदङ्ग-हरिण । दोस-दोष, धूलि । विने-

आकाशक बीच मे । चओर-जामर, जमरी मृगक केश । पवनजित-

हवाके जितनिहार, हवी सौ तेज गतिवला वाण । कोपल-कुट भेल

केशी के । निरोधल-रोकल, निवारण कयल । कान-कृष्ण । असे-

वाह-चढ़ल ॥

(तखन केशी प्रवेश करैत अछि ।)

कोपल-कुट भेल हम । तरङ्ग समुद्र अवाह-आह-रहित समुद्रक लहरि स्वरूप हम तरङ्गासुर केशी ॥१६॥

(तरङ्ग-भाषित-साकल्य प्रतिबदति १० हलधरो गीतेन)--३

रे रे अबल ! प्रबल मने बुझसि, निज अन्तिमान पहारे ।

बड़हि पुरुष सञ्जो रोस बड़ावसि, अधम इहो बेवहारे ।

मुख पुरुष सहे जकरधि कामी, तजि तोर एहन बिचारे ।

लघु कए लेलि देखि दुहु बालक, जासि कए परहारे ॥

काल-पुरुष सञ्जो केअओ न पारए, कुकुद बाध सञ्जो हारे ।

मृगपति छोट जइअओ रह तहुखने, करिवर कुम्भ बिदारे ।

जेहने तरङ्ग ! तोहे छह तेहने, जसोदासुत असवारे ।

आज भला घर बेन देलहु अछि, सभे बल होएत बहारे ॥

मन्दीपति कह ई दिन अनिहुह, एहि नहि आव विलम्बे ।

पान गमाए परमपद पओलहु, हरि न कतए अवलम्बे ॥

(दोहा)--

केशी मारल कृष्ण के, कुदि कुदि लाख लछाइ ।

सुअरक कोइने सनल अछि, उपड़ल कतहु पहाइ ? ॥१७॥

(श्रीकृष्णः सकोधं व्यङ्ग्यं गृहीत्वा वारधयं गगने प्रदक्षिणं

रत्ना तरङ्गासुरं भूमी सन्ताडयति । केशी ११....) ।

[अपूर्ण]

(तरङ्गासुरक सकल उत्तिक जयाव बलराम दैन छथि गीतक द्वारा) - ३

अबल-कमजोर । प्रबल मने-अपना मने जोरगर । निज-अपन ।

अन्तिमान पहारे-अहंकार पहारि सक । रोस-दोष । मुख-मुख । लघु-

-छोट । लेलि-लिखा कय । दुहु बालक-बलराम ओ कृष्ण । जासि-जकरा

पर । परहारे-प्रहार । पारए-ऊपर अछि । मृगपति-सिंह । करिवर कुम्भ-

-हाथोक मस्तक के । जसोदासुत-कृष्ण । असवारे-चढ़ाव कयने छथन । घर

बेन-घर अवि नियन्त्रण । परमपद-सद्गति ।

(दोहा)-लाख लछाइ-अनेको बेर मोछड़लक । सुअरक-सुकरक ॥१७॥

(श्रीकृष्णक कोधपूर्वक नाचरि पकड़ि तीन बेर आकाशमे धूम तरङ्गासुरके भूमि पर पटकैत छथि । केशी)

[अपूर्ण]

१७-० (अभाव)-क । १८-प्रबल बुझति-क । १९-एतपत्त आगुक प्रथ अनुपलब्ध अछि ।

परिशिष्ट

नन्दीपतिक स्फुट गीत

नन्दीपतिक स्फुट-गीतिक विविध पाठभेद सहित संकलन डॉ० राम-
देव झा 'नन्दीपति गीतिमाला' नामे मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियास-
राय, दरभङ्गा सँ १९५४ ई० मे सम्पादित कय प्रकाशित करओने छथि । एहि
मे विभिन्न 'गीतसंग्रह' ओ गानिसभक काफीसँ गीत संगृहीत अछि । प्रस्तुत
संग्रह मे उक्त गीतिमालाक सकल गीत उचित-पाठ-ग्रहणपूर्वक पाठसंशोधन कय
लेल गेल अछि । एक गीत (गीतसं०—७) ७-११-१९५२क मिथिलामिहिर
मे प्रकाशित डॉ० वेदनाथ झाक निबन्ध 'गीतकार बादरि' सँ लेल गेल अछि ।
सकल गीतक स्पष्ट ओ शुद्ध रूप प्रस्तुत कइबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

प्रस्तुत संग्रहक संख्या नन्दीपतिगीतिमालाक सं०

१ सँ ६

७

८ सँ ११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

×

१ सँ ६

×

८ सँ ११

७

१२

परिशिष्ट मे०

१० -१

१३

१४

१५

१६

परिशिष्ट मे०

१० -४

१७ सँ २१

—३-११-५२ 'मिहिर' ।

—कुण्डकेलिमाला ।

नन्दीपतिक स्फुट गीत

गौरी पूजा

गीत संख्या-१

गिरिजा पूजय चलु चलु बाला ।
 देधु अभय वर मदन गोपाला ॥
 गोमतीक तट लसु फुलवारी ।
 से फुल तोड़ि राजकुमारी ॥
 बाठिहिं चनान, करपूर तमोर ।
 गौरिहिं दय रुक्मिनि कर जोर ॥
 पूजिअ गिरिजे ! शुभ यश लेहु ।
 जगन्नाथ स्वामी मोहि देहु ॥
 नन्दीपति भन सुनहु सेजानि ।
 देधु अभय वर - तारङ्गपानि ॥

महेश्वानी गीत सं०-२

माला गांधू हे गौरी ।

शिवशङ्कर के पहिरायब, माला गांधू हे गौरी ॥
 नहि घर हम सूत चरखा काटल, नहि बाँटल हम डोरी ।
 पैच उधार कहाँ सँ लायब, नहि घर पास न कौड़ी ॥
 एकसय आठ रुद्र केर माला, सीसे सर्पक डोरी ।
 निर्गुण बान्हू मेँठ इस बान्हल, नागफणा केर भूड़ी ॥
 माला गांधि कमल तैयारी, लय चलु शिवक दुआरी ।
 पारवती-पति शिकथि शिगम्बर, देखि माल मुसकाई ॥

उचिती

गीत सं०-१

बड़ ऊँच हेमत पहाड़ रे । निकसल निरमल धार रे ॥
 तनिकहु गङ्गा नाम रे । जनिक न पाव उपाम रे ॥
 पुरुषक एहने वानि रे । सेवल से हम जानि रे ॥
 से को होथि कठोर रे । तम नहि करथि उजोर रे ॥
 कह कोविद अवधारि रे । सुपुख करथि विचारि रे ॥

गीत सं०-२

हम अवला अजानि रे । शशि सेवल गुण जानि रे ॥
 आज हमर बड़ भाग रे । एहन परसमनि पाव रे ॥
 हम सोँ अनेक कुरीति रे । सुपुरुष ने तेज पिरीति रे ॥
 डेडि बुड़ल मझधार रे । लव जहाज कह पार रे ॥
 सात खण्ड कुसिआर रे । निकसल प्रेम पिआर रे ॥
 कह बादरि अवधारि रे । गुनमन्त जग दुइ-चारि रे ॥

गीत सं०-३

जओँ कर सुजन सिनेह रे । अनुपम पाहुन - नेह रे ॥
 हेमहि मण्डप हेम रे । चानन वन कत नीम रे ॥
 काम कोइली एक भाँति रे । भेम्ह भगर एक काँति रे ॥
 हेम हरदि कत बीच रे । मुनहि चिन्ही उष-नीच रे ॥

मनि कादख लपटाए रे । तैओ न तकर गुन जाए रे ॥
 अलि काँ कुसुम अनेक रे । मालति केँ अलि एक रे ॥
 कह बादरि अवधारि रे । सुपुरुष जन दुइ चारि रे ॥
 गीतसं० - ९
 प्रथम समागम भेल रे । हठहि रहनि ब्रिति गेल रे ॥
 नव तन नव अनुराग रे । विनु परिचय रस जाग रे ॥
 आव ने जिउव विनु कन्त रे । विरहे जीवक अन्त रे ॥
 नन्दीपति कवि भाने रे । सुपुरुष ने करय निदान रे ॥

तिरहुति

गीतसं० - ७

हरि हरि बिलपि विलासिनि रे, लोचन जलधारा ।
 चिकुर तिमिर घन पसरल रे, जनि बिजुलि अकारा ॥
 उरज कुमुद, मुख ह्रिमकरे, रे नहि कर परगासे ।
 निअरहि मदन विधुनुद रे, जनि करत गरासे ॥
 नील-वसने तन बेइल रे, उर मोतिम हारा ।
 सजल जलदे कत झाँपल रे, जगमग कर तारा ॥
 उड़ि उड़ि खस कत योगिनि रे, विधि आजुति जाती ।
 पलक पवन परिपूरल रे, जनि भादव राती ॥
 दामिनि दमकि दमकि हनु रे, हुनि विरहिनि वामा ।
 कह अनुभव कवि बादरि रे, बैरज धरु रामा ॥

गीतसं० - ८

चलनि शयन - घर सुन्दरि रे, आसन अरविन्दा ।
 शिर सँ ससरल घोघट रे, जनि ऊगल चन्दा ॥

चलइत तूपुर कङ्कण रे, दुहु रव एक काले ।
 दुरे सँ हंस - सबद सुनि रे, सुनि बोल मराले ॥
 नाभि - बिबर सँ निकसल रे, रोमावलि - सापे ।
 से सौतिन - बध - कारक रे, आँचर धर क्षपि ॥
 उड़हु न जान चकेवा रे, दुहु कुच उर छाजे ।
 पवन - परस उड़ आँचर रे, जनि झपटल बाजे ॥
 नव परिचय, नव कामिनि रे, भूषण अनुरागे ।
 कह अनुभव कवि बादरि रे, सुनइत सुख लागे ॥

गीतसं० - ९

ना धरु ना धरु हे, कर मोर कन्हाई ।
 हम पर - नागरि हे, तोहेँ यादव - राई ॥
 छोकर पड़ल घर हे, दधि चललहुँ बीकय ।
 बाटहि झगड़ भेल हे, जओँ पलटव नोकय ॥
 मोरस विरस भेल हे, नहि लेल गहिकिनिआ ।
 सासु ननदि घर हे, मोरा कहत कहिनिआ ॥
 सखि अगुआइलि हे, वन माँझ नड़ाई ।
 कि करव कानू हे, हम तोहर बड़ाई ॥
 नन्दीपति कह हे, सुनु कुमर कन्हाई ।
 पार कइए दएह हे, तोरा नन्द - दोहाई ॥

गीतसं० - १०

माधव ! ई नहि उचित विचारे ।
 जनिक एहन धनि, कामकला सनि, से किए कर व्यभिचारे ॥
 प्रानहु ताहि अधिक छलि जे धनि, हवइक हार समाने ।
 कोपरि, आन कजोन विधि ताकिय, कि कहव तनिक रोआने ॥

पड़ल पुरुष भए मुख भेलाह तोहें, सहजहि ई अरविन्दा ।
 से सिनुआरि कुसुम, तेजि सेविय, सहजहि भम्हर मलिन्दा ॥
 कृपन पुरुष काँ केओ ने भल कह, ई अछि जग उपहासे ।
 निश्चा धन अछइत से नहि भोगथि, केवल परहिक आसे ॥
 भनहि नन्दीपति मुनिअ रसिक-जन ! की फल अधिक जनाई ।
 माडि आनिअ वित, तेँ जँ होय नित, अपन करिअ कथलाई ॥

गीतसं - ११

माधव ! एहन दिवस भेल मोरा ।

अपन करम फल हम उपभोगब, ताहि दोष कोन तोरा ॥
 जाहि नगर चानन नहि चीन्हूथि, अडर आदर कए रोये ।
 विनु गुन बुझलें जनिक अनादर, उचित न तापर कोये ॥
 सगुन पुरुष निरगुन निन्दल जौं, जीवन जड़ केँ देला ।
 जौं करमो फुल सबहु सराहिए, तौं कि कमल-गुन गेला ॥
 धल गुन आनठाम परगासल, तौं की तनिक अभेला ।
 निरि दरि ताहि तिमिर रहू, तापर रवि महिमा हिन भेला ? ॥
 जनिक सरस मन, ताहि कहिए गुन, पसु सिसु अबुझ न बूझे ।
 नन्दीपति भन, तौं देखु दरपन, आन्हर काँ की सूझे ॥

गीतसं - १२

सुन्दरि चललि शयन घर ना ।

हँसि हँसि सखि सब कर धर ना ॥

जइतहि लागु परम डर ना ।

ससि जसु काँपयि राहु डर ना ॥

हार टुटिअ छिडिआय गेल ना ।

भूषण बसन लोटाय गेल ना ॥

रोय रोय कजरा दहाय गेल ना ।
 आदंकहि सिन्दुर मेटाय गेल ना ॥
 नन्दीपति^१ कवि गाओल ना ।
 दुख सहि सहि सुख पाओल ना ॥

बटगबनी

गीतसं - १३

चन्द्रवदनि नवि कामिनि सजनी, यामिनि अति अन्हियारि ।
 सखि सङ्ग चललि केलिघर सजनी, करपल्लव दिप बारि ॥
 पवन झकोर जोर बह सजनी, तेँ लेल अञ्चल झाँपि ।
 देखि उरज अति उन्नत सजनी, दीन रासि उठ काँपि ॥
 झपझप कए कत काँपय सजनी, बिलखि धुनए निज माथ ।
 कथिलए जनम देल मोर सजनी, चतुरानन विनु हाथ ॥
 नन्दीपति कवि गाओल सजनी, ई जग थीक कुमान ।
 परस उरज अतिमुन्दर सजनी, माधव सिंह रस जान ॥

गीतसं - १४

एक हम नागरि बैसै सजनी गे, दोसर पिया परदेस ।
 मोर मन बिकल दहोदिस सजनी गे, केओ नहि कहय उदेस ॥
 अहोनिष पहुपथ हेरि हेरि सजनी गे, चौदिस लागु अन्धार ।
 विरह वेदन तन परसल सजनी गे, नयन बहय जलधार ॥
 कोकिल मोर सोर मुनि सजनी गे, मन मन करिअ विचार ।
 पाओस सकल निराएल सजनी गे, सरद कएन उपचार ॥

१ - 'बुद्धिनाथ' वा 'बुद्धिलाळ' - पाठान्तर ।

ज्ञान-किरण सैं निकसल सजनी गे, मारु मदन समधानि ।
नागर नेह तेजल किए सजनी गे, पाव पराभव पानि ॥
नन्दीपति भन सुनु जग सजनी गे, पड़ि भय करि अनुमान ।
एहि सो भूप दोअर नहि सजनी गे, माधव सिंह समान ॥

गीतसं०—१५

रसमय समय बसन्त । कि करब लग नहि कन्त ॥
अति आकुल मन मोर । नयन हरकि पड़ि मोर ॥
निरदय दय सुख गेल । मन भरि मिलियो ने भेल ॥
एत दिन छल मोहि लाज । विरहे बेकत भेल आज ॥
परम करम मोर मन्द । विष भेल ज्ञानन चन्द ॥
एहि तह अधिक न सोग । पहिलहि वयस वियोग ॥
नन्दीपति कवि गाव । विष्णु सिंह बुझ भाव ॥

गीतसं०—१६

भांगहि चाह चिकुर भर सजनी, सहजहिँ दूबरि देह ।
प्रथमहि सुपहु - समागम सजनी, उपजल अधिक सन्देह ॥
दूरहि सुतल विमुख भए सजनी, विरल बसने मुख झाँपि ।
अभिनव केलिक नामहि सजनी, नहि नहि कए उठ काँपि ॥
सूपुर काढ़ि नड़ाओल सजनी, हरल बसन अवशेष ।
भाव भरल नव नागर सजनी, उनमत भेल विशेष ॥
नयन मोर भरि बाजलि सजनी, भल शपथक निरवाह ।
पुरुष न जान नारिदुख सजनी, केवल निज सुख चाह ॥
आलस अलक बेआकुल सजनी, न रहलि निजवश नारि ।
अतिकौशल पुहु परसल सजनी, एहि अवसर अवधारि ॥

धैरज धए रहु सुबदनि ! सजनी, इएह उचित एहि ठाम ।
नन्दीपति बिनु साहस सजनी, सुखद न होअ परिनाम ॥

गीतसं०—१७

की कहु, पहु परदेश गेल, सजनी गे, की कहु किछु ने सोहाय ।
फूजल केश, नीर बहु, सजनी गे, काजर गेल दहाय ॥
चूड़ी बसन भार भेल, सजनी गे, भेल यौवन अतिभार ॥
आइन मोरा लेखे बिजुवन, सजनी गे, घर भेल दिवस अन्हार ॥
हरि बिनु सेज सून भेल, सजनी गे, गेडुआ मोहि न सोहाय ।
जौ नहि प्रीतम अओताह, सजनी गे, भरब जहर विष खाय ॥
नन्दीपति भन मन दय, सजनी गे, मन जनु करिय उदास ।
तकर कतेक अभिलाषब, सजनी गे, देलन्हि बहु बिसवास ॥

गोपी-कृष्ण

गीतसं०—१८

चललि मधुरपुर साजि रे, दधि बेचन बाला ।
यमुना निकट तट जाय रे, रोकल नन्दलाला ॥
मुख आँचर पट ओत रे, दए बिहुँसलि वामा ।
पुलक पुरल तन नेह रे, देखि सुन्दर ब्यामा ॥
मुरली अधर विराजे रे, सुन्दर सुख रासी ।
मन मोर हरल गोपाल रे, गोकुल केर वासी ॥
करब कओन परकार रे, सोचए ब्रजवाला ।
पड़ल कुञ्ज बन साँझ रे, बैरी भेल काला ॥
जाय देवन्हि उपराग रे, यशोमति महरानी ।
तीर पुत हटलो न मान रे, लुट माल बिरानी ॥

नन्दीपति ! भन नेह रे, सुनु गोप-कुमारी ।
तोहि छाड़ि भजहि ने आन रे, नोखे गिरिधारी ॥

गीतसं०—१६

जसोमति पूत मुरारि ना ।
सखि हे ! लेलन्हि जमुना घटबारि ना ॥
चललि दही - दुध ब्रीक ना ।
सखि हे ! संग दोसर नहि धीक ना ॥
कत कत कयल निहोर ना ।
सखि हे ! नहि बुझ परम कठोर ना ॥
आयल जमुना जल बाढ़ि ना ।
सखि हे ! भेलहुँ कदम तर ठाढ़ि ना ॥
बाट भेटिअ गेल कान्ह ना ।
सखि हे ! ओही वृन्दावन माँझ ना ॥
नन्दीपति कवि भान ना ।
सखि हे ! नन्दतनय रस जान जा ॥

गणपति-पूजा

गीतसं०—२०

मत्त-गजवर-मधुर-गामिनि, सबहु सखि मिलि चललि कामिनि,
केलि कोतुक, देखि शुभ घड़ि, हरषि सुख भय रे ॥
साज कए कत सखी निकसलि, लाज कए पहु-पास बैसलि,
तखन अदभुत देखल बाला, कुसुम माला रे ॥

रक्त-चानन जवा-जाला, हृदय-हारक फूल माला,
तिरा फुल मधुरीक डाला, बकुल फुल कत रे ॥
(कमल नव करवीर ओड़हुल, फूल बकहुल रे ॥)
अर्घं मुरसरि नोर डारल, आनि चौमुख दीप बारल,
धूप दय नैवेद्य साँठल, [गीत गाओल रे] ॥
बादरि कृष्ण विचारि गाओल गौरि गणपति पूजि पाओल,
जेहन मन छल तेहन भेटल, दुःख भेटल रे ॥

गीतसं०—२१

साजि सकल शृंगार माला, गौरि पूजय चललि बाला,
प्रिय सखी सभ सङ्ग लय कत, रङ्ग करयित रे ॥
साजि चानन फूल डाला, ताहि ऊपर सिन्दुर माला,
अगर गुग्गुल धूप दय कत दीप चौमुख रे ॥
दक्षिण चिर लय मण्डप झाड़ल, ताहि ऊपर कलस राखल,
वेड़ल वन्दनवार पाँती, भाँति - भाँतिक रे ॥
कतहु चीणा वेणु गाजय, कतहु झालि मृदङ्ग बाजय,
कतहु किन्नर गीत गावय, भाव लावय रे ॥
बादरि कृष्ण विचारि गाओल गौरि गणपति पूजि पाओल,
जेहन मन छल तेहन पाओल, दुःख भेटल रे ॥

